निक्कू

रघुंवश मिश्रा

आलोक प्रकाशन

:: निक्कू ::

रघुंवश मिश्रा

C - 2018 रघुंवश मिश्रा

vkykd प्रकाशन

le> vkj fopkj

प्रिय शिक्षक साथियों,

यह तो सभी जानते और मानते हैं कि शिक्षक का काम बहुत ही ftEesnkjh;k ls Hkjk gksrk gS] D;ksafd ,d rjQ rks mUgsa u dsoy ,sls ढंग से,जिसमें सभी बच्चे विषयों को आनंदपूर्ण परिस्थितियों में सीख ldsa]i<kuk gksrk gS]ogh nwljh vksj iR;sd cPps dks tkuuk vkSj le>uk भी होता है। यदि एक शिक्षक केवल यह मानकर अपना काम करता हैं कि उन्हें केवल पढ़ाना ही है तो वह सफल शिक्षक के रुप में स्थापित नही हो सकता। शिक्{kd dh lQyrk bl ckr esa fufgr gS fd og Ldwy ds cPpksa को कितना जानता और समझता हैं। शिक्षक ds }kjk cPpksa dks tkuus vkSj समझने कि प्रकिया जहॉ उसे विषय वस्तु की प्रस्तुतीकरण में सहायता देता हैं वही इससे बच्चों में भी शाला से दूर रहने की प्रवृत्ति कम होती हैं। दूसरे शब्दो में कह सकते हैं कि इस प्रकिया से शिक्षक और छात्र के मध्य एक आकर्षk.k mRiUu gksrk gSA

मेरे द्वारा लिखा गया यह पुस्तक शिक्षक और बच्चों के मध्य LFkkfir gksus okys lEcU/kksa ij vk/kkfjr gSA bl iqLrd ls ge ;g tku ik,axs fd cPpksa dks शाला से दूर होने में अब तक बतलाए जाने वाले ijEijkxr dkj.kksa dh Hkwfedk cgqr gh de gksrh gSA njly cPpksa dh शाला त्याग करने के पीछे उनके अपनो से उन्हें अपनाiu dk u feyuk ,d egRoiw.kZ dkjd gksrk gSA viusiu ds vHkko esa ge cPpksa ds Lrj ij tkdj lkpus dk iz;kl ugh djrs vkSj leL;k cMh ls cMh gks tkrh gSA

vki lHkh ls vuqjks/k gS fd ge cPpksa ds e/; jgdj mudh vkdka{kkvksa]lksp &fopkj]t#jrksa dks vkRelkr dj vkxs c<saA ,slk gksus ij मेरा पूरा विश्वास है कि शाला त्यागी शब्द केवल एक शCn ds #i esa gh jg tk,xkA

/kU;okn

रघुंवश मिश्रा
VhxuekMk

सुबह का आठ बज रहा था। निक्कू रोज की तरह आज भी सोकर नहीं उठा था। उसकी मॉ ललिता घर के दूसरे कमरे से ही आवाज देकर उठाने का प्रयास करती है, लेकिन काफी देर बाद भी निक्कू बिस्तर से उठकर नहीं आया तब ललिता खुद बिस्तर के पास आई और झकझोर कर उठाते हुये बोली हे भगवान मैं इस लड़के का क्या करूं? रोज–रोज वही काम।

अपनी मॉ को बिस्तर के पास आया देखकर निक्कू सोये–सोये ही बोला– क्या मॉ। मुझे उठाने के सिवाय और कोई काम नहीं है। कितना अच्छा नींद पड़ रहा था। सब खराब कर देती हो। ललिता और थोड़ा गुस्सा होतु हुये बोली तुम्हें नींद की पड़ी है। ऐसा कौन सा दिन नहीं होता जब दस घंटे सोता नहीं। अरे बेटा इतना ही फिकर पढ़ने लिखने की कर लेता तो जिन्दगी बन जाती।। क्या मॉ। आप भी रोज रोज मेरे पढ़ने के ही पीछे पड़े रहते हैं। जबकि मैं कई बार बोल चुका हूं कि मेरा पढ़ने का मन नहीं है निक्कू सोये सोये ही बोला।

ललिता चिढ़ते हुये बोली– हे राम। लाज–शरम को भी बेचकर कहीं से आ गया है क्या? मेरे मुंह उपर ही बोल रहा है कि पढ़ना अच्छा नहीं लगता। अरे पढ़ना अच्छा नहीं लगता तो क्या आवारागर्दी करना अच्छा लगता है? निक्कू को मॉ की यह बात अच्छा नहीं लगा और चिढ़ते हुये बोला– ऐसा किसने कह दिया है कि जिसका मन पढ़ने में नहीं लगता वह आवारागर्दी ही करता है।

इस पर ललिता और गुस्सा होते हुये बोली– तुम उस लक्ष्मी के बेटे शुभम के साथ दिन भर आवारागर्दी नहीं करता तो क्या करता है?

मॉ। किसी के साथ घूम–फिर लेना आवारागर्दी होता है क्या? निक्कू धीरे से बोला।

अरे बेटा। ओ कहावत है न विनाशकाले विपरीत बुद्धि। अभी तुम्हें पता नहीं चल रहा है कि आवारागर्दी किसको कहते हैं और जिस दिन पता चलेगी उस दिन फिर पछताने के अलावा और कोई चारा नहीं बचेगा। ललिता निक्कू का हाथ

पकड़कर उठाते हुये बोली। मॉ उस दिन का उस दिन देखा जायेगा। अभी तो मुझे कुछ समय और सोने दो निक्कू फिर से सोते हुये बोला।

ऐ देख लो। अभी उठाई और फिर से सो रहा है। तुम्हें कुछ लगता भी है कि नहीं। कि ये सब शुभम की संगति का असर है – निक्कू की मॉ बोली।

मॉ। आप फिर से शुभम का नाम ले रही है। उस बेचारे की क्या गलती है– निक्कू ने कहा।

हॉ–हॉ। उस बेचारे की कोई गलती नहीं है। सब गलती तो मेरी ही है न। पर निक्कू तुम एक बात कान खोलकर सुन लो। मैं शुभम की मां नहीं हू जो तुम्हें उसी के जैसा खुल्ला छोड़ दूंगी। ललिता चेतावनी देने हुये बोली। निक्कू ने कहा मॉ। आखिर शुभम को उसकी मां ने क्या छूट दे रखी है। उसका पढ़ने में मन नहीं लगता। उसने यह बात अपने घरवालों को बतलाया और उसके घरवाले उसकी बात मान गये। इसमे बुराई ही क्या है? हॉ–हॉ। तुम्हें तो बेटा अभी मुझे छोड़कर किसी की बात में कोई बुराई ही नजर नहीं आती न। और एक तुम ही थोड़ी हो। सबको मुझमें ही बुराई नजर आती है। जानते हो तुम्हारे कारण मुझे घर, परिवार, रिश्तेदार और पड़ोसियों से क्या क्या ताने सुनने को मिलते हैं। सब एक ही बात बोलते हैं कि एक बेटा है उसे भी ठीक से नहीं संभाल पाई ललिता रूंधे गले से बोली। तो क्या हुआ मॉ। लोगों का तो काम ही है कहना। आखिर शुभम भी तो स्कूल नहीं जाता। पर किसी ने आज तक कुछ नही कहा।उसकी मॉ बिना किसी के कहे बोल देती है कि भाई उसे बेटे का जब पढ़ने का ही मन नहीं है तो उसे जबरदस्ती कहने या करवाने से क्या फायदा। इससे अच्छो है उसे कुछ काम पर लगा दिया जाये। निक्कू, शुभम का पक्ष लेते हुये बोला।

ललिता बोली– तेरह साल के उम्र में वह क्या काम कर लेगा? बेटा हर चीच का एक उमर होता है और जिस काम का जो उमर हो, उसी समय करने में शोभा पाता है। दुनिया के सब बच्चे आखिर पढ़ रहे हैं कि नहीं। तो क्या वे सब लोग मूर्ख है या उनके मॉ बाप नासमझ है। अभी तुम लोगों की पढ़नेकी उमर है। अरे

ज्यादा नहीं तो कम से कम बारहवीं तक तो पढ़ लो। दिन दुनिया को जान जाओगे, समझ जाओगे। मुझे भी मरने के समय तसल्ली रहेगी कि मेरा बेटा ठीक है ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं है, पर कम से कम वह इतना तो पढ़ लिख गया है कि उसे कब, क्या करना है इस बारे में जान गया है।

निक्कू पलंग पर बैठे–बैठे ही बोला– माँ तो क्या जो दिन दुनिया को नहीं जानता वह जीता नहीं है या जीने के लिये बारहवीं तक पढ़ना जरूरी है।

ललिता बोली– तु न हर बात को उलटा लेते हो। अरे उन लोगों का जीना भी कोई जीना है। कभी जो नहीं पढ़े, उनके जीवन को देखे हो। कितना कष्ट व परिश्रम का जीवन जीते हैं। तुम अपने उपर लेकर देखो या उन बच्चों के जीवन को नजदीक से जाकर देखों जो चाहते हुये भी नहीं पढ़ पाये। तुम्हें क्या है रोज नौ बजे तक सोकर उठना, नहाना– खाना और फिर दिन भर इधर उधर घूमना। इसी कारण नहीं समझ पा रहे हो कि कष्ट और मेहनत का जीवन क्या होता है?

निक्कू पलंग से उठकर कपड़ा पहनते हुये कहा– माँ पर क्या किसी ने कभी यह सोचने का प्रयास किया है कि मेरे जैसे बहुत से बच्चों का पढ़ने का मन क्यों नहीं करता? और अगर बहुत से बच्चों का पढ़ने में मन नहीं लगता तो उनके लिये ऐसा क्या किया जाये, जिससे उन लोगों का जीवन भी अच्छा बन जाये। नहीं। इस बारे में लोगें को सोचने की जरूरत ही क्या है या सोचने की फुर्सत कहां है। उन्हें तो इस बात के लिये फुर्सत ही फुर्सत ही होता है कि देखें किस बच्चे को जबरदस्ती स्कूल भेजा जा सकता है। अरे माँ। मेरा तो कहना है कि ऐसे लोग जो मेरे जैसे बच्चे को जबरदस्ती स्कूल भेजना चाहते हैं वे लोग इस बात पर ज्यादा ध्यान देते कि जो स्कूल नहीं जाते या जिनका पढ़ने में बिल्कुल मन ही नहीं लगता, उनके लिये क्या किया जा सकता है। तब मेरे जैसे बच्चों को आये दिन का यह घर वालों का ताना नहीं सुनना पड़ता।

ललिता बोली– इसीलिये मैं कहती हूं तुम हर बात को उल्टा लेते हो। अब घर वाले समझाये भी मत और अगर समझाये तो व समझाना नहीं ताना हो जाता है। निक्कू ने कहा– मॉ। आखिर तुम मुझसे चाहती क्या हो?

ललिता– ये देखो। पूरा रामायण खतम हो गया और पूछ रहा है कि चाहती क्या है। अरे बेटा मैं चाहती हूं कि तुम रोज स्कूल जाया करो और क्या चाहूंगी?

निक्कू– नहीं मॉ। मेरा पूछने का मतलब था कि स्कूल जाने को छोड़कर और क्या चाहती हो।

ललिता– तुम्हारा ऐसा बोलने का क्या मतलब है?

निक्कू– वही मॉ। जो मैं कब से कह रहा हूं कि मुझे अब स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता।

ललिता– ठीक है तो मैं भी देखती हूं कि तुम कब तक स्कूल नहीं जातै और अब तो तुम्हारे पापा को भी बतलाकर रहूंगी। इतने दिन तक यह सोचकर नहीं बतलाई की चलो बच्चा है। धीरे–धीरे समझ जायेगा। पर समझना तो दूर और उल्टा तर्क–वितर्क करने लगता है।

निक्कू अब तक पलंग से उठकर कपड़ा पहन चुका था। उसने देखा कि मॉ और ज्यादा गुस्सा हो रही है तो एक बार अपने मॉ की ओर मुस्कराकर देखा और सीधे बाथरूम की ओर चला गया। ललिता को भी निक्कू के साथ बहस करते देर हो गई थी। घर का अभी बहुत सा काम बाकी था। निक्कू के पापा के लिये टिफिन बनानी थी। वह भी रसोई कक्ष की ओर सोचते सोचते जाने लगी कि मेरे बेटे को जल्दी सद्बुद्धि आ जाये और वह दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना शुरू कर दे।

****

खाना खाने के बाद निक्कू जब घर से बाहर निकल रहा था, उसी समय उसकी मॉ बोली निक्कू! आखिर आज सबेरे मेरे बोलने का तुझ पर कोई असर नहीं हुआ। स्कूल जाने का समय हो गया है और स्कूल जाने को छोड़कर फिर गलियों में घूमने निकल रहा है। निक्कू अपनी मॉ की बात को अनसुना करके बिना रूके सीधा गली में निकल गया। निक्कू के घर से कुछ ही दूरी पर शुभम का घर था। शुभम वहां निक्कू का ही इंतजार कर रहा था। निक्कू को आते देखकर शुभम ने कहा आज देर कर दी यार आने में।

निक्कू– हॉ।

शुभम– क्यों? और एक बात बता। ये आज चेहरा क्यों लटका हुआ है। चाची आज फिर डांटी क्या?

निक्कू– हॉ यार। वही रोज–रोज की कचकच। मेरी एक बात समझ नहीं आती कि जब हम बड़ों की कहे अनुसार नहीं चलते या गलती कर देते हैं तो नासमझ कहलाते हैं पर वही चीज अगर बड़ों के साथ हो तो उन्हें क्या कहा जाना चाहिये।

शुभम– तुम्हारा मतलब है कि चाची को बार बार बतलाने के बावजूद की पढ़ने का मन नहीं है, वह पढ़ाई के ही पीछे पड़ी रहती है। यहीं न?

निक्कू– हॉ यार शुभम। बिल्कुल यही। देखो न अम्मा आज भी सुबह सुबह शुरू हो गई थी।

शुभम– क्या बोल रही थी?

निक्कू– यही की बेटा कम से कम बारहवीं तक तो पढ़ ले। उसके बाद जो मन में आये करना। अम्मा तो ऐसे बोलती है जैसे बारहवीं पढ़ने के बाद मुझे या उसे कोई खजाना मिल जायेगा। शुभम! मैं सोंचता हूं कि इस बात का अंतिम निपटारा होना चाहिये।

शुभम– कौन सी बात का?

निक्कू– यही यार की मुझे मेरे मन के अनुसार घर में रहने को मिलेगा या फिर ऐसे रोज–रोज सुन के?

शुभम– तो इसका निपटारा करेगा कौन? या तो इसका निपटारा तुम कर सकते हो या फिर चाची।

निक्कू– यार तुम तो सही कह रहे हो। पर सोचों न अगर इस बात का समाधान मेरे या अम्मा के ऊपर होता तो यह मामला कब का निपट गया होता।

शुभम– निक्कू! तुम भी अजीब बात करते हो। एक तरफ तो कहते हो कि इस बात का समाधान जल्दी निकलना चाहिये और दूसरे तरफ जब रास्ता बतलाता हूं तब कहते हो कि मेरे या चाची के चाहने पर यह तो कब का निपट गया होता। तब फिर निपटाने में क्या समस्या है।

निक्कू– समस्या यह है कि मैं अपने अम्मा की बातों पर राजी नहीं हो सकता और अम्मा मेरी बातों पर।

शुभम– तो यह कहो न कि आज सुबह घर में जो हुआ वह रोज–रोज होगा।

निक्कू– और यहीं तो मैं नहीं चाहता यार।

शुभम– तो और क्या सोचा है? इस समस्या को किसके पास रखना चाहिये। निक्कू ऐसा करूं क्या कि मैं अपने अम्मा को तुम्हारे अम्मा के पास भेज देता हूं वह समझायेगी तो शायद चाची समझ जाये।

निक्कू– अरे बाप रे! शुभम यह गलती तो मैं कभी नहीं करूंगा। इससे तो बनती बात और बिगड़ जायेगी।

शुभम– बनती बात बिगड़ जायेगी। वह कैसे?

निक्कू– तुम जानते नहीं। तुम्हारे कारण ही तो अम्मा मुझे और ज्यादा सुनाती है। कहती है कि मैं कोई शुभम की मां नहीं हू जो तुझे बिना पढ़े पढ़ाये ऐसे ही खुला घूमने के लिये छोड़ दूंगी। अगर तुम्हारी अम्मा मेरे सिफारिश लेकर गई तो समझो मुझे सुनना तो पड़ेगा ही मार भी पड़ेगी।

शुभम– तों फिर और क्या कर सकते हैं?

निक्कू– अभी तो कोई आइडिया नहीं आ रहा है। चलो तालाब में आम के पेड़ के नीचे बैठकर बात करेंगे तो शायद कोई रास्ता निकल जाये।

दोनों गांव की गलियों से होते हुये तालाब किनारे लगे आम के पेड़ के नीचे बैठ गये। कुछ देर दोनों चुपचाप बैठे तालाब के पानी और उसमें उभरने वाले लहरों को देखते रहे और फिर निक्कू ने कहना आरंभ किया यार! शुभम तुम इस तालाब के पानी में बनने वाले लहरों को देख रहे हो। हॉ.

शुभम ने कहा– क्यों तुम्हें इसमें क्या विशेष दिखाई दे रहा है? इन लहरों को तो हमने कई बार देखा है। पर पहले कभी इसके बारे में बात नहीं किया। आज क्या हो गया।

निक्कू ने कहा– यार शुभम पहले मैं इन लहरों को उतना गंभीरता से देखता ही नहीं था, जितना आज देखा हूं और मैने तुमसे कहा था ना कि चलो तालाब के पास आम के पेड़ के नीचे बैठते हैं शायद कुछ आइडिया निकल जाये तो वह आइडिया मुझे आ गया।

आइडिया आ गया। वह कैसे! शुभम ने पानी की लहरों को आश्चर्य से देखतु हुये पूछा!

ओ ऐसे यार जब तक यह पानी तालाब में स्थिर रहता है तब तक किसी का ध्यान अपनी ओर नहीं खींचता, लेकिन जैसे ही थोड़ी भी हवा चलती है, इस स्थिर जल में कम्पन होने लगता है, जो हमे लहरों के रूप में दिखाई देता है। पानी में उत्पन्न यह लहरें एक एक कर आगे बढ़ती है और आगे बढ़ने वाली लहरों का स्थान पीछे वाली लहरें ले लेती है और न जाने यह सिलसिला कब तक चलते रहता है। निक्कू ने शुभम को समझाते हुये कहा।

पानी में लहरों का उत्पन्न होना, उसका आगे बढ़ना, पीछे वाली लहरों का आगे बढ़ जाना, यह तुम क्या कह रहे हो यार। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। यह तो लहरों की बात हुई यार। इसका तुम्हारे और मेरे जीवन से क्या संबंध है। जिसे बड़ा तुम अपना आइडिया बतला रहे हो, वह तो मुझे फालतू लग रहा है,

शुभम ने कहा। देख शुभम, हमारा जीवन भी इस पानी की तरह हो गया है। बिल्कुल स्थिर। जो भी देखते हैं देखते साथ उनके मन में विचार आ जाता है कि अरे ये तो वही है जिसको पढ़ने लिखने से कोई मतलब नहीं है। एक प्रकार का हमारे ऊपर पहचान का ठप्पा लग गया है और अगर हम चाहते हैं कि लोगों का विचार हमारे प्रति बदले तो हमें अपने अंदरलहर उत्पन्न करना होगा और ओ भी ऐसा लहर की पहले वाले के समाप्त होने के पहले दूसरे लहर आ जाये निक्कू ने कहा।

पर मेरे भाई। तुम यह भी तो बतला दो कि यह लहर कैसे उत्पन्न होगा। जहां तक मैं सोचता हूं हमारे जीवन में लोगों के मन के अनुकूल लहर तो केवल पढ़ने से ही उत्पन्न हो सकता है और निक्कू अगर तुम्हारा विचार कहीं फिर से स्कूल जाने का हो रहा होगा तब तो मुझे माफ करना। हॉ। इसके अतिरिक्त कोई और दूसरा रास्ता तुम्हारे मन में सुझा होगा तब जरूर बतलाओ शुभम ने कहा।

यार शुभम, जब आइडिया मेरे मन में आया है तो मेरी आईडिया भी सुनो। तुमको याद है जब हम प्राथमिक शाला में पढ़ते थे तो कैसे खड़ी मोटर सायकल को स्टार्ट कर दिया करते थे निक्कू ने कहा।

हां यार। यह तो तुम ठीक कह रहे हो और मुझे भी कितना सुदर चित्र बनाना आता था । अगर हम अपने उन्हीं पुराने कामों को फिर से अच्छे ढंग से करना शुरु करें तो लोगो का विचार हमारे प्रति बदल सकता हैं, शुभम ने कहा। तो फिर इसके बारे में कल और विचार करते है और अब यहां से चलना चाहिये। निककू और शुभम ने एक दूसरे से कहा और घर की ओर जाने लगे।

****

निक्कू के पापा रमेश जब आफिस से घर वापास आता है तो आते ही कपड़ा उतारते हुये ललिता से पूछता है अरे रात के 7 बज रहे हैं निक्कू कहीं नजर नही आ रहा है? अपने पति की बातों को सुनकर ललिता आश्चर्य मिश्रित स्वर में बोली– आज बेटे की बड़ी याद आ रहीं है? ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ?

अपनी पत्नी के बातों में छिपी व्यंग्य को समझते हुये भी रमेश सीधे स्वर में बोला, अरे भाई। आज उससे काम है तो पूछ रहा हूं। बिना काम के बच्चों को फालतू में क्यों तंग करना। फिर छोटे मोटे देख रेख के लिये तुम तो हो ही न।

रमेश की मुंह से अपने काम का महत्तव कम पाकर ललिता थोड़ा क्रोधपूर्ण मुद्रा में बोली – बच्चों की घर में देखभाल करना, आपको छोटा–मोटा काम लगता है। किसी दिन पूरे समय घर पर रहकर बच्चों के साथ बिताते तब पता चलता कि बच्चों की देख–रेख में क्या क्या करना पड़ता है। सुबह से उठकर चाय बनाओ, नाश्ता बनाओ, ब्रश करने के लिये दो, नहाने के लिये बोलो, कपड़ा तैयार रखो, फिर खाना खिलाओ और स्कूल भेजो। आपको क्या है फटाफट तैयार हुये और चल दिये आफिस।

अरे भाई। मैं तो तुमसे केवल यह पूछा हूं कि सात बज रहे हैं और निक्कू दिख नहीं रहा है? इतने में तुम पूरा रामायण सुना दी, रमेश ने हंसते हुये कहा।

रमेश की यह हंसी शायद ललिता को ठीक नहीं लगा और वह पहले से ज्यादा चिढ़ते हुये बोली हॉ–हॉ जब मैं सच्चाई बतला दी तब वह आपकोरामायण लगने लगी। इसीलिये तो कहती हूं कि एकात दिन पूरे समय घर पर बच्चों के साथ रहो तब पता चलेगा की रामायण बनता है या महाभारत।

ललिता को और बिगड़ते देख रमेश ने उसे शांत कराने के अंदाज में कहा कि अच्छा चलो मैं अपना शब्द वापस लेता हूं। अब तो खशु न। अरे मैं तों निक्कू को आते ही इस कारण पूछ रहा था कि ओ रास्ते में मास्टर जी मिले थे और बोल रहे थे कि निक्कू बड़े दिन हो गये स्कूल नहीं आ रहा है। पहले तो मुझे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि यदि ऐसा होता तो तुम मुझसे घर में अवश्य बतलाये होती। फिर

सोचा कि शायद भूल गई होगी या तुमको खुद ही पता न हो कि निक्कू स्कूल नहीं जाता।

अपने ऊपर इल्जाम आते देख ललिता व्यथित स्वर में बोली आखिर हुआ न वही जिसका मुझे डर था।

ललिता की बातों को सुनकर रमेश ने पूछो किस बात का तुम्हें डर था। क्या तुम्हें यह पहले से पता था कि निक्कू स्कूल नहीं जाता और अगर सब कुछ जानती थी तो मुझे बतलाया क्यों नहीं।

रमेश की बातों को सुनकर ललिता को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके घावों में नमक छिड़क दी हो और ऊंचे स्वरों में बोलना शुरू की तो अब आप भी मुझ पर सवार हो जाओ। इसी बात को मैं निक्कू से बार बार कहती थी कि बेटा रोज स्कूल जाया करो, अरे कम से कम बारहवीं तक तो पढ़ लो पर मेरी सुना ही नहीं। मैं कहती भी थी की बेटा तुम तो स्कूल नहीं जाओगे और उसका पूरा दोष मेरे ऊपर आयेगा और हो भी यही रहा है।

ललिता को बिफरते देख रमेश उसे शांत कराते हुये कहा अरे निक्कू की अम्मा। तुम पर कौन दोष डाल रहा है। भई मैने तो केवल यही कहा न कि तुमको पहले से पता था तो मुझे बतलाया क्यों नहीं। क्या यह दोष डालना हो गया?

रमेश की इन बातों से थोड़ा शांत होते हुये ललिता बोली – क्या बतलाऊं जी। इस साल जब से स्कूल खुला है निक्कू तभी से स्कूल नहीं जा रहा है। ऐसा कोई दिन नहीं गया होगा, जब मैं उसे स्कूल जाने के लिये तैयारहोने को नहीं कहती। कई बार तो उसे स्कूल नहीं जाने के कारण मार भी पड़ चुका है। पर वह एक ही बात पर अड़ गया है कि अम्मा, चाहे आप लोग जैसा भी कर लो, जब मेरा मन पढ़ने का नहीं है तब मैं पढूंगा ही नहीं और स्कूल भी नहीं जाऊंगा।

ललिता की बातों को ध्यान से सुनते हुये रमेश की चेहरे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट दिखाई देने लगी । जब ललिता ने बोलना बंद की तब रमेश ललिता से बोला– निक्कू की मां। यह तो सचमुच बहुत बड़ी चिंता की बात है। आज ऐसा

कोई घर नहीं होगा, जहां से बच्चे स्कूल न जा रहे हों। अरे भाई! आज का युग ही पढ़े लिखे लोगों का युग है। आज के जमाने में सातवीं आठवीं तक पढ़े लोगों को पूछता ही कौन है। इस निक्कू को लेकर क्या क्या सपने नहीं थे मेरे और अब लगता है कि सारे सपने मिट्टी में मिल रहे है। आखिर निक्कू के साथ ऐसा क्या हुआ जो उसका पढ़ने से मन एकदम उचट गया।

रमेश को दुखी होते देखकर ललिता की वह सारी गुस्सा क्षण भर में ही गायब हो गई जो उसके मन में रमेश के प्रति आरंभ में थी और अब वह अपने पति के बात में बात मिलाते हुये बोली– अब मैं जो कह रहीं हूं उसका आप बुरा न मानना। इन सभी बातों के लिये बहुत कुछ दोषी तो आप भी है। आप अपने आफिस के कामों में इतना व्यस्त रहें कि कभी बच्चों के साथ दो मिनट बात करने का समय नहीं निकाल सके। अरे कम से कम पढ़ाते नहीं तो स्कूल का हाल चाल ही पूछ लेते। इससे बच्चों को भी लगता की हमारे अम्मा पापा हमारी जरूरतों पर ध्यान देते हैं।

अपनी पत्नि के मुह से सच्ची बातों को सुनकर मर्माहत होते हुये रमेश ने कहा ,तुम सही कह रहीं हो निक्कू की मॉ। मैं बाहरी जिम्मेदारियों के आगे अपने घर की जिम्मेदारियों को भूल गया था। अब जब गलती मुझसे हुई है तो सुधारने का प्रयास भी मुझे करना होगा और इस काम में मुझे तुम्हारी सहयोग की जरूरत पड़ेगी।

अपने पति की बातों में हां मिलाते हुये ललिता बोली आप भी अजीब बात करते हो जी। क्या निक्कू आप अकेले का बच्चा है मेरा कुछ नहीं।ठीक हैं निक्कू की मां उसे कल जल्दी उठा देना और बोलना कि मैंने बुलाया हैं, रमेश ने कहा।

दूसरे दिन सुबह ललिता सीधा निक्कू के कमरे में गई और वहां पहुंचते ही बोली निक्कू निक्कू चल जल्दी उठ।

एक दो बार इधर–उधर करने के बाद निक्कू उठते हुये बोला हॉ अम्मा। ऐ लो मैं उठ गया।

हॉ। उठ गया तो जा जल्दी हांथ मुंह धोकर आ जा। पापा बुला रहे हैं। ललिता निक्कू के कमरे से निकलते हुये बोली।

अम्मा। पापा आज क्यों बुला रहे हैं निक्कू ने अपनी मां के हाथ पकड़ते हुये पूछा।

अरे! मुझे क्या पता? मुझे कारण बतला के थोड़ी बोला की जा बुलाकर ले आ। अब जब बुलाया है तब जाओ खुद पता चह जायेगा। ललिता ने निक्कू से हांथ छुड़ाते हुये बोली।

ठीक है अम्मा। जल्दी आ रहा हूं। बोलते हुये निक्कू बाथरूम की ओर सोचते हुये जाने लगा की पता नहीं आज पापा क्या बोलेंगे या करेंगे। थोड़ी देर बाद हांथ मुंह धोकर निक्कू सीधा उस कमरे की तरफ गया, जहां उसका पापा बैठा हुआ चाय पी रहा था। अपने पापा को देखकर निक्कू सहमे हुये आवाज में बोला जी पापा। अम्मा कह रही थी कि आपने बुलाया है।

अरे हां बेटा। जरा आओ यहां और मेरे बगल में बैठो रमेश ने प्यार से कहा।

निक्कू अपने पापा के बगल में बैठते हुये प्रश्न भरे नजरों से देखने लगा। उसके अभिप्राय को समझते हुये रमेश ने कहना आरंभ किया। अरे निक्कू। पता है कल जब मैं आफिस से आ रहा था तब रास्तें में मुझे तुम्हारे मास्टरजी मिला और मिलते ही कहने लगा कि क्या बात है रमेश जी आजकल निक्कू स्कूल नहीं आ रहा है। कही उसकी तबीयत वगैरह खराब तो नहीं है। पहले तो मुझे मास्टरजी के बातो पर विश्वास नहीं हुआ। इसी कारणआते ही घर में सबसे पहले मैं तुम्हारी अम्मा से पूछा कि मास्टरजी जो कह रहे थे वह सही है या नहीं। इस पर तुम्हारी अम्मा बतला रही थी कि तुम पिछले बहुत दिनों से स्कूल नहीं जा रहे हो और कारण पूछने पर कहते हो कि मुझे पढ़ना अच्छा नहीं लगता। बेटा क्या यह सही है? सचमुच तुम्हें पढ़ना अच्छा नहीं लगता या वह स्कूल अच्छा नहीं लगता या और कोई बात है?

निक्कू को चुपचाप बैठा देखकर उसे हिम्मत देते हुये रमेश ने कहा देखो बेटा डरना मत। मैं तुम्हे कुछ नहीं कहूगा। न डांटूगा और न मारूंगा। पर बेटा कारण तो पता चलना चाहिये न कि आखिर तुम स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो।

अपने पापा से हिम्मत और अपनापन पाकर निक्कू ने कहा पापा। दरअसल मुझे स्कूल में जो विषय पढ़ाया जाता है वह अच्छा नहीं लगता।

जो विषय पढ़ाया जाता है वह अच्छा नहीं लगता, निक्कू इसका क्या मतलब है। बेटा जो विषय आजकल स्कूलों में पढ़ाया जाता है जानते हो वही विषय कब से पढ़ाया जा रहा है। वही गणित, वही अंग्रेजी, सा.वि., विज्ञान और हिन्दी। आज तक तो मैंने किसी के भी मुंह से नहीं सुना कि उनको स्कूल में पढ़ाया जाने वाला विषय अच्छा नहीं लगता और वे इस कारण स्कूल नहीं जा रहे हैं या नहीं जायेंगे। रमेश ने समझाते हुये कहा।

पर पापा। सच में मुझे अच्छा नहीं लगता और मैं आपसे भी कह रहा हूं कि मैं इसी कारण स्कूल नहीं जा रहा हूं। निक्कू ने दृढ़ता से कहा।

ठीक है बेटा। एक बार मैं तुम्हारी बात को मान भी लूं तो तुम ही सोचो ऐसे कितने बच्चे होंगे, जिनको स्कूल में पढ़ाया जाने वाला विषय अच्छा नहीं लगता होगा। यही न मुश्किल से दो या चार। अब जिन्होंने कक्षाओं के लिये विषय बनाया है क्या वे दो चार बच्चों के लिये विषय को बदल देंगे? बेटा न जाने ये सभी विषय कब से स्कूलों में पढ़ाया जा रहा है और कोई भी विषय कक्षाओं में ऐसे ही थोड़े रख दिये जाते हैं। पढ़ाने के पहले उसे कई बार जांचा परखा जाता है। उसके बाद ही पढ़ाया जाता है। मैं तुम्हारी इन बातों को अगर किसी के सामने रखूंगा तब वे भी तेरे साथ साथ मुझ पर भी हंसेंगे– रमेश ने गम्भीर होकर कहा।

ठीक है पापा। जब वे लोग दो चार बच्चों के नाम से विषयों को नहीं बदल सकते तो फिर दो चार बच्चों के पीछे क्यों पड़ जाते है? उन्हें भी सोचना चाहिय कि बहुत से बच्चों में से यदि दो चार बच्चे न भी पढ़े तो क्या होगा। पर नहीं जबरदस्ती पीछे पड़े रहेंगे। इससे कहेंगे, उससे कहेंगे और तो और स्कूल से चपरासी को घर तक भेजेंगे – निक्कू ने अपनी बात रखते हुये कहा।

देख– बेटा। पढ़ाने वाला यह सोचकर पीछे पड़ता है कि जब सारे बच्चे उस विषय को पढ़ रहे हैं और किसी के भी द्वारा उन विषयों के संबंध में कोई शिकायत नहीं है तो हो सकता है इन दो चार बच्चों को स्कूल न आने का कारण कुछ और ही हो रमेश ने समझाते हुये कहा।

नहीं पापा। तो इसका मतलब यह थोड़ी हो जाता है कि जिसका कोई शिकायत न हो वह एकदम सही ही है। निक्कू और दृढ़ता के साथ बोला।

रमेश काफी देर तक ईधर उधर का उदाहरण देकर निक्कू को समझाने का प्रयास करता रहा की वह स्कूल जाने को तैयार हो जाये और निक्कू अंत तक अपने पापा से यही बात दृढ़ता के साथ कहता रहा कि उसे स्कूलों में पढ़ाया जाने वाला विषय अच्छा नहीं लगता। इस कारण वह स्कूल भी नहीं जाता। अंत में रमेश इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि निक्कू की बातों को एकतरफा नकारने के स्थान पर क्यों न इस संबंध में कुछ अच्छे और बुद्धिमान लोगों से चर्चा कर ली जाये कि क्या सच में ऐसा कभी हो सकता है कि कोई बच्चा विषयों को पसंद न करें और उसका स्कूल जाना छूट जाये। साथ ही वह यह भी पता लगाना चाहता था कि ऐसे कितने बच्चे हो सकते हैं और अगर ऐसे बच्चों की संख्या कहीं ज्यादा निकल जाये, तब उनके लिये क्या कोई वैकल्पिक व्यवस्था की जा सकती है। काफी देर तक रमेश के मन में ऐसे ही कई विचार आते और जाते रहे। निक्कू अब भी वहीं बैठा कभी अपने पापा की चेहरे की ओर तो कभी कमरे की छत की ओर देख रहा था। इसी बीच ललिता रसोई घर से आवाज लगाई– निक्कू के पापा। आज आपके लिये नाश्ते में क्या बनाऊं? ललिता की आवाज ने रमेश का ध्यान तोड़ा और वहहड़बड़ाते हुये बोला– हां निक्कू की मां। तुम्हारी जो मर्जी बना लो। मैं भी झटपट नहा धोकर आता हूं। उसके बाद मारूटरजी से मिलने भी जाना है। बोलते हुये रमेश बाथरूम की ओर चला जाता है। निक्कू अब भी वहीं चुपचाप बैठा था।

****

खाना खाने के बाद निक्कू, शुभम के घर की ओर गया पर शुभम अपने घर के बाहर नजर नहीं आया। यह सोचकर की शायद वह तालाब में आम के पेड़ के नीचे बैठा होगा, निक्कू तालाब की ओर जाने लगा। पर शुभम वहां भी नहीं था। निक्कू पेड़े के नीचे बैठकर शुभम का इंतजार करने लगा। इसी बीच शुभम उसे दौड़ते हुये आता दिखाई दिया। जैसे ही शुभम निक्कू के पास पहुंचा हांफते हुये ही बोला अरे यार। तुम यहां बैठे हो और मैं तुम्हें गांव की सभी गलियों में ढूंढ रहा था। अरे शुभम थोड़ी देर सुस्ता तो ले फिर बोलना। हांफने के कारण बोला भी नहीं जा रहा है और तुम हो की बिना रूके बोले जा रहे हो। ऐसी भी क्या महत्वपूर्ण या जरूरी बात है जिसे बतलाने के लिये तुम्हें गांव की पूरी गलियों में और फिर यहां तक दौड़ते आना पड़ा निक्कू उसे बैठाते हुये कहा।

बात ही ऐसी है यार। जानते हो जब मैं तुम्हारे घर की तरफ तुम्हे बुलाने जा रहा था तो मैंने देखा की तुम्हारे पापा और मास्टरजी आपस में बात कर रहे थे और मैंने तो मास्टरजी को यहां तक कहते सुना है कि ठीक है रमेश चलो स्कूल में जहां सभी शिक्षक होंगे, बैठकर बाते करते हैं। शुभम निक्कू को जल्दी जल्दी बतलाने लगा।

अरे यार शुभम्। तुम भी न हद करते हो। इतनी सी बात बतलाने के लिये तुम हांफते हुये आऐ हो निक्कू ने हंसते हुये कहा।

अरे तुमको यह इतनी सी बात लग रही है। आज घर पहुंचो बच्चू तब तुमको पता चलेगी की बात इतनी सी है या उतनी सी शुभम ने कहा।

अरे कुछ नहीं होगा। जिसके लिये तुम इतना चिन्ता कर रहे हो न वह बात तो मुझे सुबह ही से पता है। जानते हो शुभम आज सुबह मुझे पापा ने अपने पास बुलाकर पूछा था कि तुम स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो? तब मैंने भी बिना कुछ छुपाये बतला दिया कि पापा मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता।निक्कू ने कहा।

सीधा–सीधा बतला दिया कि पढ़ाई में मन नहीं लगता और तुम्हें, तुम्हारे पापा ने छोड़ दिया– शुभम आश्चर्य व्यक्त करते हुये पूछा।

हां शुभम हां। पहले तो मैं भी सोच रहा था कि किसी दिन भी अगर पापा को पता चला तो मार तो जरूर पड़ेगी। पर जानते हो जितना आश्चर्य तुम्हें अभी हो रहा है, उतना आश्चर्य मुझे भी उस समय हुआ जब पापा ने मुझसे कहा की बेटा अगर ऐसा बात था तो तुम पहले क्यों नहीं बतलाये? निक्कू ने शुभम को बतलाते हुये कहा।

सचमुच यार। यह तो सूरज का पश्चिम से निकलने जितना बड़ा आश्चर्य है। निक्कू मैं तो कभी कभी तुम्हारे अम्मा के व्यवहार को देखकर डर जाता हूं और सोचता था कि अगर अम्मा इतना सख्त है तो पापा कितने सख्त होंगे। शुभम अब भी आश्चर्य व्यक्त करते हुये निक्कू से बोल रहा था। अरे छोड़ न यार। पापा अभी स्कूल गये हैं वहां सभी शिक्षकों से मेरे बारे में पूछेंगे कि स्कूल क्यों नहीं आता। अब तुम यह बतलाओ की हमारे सभी शिक्षक पापा से क्या बोलेंगे? निक्कू ने शुभम से पूछा।

यार तुम भी अजीब हो। तुम तो अभी कुछ समय पहले तक स्कूल जा रहे थे। मुझे तो आज स्कूल गये लगभग दो साल हो गया। जब से छठवीं का परीक्षा दिया हूं उसके बाद तो मैं स्कूल तरफ घूमने तक नहीं जाता। अब मैं क्या बतला सकता हूं कि शिक्षक तुम्हारे पापा से स्कूल नहीं आने के कौन कौन से कारण बतलायेंगे। शुभम ने कहा।

नहीं मेरा मतलब था कि अगर कुछ अनुमान लगा सकते हो तो अनुमान लगाकर बतलाओ – निक्कू ने कहा।

तो चलो अनुमान लगाकर बतलाने का प्रयास करता हूं। अच्छा पहले तुम यह बतलाओ की चतुर्वेदी मैडम अभी भी है कि नहीं ट्रांसफर कराके चली गई है? शुभम ने पूछा। शुभम अभी भी वहीं सभी शिक्षक है। जो तुम्हारे पढ़ते तक थे। इसी कारण तो तुझसे अनुमान लगाने को कहा हूं न निक्कू ने कहा। तो यह बात है। देखो निक्कू चतुर्वेदी मैडम तो यहीं कहेगी कि तुम्हारे बेटे का ध्यान पढ़ाई लिखाई को छोड़कर अन्य सभी में ज्यादा रहता है। तुम्हारे बेटा जैसे बदमाश लड़का तो मैं

अपने पूरे जीवन में नहीं देखी हूँ और पैकरा सर! अरे यार वह तो एक ही बात बोलेगा की आप जैसे पालक कहीं होंगे तब तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे स्कूल में दर्ज संख्या शून्य हो जायेगी। घर में अपने बच्चों की पूछ परख करते नहीं और जब मामला बिगड़ जाता है तब स्कूल चले आते हैं पूछने और उन्हें यह भी पता नहीं रहता की उनके लाडले कब से स्कूल नहीं आ रहे हैं। आप जैसे व्यस्त इंसान तो इस ब्रम्हांण्ड में कोई नहीं होगा। शुभम निक्कू को हंसते हंसते बतला रहा था।

और शुभम! वह अपना तिवारी सर जी क्या कहेंगे? निक्कू भी हंसते हुये पूछा।

अरे तिवारी सर क्या कहेंगे? वही अपना घीसा–पीटा जवाब देंगे, बोलेंगे पाण्डेय जी। मेरा सलाह तो आपको यही है कि अपने लड़के को घर बैठाओं, कुछ काम धंधा कराओ और हमें भी मुक्ति दो और खुद भी मुक्ति पाओ। शुभम ने कहा। हां यार शुभम। तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। आज तक जिनके भी बच्चे स्कूल नहीं गये और अगर उसके पालक स्कूल जाकर पूछते हैं तब सबके लिये यही जवाब होता है निक्कू ने गंभीर होकर कहा।

निक्कू और राय सर क्या कहेगा, जिसके साथ तुम्हारे पापा स्कूल गये हैं यह तो तुमने पूछा ही नहीं शुभम ने कहा।

हां शुभम। राय सर के बारे में मुझे पता है कि वे क्या बोलेंगे। वे कहेंगे कि पाण्डेय जी अपने लड़के को समझाओ कि वह आगे पढ़े। अगर पढ़ेगा नहीं तो आगे बढ़ेगा कैसे? राय सर यह भी बोलेंगे कि आजकल सरकार बच्चों को पढ़ाने के लिये क्या क्या सुविधा दे रही है और इन सुविधाओं का फायदा उठाकर हमारे इसी गांव के बच्चे कैसे आगे बढ़ रहे हैं। साथ में राजेन्द्र यादव और गीतांजली गिरी का उदाहरण भी देंगे निक्कू नेकहा।

अच्छा निक्कू। अब यह बतला की जैसा हम लोगों ने अनुमान लगाया है अगर वैसा ही सभी शिक्षकों ने तुम्हारे पापा से कहा, जिसकी पूरीसंभावना है तब तुम्हारे पापा घर में तुमसे क्या क्या कर सकते हैं शुभम ने पूछा।

यार शुभम्। वही तो अब मैं भी सोच रहा हूं। अगर पापा जैसे पहले थे, उसके अनुसार रहेंगे तब तो यही कहेगा कि बेटा कल से स्कूल जाने के लिये कमर कस लो और अगर आज सुबह जेसे रहे तब तो मेरी मन की बातों को समझेंगे निक्कू ने चिंतित होकर कहा।

ठीक है निक्कू! जो होगा देखा जायेगा। अभी से चिंता क्यों करें। शुभम ने कहा।

हां शुभम। तुम ठीक कह रहे हो। चलो अब घर चलते हैं। अम्मा भी सोंच रही होगी की खा पीकर जो निकला है अभी तक नहीं आया है– निक्कू ने कहा।

हां यार। चलो चलते है शुभम उठते हुये बोला और दोनों घर की तरफ चलने लगे।

****

रमेश मास्टरजी, दिवाकर राय के साथ स्कूल जाने के लिये निकला। रमेश के घर और स्कूल के बीच में पं. रामकृष्ण का घर पड़ता है जहां इन दिनों भागवत कथा चल रही है। रमेश को भी भागवत कथा का निमंत्रण मिला हुआ है। पंडित जी के घर के पास पहुंचने पर रमेश ने मास्टर जी से कहा – मास्टरजी मैं सोच रहा हूं कि थोड़ी देर भागवत कथा सुनकर चलते हैं। आपका क्या कहना है?

यार रमेश! आप तो आज स्कूल जाने के नाम से छुट्टी ही ले रखे हैं पर मुझे तो स्कूल जाना पड़ेगा। मास्टरजी ने लाचारी जताते हुये कहा।

मास्टरजी! आप भी यह क्या बोल रहे हैं। मैं मानता हूं कि सरकारी नौकरी करने वालों के लिये कुछ नियम कायदे होते हैं जिसका पालन सभी को करना चाहिये। अरे भाई! निकालो कागज और लिख डालो आवेदन। अभी उसे किसी बच्चे या व्यक्ति के हाथ स्कूल भेजवा देते हैं। आधे समय की ही तो बात है। यह अवसर भी फिर कहां बार बार मिलेगा। जैसे ही भागवत कथा समाप्त होगी, तुरंत यहां से स्कूल ही निकलेंगे। रमेश ने मास्टरजी से प्रार्थना करते हुये कहा। ठीक है भाई। जब आप इतना जोर डाल रहे हैं तब घंटा दो घंटा सुन ही लेते हैं। कागज और पेन निकालते हुये मास्टरजी ने रमेश से कहा।

आवेदन लिखकर स्कूल भिजवाने के बाद दोनों उस जगह पर जाकर बैठ गये जहां भागवत कथा चल रही थी। वेद–व्यास पर आसीन पंडित जी मुख्य कथा को स्पष्ट करने के लिये उदाहरण देते हुये कह रहा था। प्यारे स्त्रोतागण। जब राजा वृद्ध हुआ तब उसे इस बात की चिन्ता सताने लगी कि उसके मरने के बाद उसके इस विशाल राज्य का उत्तराधिकारी कौन बनेगा और सबसे बड़ी चिन्ता इस बात को लेकर थी की जो बेटा उसका उत्तराधिकारी बनेगा, क्या वह भी उतनी ही निपुणता और बुद्धिमता से राज काज चला सकेगा, जितना की वह चलाता है। अपने इस चिन्ता में डूबे राजा को देखकर उसके प्रधान मंत्री सदाशिव राजा के पास आकर कहता है कि महाराज मैंने सुना है कि हमारे राज्य के नंदन कानन में एक पहुंचे हुये विद्वान और महात्मा गिरधरदत्त जी आये हुये हैं, और उनके पास आपकी इस चिंता का सही उपचार है। अपने मंत्री की बात सुनकर राजा प्रसन्न

होते हुये उनसे मिलने की ईच्छा प्रकट करता है और मंत्री सदाशिव जी मिलने की व्यवस्था करता है। सही समय पर दोनो की मुलाकात होती है और महात्मा गिरधर दत्त जी राजा के दोनों बेटों को उचित शिक्षा देने की बात स्वीकार कर लेता है। सही समय पर शिक्षा देने का कार्य आरंभ होता है और महात्माजी राजकुमारों को वह सब कुछ सीखा देता है जो एक राजा के लिये आवश्यक होता है। राजा के मरने के बाद उसका बड़ा बेटा राजा और छोटा बेटा प्रधानमंत्री बनकर अपने राज्य को उन्नति और प्रसिद्धि के शिखर तक ले जाता है। अंत में वेद व्यास जी कथा का सार बतलाते हुये उपस्थित स्त्रोतागण से निवेदन करता है कि हमें भी अपने बच्चों की शिक्षा पर समय रहते पर्याप्त ध्यान देना चाहिये, साथ ही हमें यह भी देखना होगा कि हमारे बच्चों को जो शिक्षा मिल या दी जा रही है वह समाज में कितना उपयोगी है। वह समाज के व्यापक हितों की पूर्ति करता है या व्यक्तिगत हितों की। हमें यह भी देखना होगा कि जो विषय स्कूलों में बच्चों को पढ़ाया जा रहा है वह बच्चों के जीवन से कितना जुड़ा है? बच्चे उन विषयों को पढ़कर एक अच्छे नेक और जिम्मेदार आदमी बनेंगे या नहीं? जब तक शिक्षा हमारे समय सापेक्ष व्यवस्था व जीवन से न जुड़ा हो तब तक ऐसी शिक्षा महत्व और सम्मान नहीं पा सकता। अपनी कथा का सार बतलाने के साथ ही वेद–व्यास महराज जी कथा का मध्यांतर करता है और सभी स्त्रोतागणों के साथ रमेश भी मास्टरजी के साथ उठकर पांडाल से बाहर निकलता है। बाहर निकलने पर रमेश मास्टरजी से पूछता है– मास्टरजी आपको कथा कैसे लगी?

अरे कथा का क्या है रमेश बाबू। आखिर है तो कथा ही। वह सुनने में ही अच्छा लगता है, अमल में लाने में नहीं। मास्टरजी पांडाल से बाहर निकलते हुये कहा। यही तो हमारे समाज का दोष है मास्टरजी। जो चीज अमल में लाना चाहिये उसे छोड़ दो और जो नहीं लाना चाहिये उसे अपना लो रमेश ने कहा।

इसे ही तो सिद्धांत और व्यवहार का फर्क कहते हैं रमेश। अब आप ही बतलाओ की ओ वेद–व्यास महराज जो कथा कह रहा है क्या वह अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज रहा होगा? मास्टरजी ने पूछा?

मास्टरजी। मैं आपकी बातों से पूर्ण रूप से सहमत होते हुये भी इस बात का खण्डन करता हूं कि सिद्धांत और व्यवहार में जमीन आसमान का फर्क होना चाहिये। हम वेद–व्यास महराज की इस बात को ऐसा भी तो समझ सकते है न कि अगर किसी बच्चे या व्यक्ति को, चाहे कारण जो भी रहा हो,मान लो उचित स्कूली शिक्षा नहीं मिल पाती, तब भी उसका उचित और सही समयानुरूप मार्ग दर्शन कर उसे इस काबिल बनाया जा सकता है कि वह अपने को सम्मानूपर्ण ढंग से स्थापित कर सके। रमेश ने अपनी बात कही।

अब तक दोनों पांडाल वाले स्थान से चलकर बाहर उस स्थान पर आ गये थे जहां उनकी मोटर सायकल खड़ी थी। मोटर सायकल स्टार्ट करते हुये रमेश मास्टरजी को बैठने का ईशारा करके उसके बैठने के बाद गाड़ी स्कूल की दिशा में आगे बढ़ाता है। कुछ पल बाद मास्टरजी रमेश की बातों का जवाब देते हुये कहा– पर रमेश क्या चीज समय और परिस्थिति के सापेक्ष है इसका निर्णय कौन करेगा? हम और आप तो कर नहीं सकते। रहा सवाल स्कूल की पढ़ाई और जैसा कथा में वेद–व्यास महराज जी ने बतलाया उस प्रकार केपढ़ाई की तो मेरा दावा है कि भले से सुनने में वह सबको पसंद आया होगा लेकिन पूछने पर सभी कोई यही कहेंगे कि वे अपने बच्चों को स्कूल की पढ़ाई ही करवायेंगे और इसका कारण भी बड़ा सीधा और स्पष्ट है और वह यह है कि यह अभी हमारे समय और परिस्थिति के सापेक्ष है और इसकी निर्धारण करने वाली शक्ति भी है और वह शक्ति हमारी सरकार है। रमेश बाबू मेरा तो यहां तक मानना है कि कोई भी व्यक्ति इस विषय पर सरकार से विपरीत विचार नहीं रखेगी।

पर मास्टरजी। मैं ऐसा कहां कह रहा हूं कि हम सरकार के नीतियों के विपरीत है। मैं केवल यह कहना चाह रहा हूं कि हमारे समाज में ऐसे बहुत से बच्चे है जो बहुत से कारणों से स्कूली शिक्षा नहीं पाते या उनके मन में स्कूली शिक्षा के प्रति कोई ललक नहीं होती। तब ऐसे बच्चों को भटकाव से बचाने के लिये इसी प्रकार की सैद्धांतिक शिक्षा के साथ साथ जीवनोपयोगी कौशल विकसित करने से संबंधित शिक्षा भी साथ साथ होती तो किसी बच्चे को स्कूल से दूर रहने का मन

ही नहीं होता और हमारा समाज भी बहुत प्रकार के व्यवधानों से सुरक्षित हो जाता रमेश ने गाड़ी चलाते चलाते कहा।

बात समाप्त होते होते रमेश और मास्टरजी की गाड़ी स्कूल के कम्पाउण्ड में प्रवेश करती है। मास्टरजी उतरकर स्टाफ रूम की ओर जाते हुये रमेश को भी आने का ईशारा करता है। रमेश गाड़ी खड़ी करके स्टाफ रूम की ओर जाता है।

****

निक्कू को बाहर निकले काफी समय हो चुका था। उसकी मॉ ललिता चिन्ता कर रही थी कि पता नहीं आज वह कहां चला गया है। पास पड़ोस में पूछताछ करने पर भी जब किसी ने कुछ नहीं बतलाया तब उसने सोची की शुभम के घर पता करना चाहिये। वैसे ललिता वहां जाना नहीं चाहती थी पर करे तो क्या करें। अगर घर में निक्कू के पापा या अन्य कोई भी होता तो वह वहां जाना तो दूर जाने के बारे में सोचती भी नहीं। किसी और की उम्मीद न देख उसने स्वयं जाने का निश्चय की और शुभम के घर की ओर जाने लगी। अभी शुभम का घर कुछ ही दूर बचा था कि उसे शुभम की मॉ पावर्ती उसी के तरफ आती दिखाई दी। जैसे ही दोनों एक दूसरेके बराबर पहुंची वैसे ही निक्कू की मॉ ललिता बोली – क्यों पार्वती (शुभम की मॉ) निक्कू तुम लोगों के घर है क्या?

पार्वती– नहीं तो। यही पूछने तो मैं भी तुम्हारे यहां जा रही थी। क्यों तुम लोगों के यहां बच्चे नहीं है?

ललिता– अगर मेरे घर में बच्चे होते तो क्या मैं तुम्हारे यहां पूछने जाती? वैसे भी मुझे बिना काम के गलियों में घूमना तो क्या निकलना भी पसंद नहीं है।

पार्वती– नहीं तो मैं क्या तुम्हारे नजरों में गलियों में घूमने के लिये पैदा हुई हूं। मुझे भी कोई शौक नहीं है कि बिना काम के इधर–उधर घुमती रहूं।

ललिता– यह तो सब तुम्हारी करनी का फल है और सजा तुम्हारे साथ साथ हमें भी मिल रही है। ये निक्कू को कितने बार बोली हूं कि उस शुभम की छाया से भी दूर रहा कर। पर नहीं। वह कहीं आयेगा– जायेगा, घूमेगा–फिरेगा तो उसी के साथ। नहीं तो किसी के साथ नहीं। पता नहीं शुभम ने उस पर क्या जादू डाल रखा है।

पार्वती– देखो ललिता अब तुम अपना हद पार कर रही हो। ताली कभी भी एक हाथ से नहीं बजती। इतने दिनों में तुम मेरे बेटे को अपने घर आते कितने बार देखी हो। अरे याद भी करोगी न तो दिन नहीं सूझेगा। और बड़ा मेरे बेटे शुभम को दोष दे रही हो।

ललिता– एक बार तो क्या हजार बार दोष दूंगी। चाहे तो गांव में न्याय– पंचायती करवा ले, सब कोई तुम्हारे बेटे पर ही दोष डालेंगे। अरे उसी के साथ साथ घुमकर तो निक्कू ने स्कूल जाना बंद किया। अगर वह रोज स्कूल जाता, तो मेरा निक्कू भी जाता। पर तुम होगों को क्या बेटा पढ़े तब भी अच्छा और न पढ़े तब भी अच्छा। कभी मॉ का फर्ज अदा की। कभी शुभम स्कूल नहीं गया तो दो चार झापड़ लगाई कि तुम स्कूल कैसे नहीं जाओगे। नहीं न। आखिर यह सब क्यों करती। पढ़ने–लिखने से तो कोई मतलब कभी रहा नहीं है।पावर्ती – और अब यह तुम क्या कह रही हो? अरे जो बात अभी तुमने मुझसे कही है वही सब कुछ मैं तुम्हे कह सकती हूं। पर नहीं। मैं सोंचती हूं कि आखिर शिकायत करने से क्या फायदा? और तुम कहती हो कि शुभम को पढ़ने के लिये कभी समझाया क्यों नहीं या फिर मारा–पीटा क्यों नहीं? तुम क्या जानो हम लोग उसके साथ क्या क्या किये है। पर मैं तुम्हारे जैसी नहीं हूं कि दिन रात उसी बात का ढिंढोरा पीटती रहूं। अपने बेटे की पढ़ाई के प्रति अरूचि को देखकर हमने बोलना ही बंद कर दिया। पर इसका यह मतलब नहीं है कि हमने शुभम को आवारागर्दी करने की पूरी छूट दे दी है। बेचारे छठवीं कक्षा के बाद से ही स्कूल नहीं जा रहा है, पर आज तक गांव के किसी भी आदमी ने यह शिकायत नहीं की है कि शुभम उसके घर की सामान चोरी कर रहा था या गालियां दे रहा था और किसी के साथ लड़ाई–झगड़ा कर रहा था। हमने हर गांव में ऐसे बहुत से बच्चे देखे और सुने हैं जो पढ़ते लिखते भी नहीं और सब प्रकार की बदमाशियां करते हैं। ऐसे बच्चों से तो मेरा शुभम और निक्कू लाखों गुणा अच्छे है। अरे मैंने तो अपने मन को यह कह कर शांत कर दिया है कि चलो मेरे बेटे के मन में पढ़ने लिखने की ईच्छा और ललक न सही लेकिन वह सीधा सादा तो है न। और ललिता मेरा कहना यही है कि तुम भी अपने मन को यह कहकर समझा लो कि पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती।

ललिता– ले चल बड़ा मुझे समझा रही है। अब वह जमाना गया जब चौथी– पांचवी पढ़े लिखे लोगों को नौकरी मिल जाती थी। अब तो ऐसा समय आ गया है कि बड़े बड़े पढ़े लिखे लोगों को कुछ काम धंधा मिलता नहीं है और एक तुम हो कि अपने बेटे के छठवीं पढ़कर स्कूल जाना बंद कर देने के बाद भी इतना उल्लास मना रही है। रह गया सवाल सीधा सादा का तो न तो उसे मैं चाटूंगी और न यह जमाना। और अभी दोनों का उमर ही क्या हुआ है। पंख निकलने दो फिर देखना कैसे कैसे बदमाशियां करेंगे। अरे पढ़ते लिखते तो अपना बुरा–भला जानते और समझते। पढ़े लिखे ही नहीं है तो उन्हें कोई भी बहला–फुसला कर कुछ भी करा सकते हैं।

पावर्ती– ललिता इसी कारण तो मैं कह रही हूं कि अब हमें बच्चों के स्कूल में जाकर पढने लिखने के लिये दबाव डालने के बदले कोई दूसरा रास्ता खोजना चाहिये जिससे वे अपना बुरा भला जान और समझ सके। अगर बच्चे दबाव या डर से स्कूल जाते न तो कब से स्कूल जाना शुरू कर दिये होते। अरे मेरी बात छोड़ो, तुम अपना ही ले लो। निक्कू को स्कूल भेजने के लिये तुमने क्या क्या जतन नहीं की पर कुछ लाभ हुआ। नहीं न। इसीलिये कहती हूं कि दबाव या भय से कुछ होने वाला नहीं है। अगर बच्चों के स्पष्ट रूप से मना करने के बाद भी हम उन पर स्कूल जाने के लिये और आगे दबाव बनायेंगे या किसी प्रकार से प्रताड़ित करेंगे तो उनके पास दो ही रास्ते होंगे या तो वे घर छोड़कर कहीं दूर चले जायेंगे या फिर कुछ करके मर जायेंगे। और मैं तो ललिता यह दोनों ही रास्ता अपने बच्चे तो क्या किसी के भी बच्चे के लिये नहीं चाहुगी। और रह गया सवाल तुम्हारी और तुम्हारे बच्चे की तो उसके लिये तुम उसकी मॉ हो जैसा चाहो करने के लिये स्वतंत्र हो। फिर भी मैं तो यही चाहूंगी कि हमारे बच्चे जैसे भी रहे संसार में सही रास्ते पर चलते हुये जीते रहे। अपनी बात कहकर पार्वती अपने घर के तरफ जाने के लिये मुड़ जाती है

पार्वती के जाने के बाद ललिता अपने घर आते आते सोचने लगती है कि क्या सचमुच अगर हम बच्चों पर बार बार दबाव बनायेंगे या उनकी ईच्छाओं के विपरीत जाकर काम करें तो बच्चे वैसा कर सकते है जिसकी संभावना पार्वती ने उससे व्यक्त की थी या फिर यह मां के ममता भरे मन की केवल कोरी कल्पना बस ही है। सोचते सोचते ललिता कब घर के दरवाजे तक पहुंच गई उसे पता ही नहीं चला। उसे पता तो तब चला जब घर से बाहर निकलते हुये निक्कू ने आवाज लगाकर कहा अरे अम्मा? आप घर के दरवाजा बंद किये बिना कहां चली गई थी? मैं कब से आपका रास्ता देख रहा था।निक्कू को अपने सामने पाकर ललिता के चेहरे पर न चाहते हुये भी मुस्कुराहट आ गई और उससे पूछी अरे निक्कू तुम मेरा छोड़। पहले यह बतला कि तुम खाना खाकर जो निकले थे उसके बाद अभी दिखाई दे रहे हो। इतनी देर तक कहां थे?

अम्मा! मैं और शुभम। पापा के स्कूल से आने का इंतजार कर रहे थे और तालाब में आम के पेड़ के पास बैठे हुये थे।

ललिता निक्कू से आगे और कुछ नहीं पूछती और सीधा घर में अंदर चली जाती है। निक्कू भी अपने अम्मा के पीछे–पीछे चला जाता है।

****

रमेश बहुत देर तक स्कूल में बैठकर शिक्षकों के साथ निक्कू के स्कूल नहीं आने के कारणों पर विस्तार से चर्चा करता रहा। अंत में सभी शिक्षकों से विदा लेकर वह अपने घर की ओर प्रस्थान किया। उनके चले जाने के बाद राय सर ने अन्य उपस्थित शिक्षकों से कहा– आपको रमेश की बातचीत कैसा लगा?

इस पर चतुर्वेदी मेडम बोली– सर कैसा लगा क्या? आप तो खुद सुन रहे थे। ओ तो बच्चों के स्कूल नहीं आने के लिये पूर्ण रूप से हम शिक्षकों को ही जिम्मेदार ठहरा कर चला गया। पर चतुर्वेदी मेडम उनकी बातों में मुझे कुछ सच्चाई भी नजर आई– राय सर ने बात आगे बढ़ाते हुये कहा।

कैसे सच्चाई सर! पैकरा सर ने पूछा?

यही पैकरा जी। कि जब कभी हमसे उच्च कार्यालय वाले यह जानकारी मांगते हैं कि आपके शाला परिक्षेत्र में ऐसे कितने बच्चे है जो लंबे समय से शाला नहीं आ रहे हैं या फिर जिनकी शाला आना नहीं के बराबर है और उसके संभावित कारण क्या क्या हो सकते हैं तब मैं केवल अपनी या अपने स्कूल की ही बात नहीं कह रहा हूं यह सब की बात है, या तो ऐसी संख्या नहीं दी जाती है या फिर छिपाते हुये बहुत कम ही जाती है और कारण तो सबका लगभग एक जैसा होता है कि ऐसे बच्चे घरेलु कार्यो में लगे रहते हैं। इससे और आगे जाकर किसी शिक्षक या स्कूल को कुछ कहना हो तो उसमें यह भी जोड़ दिया जाता है कि ऐसे बच्चों के माता पिता आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पाते और बच्चों के ऊपर दबाव नहीं होने के कारण उनका स्कूल आना धीरे धीरे बंद हो जाता है राय सर ने अपना विचार रखते हुये कहा।

पर सर आखिर सच भी तो यही है। आप इस दिलेश्वर के लड़के रमाकांत को ही ले लो न। बेचारे को पढ़ने के उमर में माता पिता के साथ खेतों में जाकर काम करना पड़ा और धीरे धीरे उसकी पढ़ाई रूक गई– चतुर्वेदी मैडम बोली।

आप ठीक कह रही हैं मैंडम। अभी तक हम बच्चों के स्कूल नहीं आने के पीछे उन्हीं बातों को कारण मान रहे थे जो अब तक सभी के द्वारा माना जाता रहा है। मसलन यही कि उसके मां बाप पढ़े लिखे नहीं है तो वे पढ़ने लिखने का महत्व क्या जाने, अगर लड़की हुई तो सरलता से कह देते हैं कि वह घर में अपने छोटे भाई बहनों की देखभाल करने के साथ साथ अपने माता पिता की अनुपस्थिति में घर का कामकाज करती है या फिर जल्दी शादी होने के कारण वह स्कूल आने में शर्माती है। मुझे अब समझ आ रहा है कि ऐसा कारण बतला के हम खुद अपने ही बातों या जानकारी को काट रहे होते हैं– राय सर ने कहा।

अपनी ही बातों को काटते हैं ओ कैसे सर? चुतर्वेदी मैडम ने पूछी।

ओ– ऐसे मैडम! आजकल हम खुद देख रहे है कि हमारे आस पास ऐसा कोई भी गरीब परिवार नहीं रहता जो आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों को शाला न भेंजें। और ऐसा संभव हुआ सरकार के द्वारा किए गए प्रयासो से।उनके द्वारा ऐसे परिवारों के लिये बहुत कुछ किया गया है और किया भी जा रहा है। अब तो 2009 से अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने से बच्चों के शिक्षा के लिये आवश्यक सभी चीजें निःशुल्क दी जा रही है। इसके अतिरिक्त पोषण आहार के रूप में गुणवत्ता युक्त मध्यान्ह भोजन दिया जा रहा है। इसलिये यह कहना की पालक गरीबी के कारण बच्चों को स्कूल नहीं भेजते अब अप्रासंगिक हो गया है। इसी प्रकार बाल विवाह को निषिद्ध करने व इसके खिलाफ चलाये गये जागरूकता अभियान के कारण बाल विवाह भी अब अपवाद के रूप में ही रह गया है। अब केवल एक ही कारण बच जाता है, जिसकी चर्चा यहां रमेश बैठकर कर रहा था। राय सर ने चतुर्वेदी मैडम की ओर देखते हुये कहा।

तो सर क्या अब आप भी रमेश के साथ साथ हम शिक्षकों को ही बच्चों के स्कूल नहीं आने के लिये जिम्मेदार मानने लगे? चतुर्वेदी मैडम चिन्ता व्यक्त करते हुये पूछी।

बिल्कुल नहीं मैडम। राय सर आगे बोलते हुये कहा कोई एक बच्चा जब पूरा पढ़ लिखकर निकलता है तो उसमें केवल उस बच्चे या उसके पालक या शिक्षक या फिर हमारी सरकार का ही योगदान नहीं होता बल्कि यह सभी के समन्वित प्रयासों का परिणाम होता है। सभी के समन्वित प्रयासों का परिणाम कहने से मेरा आशय यह है कि सरकार शिक्षा की नीतियों के अनुरूप कक्षावार, विषयवार पाठ्यक्रमों का निर्धारण करती है जिसे स्कूल में पढ़ाया जाना होता है। अब यहां मुख्य बात यह है कि पाठ्यक्रम का बच्चों के परिवेश व उसके अनुरूप बनें सोच से कितना सामंजस्य होता है। अगर पाठ्यक्रम बच्चों के परिवेश व सोच के अनुरूप हो तब बच्चे ऐसे पाठ्यक्रमों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करने में रूचि प्रदर्शित करते है और अगर सामंजस्य न हो तो बच्चों को यह अरूचिकर लग सकता है और उनके स्कूल आने का क्रम भी टूट सकता है।

अब चतुर्वेदी मैंडम आप यह बतलाईये की ठीक है पाठ्यक्रम तो सरकारें अपनी शिक्षा नीतियों के अनुसार बनाकर स्कूलों को उपलब्ध करा देती है। पाठ्यक्रम अपने उद्देश्यों के अनुसार सभी बच्चों तक पहुंचे यह किसकी जिम्मेदारी है?

स्वाभाविक है सर। इसकी जिम्मेदारी हम सभी शिक्षकों की है। चतुर्वेदी मैडम झट से बोली।

हां मैडम। यह सब हम शिक्षकों की जिम्मेदारी है। पर क्या होता भी ऐसा ही है? राय सर प्रश्न पूछते हुये कहा। प्रायः यह देखा जाता है कि हम पाठ्यक्रमों को अपनी अपनी कक्षाओं में पूर्ण करने के बाद मान लेते हैं कि हमने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन अच्छे ढंग से कर लिया और अब कुछ करने की जरूरत नहीं है। जबकि रमेश की बातों को सुनकर मुझे अब एहसासहुआ है कि हमारी जिम्मेदारी अब कुछ और करने की जरूरत है के बाद या से ही शुरू होती है।

ओ कैसे राय सर– पैकरा जी ने पूछा?

ओ ऐसे पैकरा जी। जब हम अपनी कक्षाओं में विषयों को बच्चों के सामने प्रस्तुत करते हैं हमे उसी समय बच्चों के हाव भाव या प्रतिक्रिया से पता चल जाता है कि कितने बच्चों का झुकाव हमारे अध्यापन की ओर है और कितने बच्चों का नहीं। बच्चों का यह झुकाव हमारे अध्यापन की शैली के साथ साथ विषयों को आकर्षक व विविधता के साथ प्रस्तुत करने पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अगर हम बच्चों को केवल पढ़ाने के उद्देश्य से पढ़ायेंगे तब मानकर चलिये कि बच्चे हमसे नहीं जुड़ेंगे। पर अगर यही पर हम यह मानकर पढ़ायें की बच्चों को मैं इस पाठ्यक्रम से जोड़ूगा अर्थात प्रस्तुत पाठ्यक्रम बच्चे क्यों पढ़े? आगे उनकी जीवन में इसकी क्या उपयोगिता हो सकती है, की जानकारी देना अपना उद्देश्य रखेंगे तब निश्चित मानकर चलिये की वहां पर हमारी अध्यापन शैली में नवीनता व रोचकता आयेगी, जिसे हम सरल शब्दों में नवाचार भी कह सकते हैं? यह नवाचार बच्चों को विषय से जोड़ेगी और बच्चे खुद ब खुद सीखने के नाम से स्कूल आना चाहेंगे। राय सर ने समझाते हुये कहा।

सर पर मुझे एक बात अब भी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या सभी स्कूलों में नवाचार होता है और अगर होता है तो फिर ऐसे स्कूलों में शाला छोड़ने वाले बच्चे होने ही नहीं चाहिये और दूसरी बात यह राय सर कि जिन स्कूलों में नवाचार होता ही नहीं, तब तो फिर उस स्कूल के सारे बच्चे स्कूल आना बंद कर देते पर ऐसा दोनों ही स्थानों में दिखाई नहीं देता। इसका क्या कारण हो सकता है राय सर– पैकरा जी ने प्रश्न किया?

पैकरा सर। आपने जिन दो स्थितियों की बात कही है वह दोनों ही स्थिति की अतिरेक स्थिति है। न तो ऐसा कोई स्कूल होगा जहां नवाचार का भरपूर उपयोग होता होगा और न ही ऐसा कोई स्कूल होगा जहां नवाचार होता ही नहीं होगा। पर इसका यह मतलब नही है कि हम अपने अध्यापन के दौरान नवाचार के उपयोग के बारे में सोंचे ही न । राय सर ने समझाते हुयेकहा। और हां पैकरा जी निक्कू जैसे बच्चे भी आखिर कितने होंगे? मेरा तो आप सभी लोगों से यही कहना है कि हमारे स्कूल में नियमित नहीं आने वाले बच्चों में से कुछ बच्चे

ऐसे हो सकते हैं जिनको हमारे पढ़ाने के ढंग के कारण किसी विषय को समझने में दिक्कत होती हो और यही दिक्कत आगे चलकर उनके स्कूल छोड़ने का कारण बन सकता है। अतः एक शिक्षक और ओ भी जिम्मेदार शिक्षक होने के नाते हम सबको इस ओर सूक्ष्मता से विचार कर अपने अध्यापन को रोचक और सरल बनाने का प्रयास करना चाहिये।

हां सर। आपकी सारी बातों को सुनकर मुझे भी एहसास हो रही है कि अब तक हमसे कहीं न कहीं चूक हो रही थी और अब समय रहते इसे हमें सुधारना होगा– चतुर्वेदी मैडम बोली।

अपनी बात खतम करते हुये राय सर ने कहा– हम सबको आज से ही अपने अपने विषय के उन कठिन बिन्दुओं को चिन्हांकित करना होगा जिसे बच्चे समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसके बाद कठिन होने के कारण उसे सरल ढंग से प्रस्तुत करने के उपाय, उसके लिये आवश्यक सामग्री व अन्य चीजों को भी ध्यान में रखना होगा और मुझे आशा है कि आप सभी इस कार्य को पूर्ण निष्ठा व जिम्मेदारी से करेंगे?

आप इसकी बिल्कुल चिंता न करें सर। हम आपको भरोसा दिलाते हैं कि हमारे स्कूल से अब कोई बच्चा इस बात को लेकर शिकायत नहीं करेगा कि उसे अमूक विषय शिक्षकों के पढ़ाने के कारण समझ में नहीं आया। चतुर्वेदी मैडम और पैकरा जी दोनों एक साथ बोले।

स्कूल में छुटटी का समय हो रहा था। चपरासी छुट्टी की घंटी लगाता है। बच्चे दौड़ते हुये बाहर निकलते है। आज सभी शिक्षकों के चेहरे में गजब की संतुष्टि नजर आ रही है।

****

रमेश स्कूल से आने के बाद घर में बैठकर चाय पी रहा था। ललिता घर के दूसरे कामों में व्यस्त थी और निक्कू दूसरे कमरे में बैठकर मोबाईल से कुछ खेल रहा था। उसी समय शुभम के पिताजी दिनेश आवाज लगाते हुये अंदर आता है। रमेश बाहर निकलकर उसे कुर्सी पर बैठाते हुये कहता है कहो दिनेश भाई बड़े दिनों बाद इधर आना हुआ है। हां यार। क्या करोगे आजकल आदमी अपनी जिम्मेदारियों में इस तरह उलझा हुआ है कि अपने ही छाया से बात करने का समय नहीं मिल पाता– दिनेश ने कहा।

हॉ दिनेश। आप ठीक कह रहे हैं ऐसा प्रायः सभी के साथ हो रहा है। हम सोचते हैं कि हम अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरी निष्ठा व लगन से कर रहे हैं पर कब सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन हमसे छूट जाता है पता ही नहीं चलता और जब पता चलता है तब फिर सुधरने या सुधारने का रास्ता ही नहीं बचता। कभी कभी तो मैं सोंचता हूं कि हमसे अच्छे तो आज से 20–25 साल पहले रहने वाले लोग थे। क्या वे अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन नहीं करते थे? हमसे ज्यादा ही करते थे कम नहीं। उनका कितना भरा पूरा परिवार होता था। एक एक परिवार में चार पांच बच्चे होते थे, साथ में माता पिता, भाई–बहन सो अलग और सभी की पढ़ाई–लिखाई से लेकर अन्य दूसरे आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो जाती थी। घर के किसी भी सदस्यों के मुंह से कभी कोई शिकायत सुनने को नहीं मिलती थी और आज हमारे समय को ही ले लो। ज्यादातर लोगों का अब एक ही बच्चा होता है बहुत कम लोग ऐसे रह गये है जिनका दो या दो से अधिक बच्चे हों। फिर भी व्यस्तता इतनी की जैसे पूरे संसार का बोझ उन्हीं के कंधे पर हों। आज रिश्तेदार और पड़ोसियों की तो बात बहुत दूर की है दिनेश भाई हम अपने ही घर के तीन सदस्यों के बीच अजनबियों की तरह रहते हैं। रमेश ने कहा।

हॉ रमेश। बिल्कुल यही सब कुछ हो रहा है। जिम्मेदारी निर्वहन के दिखावे ने आज बेटे को बाप से और पत्नी को पति से दूर कर दिया है। पर अब हमको यह सोचना पड़ेगा कि हमारी असली और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी तो अपने बच्चों को

सही दिशा पकड़ाना है और आज मैं आपके पास इसी विषय पर ही बात करने के लिये आया हूं दिनेश बोला।

रमेश, ललिता को आवाज देकर कहता है कि वह शुभम के पिताजी के लिये चाय पानी लेकर आये। ललिता चाय पानी लेकर आती है और वहीं रख देती है। दिनेश धीरे धीरे चाय पीने लगता है और रमेश बात को अगले जाते हुये पूछता है किस विषय पर दिनेश भाई?

दिनेश बोला– यही रमेश की हम दोनों के ही एक एक बेटा है और दोनों कैसे हैं यह तो आप जानते ही हैं। जिस स्थिति में वे दोनों आज हैं वहां से हम उनके लिये क्या कर सकते हैं? बस इसी बात पर आपसे चर्चा करने के लिये आया हूं। आज जब मैं घर पहुंचा तब पहुंचते ही शुभम की मॉ बोली की निक्कू के पापा आज मास्टरजी के साथ स्कूल गये हैं तो मन में आपसे चर्चा करने की इच्छा और बलवती हो गई।

हॉ दिनेश स्कूल तो गया था, पर वहां का रवैया मुझे ठीक नहीं लगा– रमेश ने कहा।

ठीक नहीं लगा। ओ कैसे और क्यों? दिनेश ने पूछा।

भाई दिनेश। मेरा स्कूल जाने का एक ही उद्देश्य था। यह पता करना कि हमारे गांव में ऐसे कितने बच्चे है। जो स्कूल नहीं जा रहे हैं और ऐसे कितने बच्चे हैं जो नाम मात्र के लिये स्कूल जा रहे हैं। ऐसे बच्चों को स्कूल लाने के लिये क्या क्या प्रयास किये जा रहे हैं? रमेश ने बतलाया।

तो क्या पता चला रमेश भाई? दिनेश ने उत्सुकता से पूछा।

अरे दिनेश भाई। कुछ पता चलना तो दूर, उल्टा शिक्षक बन्धु हम पालकों को ही इसके लिये पूर्ण रूप से जिम्मेदार मान रहे हैं। उनका कहना है कि आप लोग अपने बच्चों की शिक्ष–दीक्षा पर समय रहते ध्यान नहीं देते। कभी उन्हें घर में पढ़ने के लिये नहीं कहते। अरे यहां तक कि आप लोगों को तो इतनी भी फुरसत

नहीं रहती की अपने बच्चों से यह पूछें कि बेटा आज स्कूल गये थे कि नहीं और अगर गये थे तो क्या पढ़ाई हुई और नहीं गये तो क्यों नहीं। अगर समय रहते आप लोग अपनी इन जिम्मेदारियों का निर्वहन कर लेते तो यह नौबत ही नहीं आती कि आपका बच्चा स्कूल आना बंद कर दे और जब आप लोगों को पता चलता है तब तक काफी विलंब हो जाये रहता है। रमेश ने स्कूल में उसके साथ हुये चर्चा को विस्तार से बतलाया।

हॉ रमेश भाई। एक प्रकार से सोंचे तो हमारे शिक्षक बन्धु सही कह रहे हैं। अगर समय रहते हम नियमित अपने बच्चों की गतिविधियों के बारे में जानकारी रखे होते तो आज यह दिन देखना नहीं पड़ता दिनेश ने कहा।

रमेश ने दिनेश की बातों में अपनी बात मिलाते हुये कहा– रमेश भाई तो मैं यह कहां कह रहा हूं कि हमसे गलती नहीं हुई है पर मैं यह मानने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं हू की सारी गलती हम पालकों से ही हुई है।

रमेश की बात सुनकर दिनेश मुस्कुराते हुये कहा– रमेश भाई। बच्चों के लिये पहला मार्गदर्शक और जवाबदेह तो उसके पालक ही होते हैं न। फिर शिक्षकों का यह कहना की आप लोगों की उदासीनता के कारण बच्चे स्कूल नहीं आते किस दृष्टिकोण से गलत है? आखिर बच्चों के स्कूल नहीं जाने के लिये भला और कौन दूसरा जिम्मेदार हो सकता है?

दिनेश के प्रश्नों का जवाब देते हुये रमेश ने कहा– दिनेश भाई। यहीं बात तो मैं स्कूल में शिक्षकों से पूछा की आप लोगों के अनुसार बच्चों के स्कूल नहीं आने के क्या क्या कारण हो सकते हैं। और जैसा की आप अभी खुद पालकों के अतिरिक्त किसी अन्य को जिम्मेदार नहीं मान रहे हैं वैसा ही मानना सभी शिक्षकों का भी था। पर मुझे शिक्षकों की यह बात उचित नहीं लगी। मैंने शिक्षकों से कहा भी कि चलो मैं अपने बेटे निक्कू और आपके बेटे शुभम के बारे में यह मान भी लूं कि वे हमारी उदासीनता के कारण स्कूल से दूर होते गये पर इसी गांव में ऐसे कई बच्चों को मैने स्कूल जाना बंद करते देखा और सुना है जिनके माता पिता अपने

बच्चों की शिक्षा को लेकर कितने जागरूक माने जाते हैं तो क्या उसके लिये भी उसके पालक ही जिम्मेदार हैं।

दिनेश ने कहा– हॉ रमेश भाई। यह तो आपने बहुत सुंदर और तर्कपूर्ण बात कही। इस ओर तो मेरा भी कभी ध्यान नहीं गया कि ऐसे बच्चे जिनके पालक दिन रात उनके पढ़ाई को लेकर लगे रहते हैं वे क्यों स्कूल छोड़ देते है। तो आपके प्रश्नों का उत्तर शिक्षकों ने क्या दिया?

रमेश ने कहा– अरे क्या जवाब देते। एक दूसरे का मुंह देखने लगे और आखिर में जब कुछ सूझा नहीं तो उल्टे मुझसे ही पूछ लिये कि आपके अनुसार और क्या कारण हो सकता है बच्चों के स्कूल छोड़ने का।तो आपने कुछ कारण बतलाया– दिनेश ने पूछा

हॉ दिनेश भाई। कुछ समय पहले मैं बच्चों के शाला से दूर होने के कारणों के संबंध मे एक लेख पढ़ा था। उसमें उस लेख को लिखने वाले ने अपने व्यापक अनुसंधान के बाद यह निष्कर्ष दिया था कि जिस प्रकार कोई भी मनुष्य एक ही परिस्थिति में रहने या काम करने के कारण उब जाता है उसी प्रकार अगर बच्चों को भी प्रतिदिन एक ही ढंग से पढ़ाया जाये तो उसमें भी उबटन की भावना आती है। उबाऊपन हमारे शरीर में थकावट उत्पन्न करती है और थकान का सीधा संबंध हमारे कार्य करने की क्षमता पर प्रभाव डालती है। इसी कारण आकर्षण बनाये रखने के उद्देश्य से परिस्थिति व शैली में समय समय पर बदलाव करते रहना चाहिये। इसके अतिरिक्त भी और बहुत सी बातें जैसे पाठ्यक्रम की संरचना, उसका परिवेश व जीवन से संबंध तथा उपयोगिता व महत्व भी ऐसे कारक है जो बच्चों के स्कूल आने न आने पर प्रभाव डालते हैं – रमेश ने बतलाते हुये कहा।

रमेश भाई। यह तो आपने शिक्षकों को बहुत ही अच्छी बातों की जानकारी दी। इस पर हमारे शिक्षक बंधुओं की प्रतिक्रिया कैसे रही? दिनेश ने पूछा।

अरे प्रतिक्रिया कैसी रही यह तो मुझे तुरंत पता नहीं चल पाया क्योंकि मेरी बातों को सुनकर सभी लोग शांत बैठे हुये थे। कुछ बोले नहीं। पर मैं इतना

तो समझ गया था कि मेरी बात जो मेरी बात नहीं, एक शिक्षाविद की बात थी, उनके मन को भी जंच रही थी और शायद अब वे इस दिशा में सोंचते हुये कुछ परिवर्तन करने की दिशा में कार्य करें रमेश ने कहा।

दिनेश बोला– रमेश जी काश। ऐसा हो जाये। पर अब आप मुझे यह बतलाईये कि आगे निक्कू के बारे में क्या सोचा है?

रमेश– मैं तो निक्कू से इस संबंध में केवल एक ही बार बात किया हूँ । पर हां उसकी अम्मा बतला रही थी की वह बार बार यही कहता है उसका पढ़ने का मन नहीं है। निक्कू के मन की बात, समय की आवश्यकता और सरकार द्वारा ऐसे बच्चों के लिये आरंभ किये जाने वाले कुछ नये कार्यों के संबंध में कुछ सोच विचार कर ही आगे का कदम उठाऊंगा।दिनेश– हॉ रमेश भाई। आप अपने निर्णय से मुझे भी अवगत करायेंगे।

रमेश– तो फिर अब चलता हूं।

रमेश– हॉ ठीक है। आते रहा कीजिये।

दिनेश नमस्कार कर रमेश के घर से बाहर निकलता है। रमेश अब भी वहीं बैठा सोचने लगता है कि जिस प्रकार निक्कू की मन की स्थिति वर्तमान समय में है उसमें उसके लिये क्या सही हो सकता है। बहुत सोचने के बाद भी जवाब नहीं मिल रहा है। पर हां रमेश के मन में एक बात जरूर दृढता से स्थापित हुई है कि अगर प्रयास किया जाये तब हर समस्या का हल है। उसके बेटे निक्कू की समस्या भी समाप्त हो जायेगी, वह भी एक सुनहरे भविष्य की ओर आगे बढेगा।

****

दिनेश और पार्वती घरेलु सामान खरीदने शहर जा रहे थे। अभी वे मुख्य शहर में घुस ही रहे थे कि एक स्थान पर भीड़ जमा देखकर दिनेश ने अपने मोटरसाईकल की रफ्तार कम कर दी। पार्वती उससे बोली भी कि रफ्तार कम मत करो। सामान खरीदकर घर जल्दी जाना है। परंतु उत्सुकतावस दिनेश मोटरसायकल की रफ्तार कम करते करते वहीं सड़क किनारे गाड़ी खड़ी करके पार्वती से बोला तुम यहीं रूकन। मैं अभी देखकर आता हूं कि वहां भीड़ क्यों लगी है। पार्वती बार बार बोलती रही की भीड़ में जाने से क्या फायदा? घर जाने में विलंब होगी। शुभम घर में अकेले है। पर दिनेश सुनकर भी अनसुना करते हुये भीड़ की तरफ बढ़ गया। वहां जाकर उसने देखा कि दो लड़कों को पुलिस पकड़ा हुआ है और भीड़ मे से कुछ लोग लगातार बोलते जा रहे हैं कि दरोगा साहब इन लड़को को छोड़ना मत। ये दोनो लड़के चोरी पाकेटमारी और नशा करने को अपनी आदत बना लिये है। इससे पहले भी इन दोनों को कई बार ऐसा करते हुये हम लोग पकड़े हैं और ये सोचकर की अभी बच्चे है गलत संगति में पड़कर भूलवश ऐसा करते होंगे आप लोगों को न सौंपकर समझाबुझाकर छोड़ देते थे। पर सुधरना तो दूर इनकी आदत और बिगड़ती जा रही है। इसी कारण इन लोगों को चार दिन अंदर रखेंगे तो खुद अकल ठिकाने पर आ जायेगा। भीड़ की बातों को सुनकर दरोगा रणवीर सिंह उन दोनों लड़कों की ओर देखते हुये पूछा– क्यों रे। तुम लोग यहां कहा पर रहते हो। दरोगा के प्रश्न सुनकर दोनो लड़के कुछ देर तो चुप रहे। पर बार बार पूछने पर उनमें से एक लड़का जिसका नाम सुमीत था डरते हुये बोला ओ साहब उधर जो बस्ती है न वहां। उसके आधे अधूरे जानकारी को सुनकर दरोगा थोड़ा गुस्सा दिखाते हुये बोला अरे उस तरफ की कौन सी बस्ती। उस बस्ती का कुछ नाम भी तो होगा। तब सुमीत ने बोला साहब उस बस्ती का नाम कालीनगर है।

दरोगा– और यह चोरी, पाकेटमारी का काम कब से कर रहे हो?

सुमीत– साहब। आज पहली बार है।

दरोगा– आज पहली बार है तो क्यों ये सब लोग झूठ बोल रहे हैं। क्यों इन दोनों लड़को ने पहली बार चोरी किया है क्या? दरोगा ने भीड़ की तरफ देखते हुये पूछा।

दरोगा की बात को सुनकर भीड़ में से कुछ लोगों ने पुनः एक साथ कहा नहीं साहब। हम तो आपसे शुरू से कह रहे हैं। कि यह काम अब इन लोगों की आदत बन गई है। सीधा इन लोगों को थाने ले चलिये। तभी इन लोगों को पता चलेगी। भीड़ की बातों को अनसुना करते हुये दरोगा साहब ने पुनः दूसरे लड़के से पूछा। क्यों तुम्हारा क्या नाम है?

दूसरे लड़के ने जवाब दिया – जी साहब। मेरा नाम अजीत है और मैं भी सुमीत के घर के पास रहता हूं।

दरोगा थोड़ा और सख्त होते हुये पूछा– और स्कूल जाते हो की नहीं?

दरोगा की बातों को सुनकर दोनों लड़के एक दूसरे का मुंह देखने लगे और अपना चेहरा नीचे कर जमीन को पांव से कुरेदने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर दरोगा ने कहा अरे मैं तो तुम लोगों को देखकर ही जान गया था पढ़ते लिखते होगे नहीं। इसी कारण दिन भर गलत काम करते फिरते हो। अभी तुम लोगों का उमर ही कितना हुआ होगा। मुश्किल से तेरह–चौदह साल। अभी से चोरी पाकेटमारी कर रहे तो आगे चलकर क्या डाकू बनने का इरादा है।दरोगा साहब के बातों का कुछ उत्तर दोनों बच्चे देते इससे पहले ही भीड़ में से एक व्यक्ति जिसका नाम शिवशंकर है, और जो पास ही सड़क किनारे चाय की दुकान लगाता है ने कहा– दरोगा साहब। मैं इन बच्चों को बचपन से ही जानता हूं। प्रायमरी स्कूल तक पढ़ने में ये दोनों बच्चे बहुत अच्छे थे। पर जैसे ही कक्षा छठवीं पढ़ना शुरू किये तभी से पता नहीं इन दोनों को क्या हुआ कि स्कूल जाना बंद कर दिये। शुरू–शुरू में तो दो–चार दिन में एकाक दिन चले भी जाते थे। पर पिछले दो साल से इन लोगों को मैं स्कूल जाते नहीं देखा हूं। इन लोगों की मां–बाप इन दोनों की निगरानी रखें या रोजी मजदूरी करके घर परिवार का पालन

पोषण करें। बेचारे समझा–समझाकर थक गये लेकिन ये दोनों समझने के बजाय उल्टा और गलत रास्ते पर चलने लगे।

साहब! अब तो मैं यहां तक सुन रहा हूं कि ये दोनों नशा भी करने लगे हैं और नशे तो साहब मुफ्त में मिलता नहीं है, उसके लिये पैसा चाहिये और पैसे के लिये अब चोरी करना शुरू कर दिये। राम जानें। आगे चलकर ये लोग और क्या क्या करेंगे?

शिवशंकर की बातों को सुनकर दरोगा साहब ने पूछा, अच्छा तुम लोगों में ऐसा कोई है क्या जो ऐसे ही अन्य बच्चों के बारे में मुझे बतला सकता हो? दरोगा साहब की बातों को सुनकर भीड़ में से एक अन्य व्यक्ति ने कहा साहब। ऐसे लड़के तो आपको हर मोहल्ले में दो चार मिल जायेंगे। यह अलग बात है कि उनमें से कुछ लोग अभी चोरी डकैती में नहीं उतरे हैं। पर क्या पता वे भी कब इस काम में जुट जाये।

उस व्यक्ति की बात को सुनने के बाद दरोगा रणवीर सिंह सुमीत और अजीत को अपनी गाड़ी में बैठाकर थाने की ओर रवाना हो गये। उनके रवाना होते ही भीड़ के रूप में एकत्रित सभी लोग अपने अपने ठिकाने की ओर जाने लगे। दिनेश भी वहां से उस स्थान की ओर वापस आने लगा, जहां उसकी मोटर सायकल और पत्नी पार्वती खड़ी थी। पास आने के बाद दिनेश, पार्वती को बैठने का ईशारा करके मोटरसायकल स्टार्ट किया और बैठने के बाद पार्वती बोली – क्यों जी? बड़ी देर से भीड़ की बातों को सुनते रहे।वहां क्या हुआ था? क्या कोई दुर्घटना घट गई थी और ओ पुलिस वाले दो बच्चों को बैठाकर कहां ले गये? पार्वती की प्रश्नों के बौछार से बिना विचलित हुये दिनेश ने कहा– अरे वहां पर भीड़ ने दो बच्चों को चोरी करते पकड़ लिया था और बस पुलिस आया और उन दोनों को थाने ले गया।

अपने पति की संक्षिप्त उत्तर से असंतुष्ट पार्वती ने पूछा? बच्चों को थाने भेजवा दिये। इन लोगों में कोई दया, ममता है कि नहीं। अरे बच्चे हैं गलती कर

दिये होंगे। अपनी पत्नी की बातों को सुनकर दिनेश ने आगे कहा नहीं पार्वती। ऐसी बात नहीं है। भीड़ में उपस्थित लोगों का कहना था कि वे दोनों बच्चे ऐसा करते कई बार पकड़े गये हैं। पहले तो उन्हें समझाया गया था। जब आदत नहीं सुधरी तब थक–हार कर पुलिस के हवाले किये हैं। अपने पति की बातों को सुनकर पार्वती बोली– शुभम के पापा। फिर भी मैं इस बात के पक्ष में नहीं हूं कि बच्चों को जेल भेज दिया जाये। अरे सोचों तो ऐसे बच्चे जेल जाने पर और बड़ा अपराधी बन सकते हैं। उनके गलत आदतों को छुड़ाने के बजाये, उन्हें जेल भेज देना इसे मैं उचित नहीं मानती।

अपनी पत्नी की बातों का जवाब देते हुये दिनेश ने कहा– पार्वती। तुम भोली हो। ऐसे बहुत से मामले हो गये हैं जहां इन्हीं उम्र के बच्चों के द्वारा बड़े बड़े और गंभीर अपराधों को किया गया है। ऐसे में जिन बच्चों में थोड़ी बहुत सुधरने की गुंजाईश रहती भी है उन्हें भी खतरनाक अपराधी की तरह समझ लिया जाता है। आखिर चेहरे में थोड़ी लिखा होता है कि वह बच्चा सुधर सकता है और यह बच्चा नहीं।

लेकिन केवल इस आधार पर की यह बच्चा भी बड़ा अपराधी बन सकता है सबके साथ एक समान व्यवहार किया जाये, यह भी तो ठीक नही है,शुभम के पापा – पार्वती बोली।

पार्वती की बात अभी खतम हुई ही थी कि दिनेश ने अपनी मोटर सायकल उस दुकान के सामने खड़ी करने के लिये रोक दी जहां से वे लोग अक्सर सामान खरीदते थे। दुकान के अंदर जाकर दोनों अपनी आवश्यकता की चीजें खरीदने लगे। पार्वती सामान देख भी रही थी और पसंद आने पर एक तरफ रखती भी जा रही थी, फिर भी रह रहकर न जाने क्यों उसे उनदोनों बच्चो की याद आ ही जाती थी। समान खरीदने के बाद दोनों अपने गांव के लिये रवाना हो गये।

****

दरोगा रणवीर सिंह दोनों बच्चों को लेकर थाना पहुंचा। गाड़ी से उतरने के बाद सुमीत और अजीत थाने के बरामदे में बिछे बेंच पर बैठ गये। थोड़ी देर बाद दरोगा साहब बाहर निकला और दोनों बच्चों से पूछा– क्यों तुम लोग कुछ खाओगे? इससे पहले कि बच्चे कुछ बोलते, उन्होंने पास खड़े एक आरक्षक से कहा कि बाहर जाकर कुछ खाने–पीने की चीजें ले आओ। आरक्षक के जाने के बाद दरोगा साहब अपने केबिन के अंदर चला आता है। कुछ देर बाद आरक्षक सुमीत और अजीत के के लिए खाने का सामान लाकर सामने रखते हुये कहता है कि जल्दी से खा पी लो। लगभग 15–20 मिनट बाद दरोगा साहब बाहर निकलता है तो देखता है कि बच्चे जो कुछ उनके लिये लाये थे वह सब खा लिये थे। इशारे से उन दोनों को अपने केबिन में आने को कहते हुये केबिन के अंदर प्रवेश करता है। दरोगा साहब जब तक अपने कुर्सी पर बैठता, उससे पहले ही दोनों बच्चे कमरे के अंदर पहुंचकर टेबल के सामने खड़े हो गये थे। दरोगा साहब बच्चों को देखते हुये बैठने का इशरा कर पूछता है तुम लोगों के घर में और कौन कौन है?

सुमीत– जी साहब। मां बाप और एक छोटी बहन।

अजीत– और मेरे घर में साहब मेरी मां और एक बड़ा भाई।

दरोगा– और करते क्या हैं?

सुमीत– जी साहब। मेरे मां बाप रोजी मजदूरी करते हैं और छोटी बहन कक्षा छठवीं में पढ़ती है।

अजीत– मेरी मां कपड़े सिलने की मशीन चलाती है और बड़ा भाई कक्षा ग्यारहवीं में पढ़ता है।

दरोगा– और फिर तुम लोग पढ़ने को छोड़कर गलत काम क्यों करने लगे?

अजीत– ओ साहब। मुझे सब कोई चिढ़ाते थे कि देखो इसके मां बाप दिन भर मजदूरी करते हैं और ये बड़ा पढ़ने आया है। तुम भी जाओ मजदूरी करो। पढ़ लिखकर क्या साहेब बनोगे।

दरोगा – तो इसके बारे में अपने शिक्षको को बतलाए थे?

अजीत– हां सर! बतलाये थे। शिक्षकों ने उन लड़कों को मना भी किया था पर सुधरने के बजाये उनका व्यवहार हमारे प्रति और गलत होता गया और हमने स्कूल जानाबंद कर दिया।

दरोगा– अच्छा बहाना बना लेते हो। यह सब कुछ कहां से सीखा।

सुमीत– बहाना नहीं है साहब सही बात है।

दरोगा– बहाना नहीं है तो फिर तुम्हारी बहन और इसके भाई उसी स्कूल में अब तक कैसे पढ़ रहे हैं। क्या उन्हें वहां के बच्चे नहीं चिढ़ाते होंगे?

अजीत– साहब अब वे वहां नहीं पढ़ते। दूसरे स्कूल चले गये हैं।

दरोगा– तो इसका मतलब है कि तुम दोनों ने स्कूल उन बच्चों के कारण छोडी थी, पढ़ाई से डरकर नहीं। और अगर तुम दोनों को मौका दिया जाये तो फिर से पढ़ाई शुरू कर सकते हो।

दरोगा साहब की यह बात सुनकर दोनों को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था और कभी नीचे तो कभी ऊपर देखने लगे। दरोगा साहब उनके हाव भाव को समझकर बात बदलते हुये कहा– जानते हो मैं तुम दोनों को वहां से यहां क्यों लेकर आया? दोनों बच्चे प्रश्न भरे नजरों से दरोगा साहब की ओर देखने लगे।

उन्हें चुप देखकर दरोगा साहब आगे बोला– अगर मैं वहां पर तुम दोनों पर सख्ती दिखाते हुये यहां नहीं लाता तो जानते हो वहां भीड़ में उपस्थित लोग तुम दोनों को इतना कूटते की कभी चोरी या पाकेट मारने के पहले सौ बार सोचते। देखों बच्चों अभी तुम लोग नाबालिग हो। इस कारण सरकार और कानून भी तुम्हारे उम्र के बच्चों के द्वारा किये जाने वाले बड़ी सी बड़ी गलतियों पर भी सहानुभूति दिखाती है। पर इसमें सुधार नहीं करोगे तो एक दिन वह समय भी आयेगा जब यह नाबालिग का रक्षा कवच साथ नहीं देगा और फिर उस दिन पछताने के सिवाय

और कोई रास्ता नहीं बचेगा। बोलो आगे से ऐसी गलती और करोगे।सुमीत– नहीं साहब। अब हम ऐसा नहीं करेंगे।

दरोगा– तो आगे तुम दोनों क्या करना चाहते हो? कुछ सोचे हो?

दोनों बच्चों को अपने इस प्रश्न का उत्तर देते नहीं देख कर दरोगा साहब बोले– देखो अभी तुम लोगों की उमर पढ़ने लिखने की है। अभी से जब तुम लोग गलत काम में लग जाओगे तो जीवन कष्टमय हो जायेगा। तुम चाहो तो मैं पढ़ने लिखने में तुम्हारी मदद कर सकता हूं। अगर सुधरना चाहोगे तब सभी लोग तुम्हारी मदद करेंगे और अगर गलत रास्ते पर ही चलते रहोगे, तब हर जगह अपमान और ठोकर के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा। अब फैसला तुम लोगों के हाथ में है।

अजीत– साहब। हम पढ़ना तो चाहते हैं पर उसके साथ साथ अगर कुछ काम भी मिल जाये तो अच्छा होता। घर वालों को इससे मदद मिल जाती।

दरोगा– देखों अभी तुम लोग नाबालिग हो और तुम्हारे उमर के बच्चों को किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा काम पर नहीं रखा जा सकता क्योंकि यह गैरकानूनी होता है। अगर हॉ तुम लोगों में कुछ हुनर हो तो उसका उपयोग कुछ पैसा कमाने में कर सकते हो।

सुमीत– कैसा हुनर साहब।

दरोगा– यही जैसे सायकल या मोटर सायकल बनाना, चटाई, टोकरी, सिलाई, कढ़ाई, मिट्टी के कुछ खिलौने, बर्तन या फिर और कोई ऐसी चीज जिसकी चलन तुम्हारे आस पास हो।

अजीत– साहब! आप जो जो बतलायें है उनमें से हमे तो कुछ नहीं आता।

दरोगा– अरे नहीं आता तो क्या हुआ। यह बतलाओं इनमें से कोई काम ऐसा है जिसे तुम करना चाहोगे। हॉ उसके लिये तुम लोगों को सबसे पहले यह काम सीखना पड़ेगा।

सुमीत– साहब! यह काम हमे कौन सिखायेगा और सिखाने वाले को पैसा कौन देगा?दरोगा– तुम इसकी चिन्ता मत करो। इनमें से जो काम तुम्हें पसंद आता हो उसका नाम बतलाओ।

अजीत– और साहब यह काम हम कहां पर सीखेंगे?

दरोगा– अच्छा तुम दोनों यह बतलाओ कि क्या तुम्हारे मोहल्ले या कोई दूसरे मोहल्ले में तुम्हारे जैसे कोई और लड़का या लड़की है जो स्कूल नहीं जाते है। अगर मुझे आठ दस ऐसे बच्चे मिल जायेंगे तब मैं तुम लोगों के घर के आस पास ही इन कामों को सीखने की व्यवस्था कर सकता हूं।

सुमीत– साहब! हमारे मोहल्ले में ही तीन ऐसी लड़कियां है जो छठवीं, सातवीं पढ़ने के बाद स्कूल नहीं जा रही है और दिन भर घर के बाहर ही खेलते रहते हैं। बाकी और दूसरे मोहल्ले में देखना पड़ेगा।

दरोगा– ठीक है तुम लोग मुझे तीन दिन के अंदर ऐसे बच्चों का नाम और पता बतलाना। मैं खुद एक बार ऐसे बच्चे व उनके माता पिता से मिलकर बात करूंगा।

सुमीत– ठीक है साहब। और हां साहब। जब हम इन कामों को करना सीखेंगे तब स्कूल पढ़ने कितने समय जायेंगे?

दरोगा– देखो! तुम लोगों की स्कूल दिन में दस से चार बजे तक लगती है। उस बीच तुम लोग स्कूल जाकर पढ़ाई करना और फिर स्कूल से आने के बाद शाम 6 से 8 बजे तक या फिर सुबह 7 से 9 बजे तक अपना काम सीखना।

अजीत– ठीक है दरोगा साहब। हम दोनों मिलकर कोशिश करते हैं।

दरोगा रणवीर सिंह दोनों बच्चों को एक बार फिर चेतावनी देते हुये कहता है कि मैं तुम दोनों को सुधरने का आखिरी अवसर दे रहा हूं और अब यह तुम लोगो के ऊपर है कि इसका उपयोग अपने हित में कर रहे हो की नहीं।

दोनों बच्चे दरोगा रणवीर सिंह के चरण स्पर्श करते हुये उन्हें आश्वस्त करते हैं कि वे उनकी भरोसा को टूटने नहीं देंगे। बच्चे वहां से निकल कर अपने घरों की ओर रवाना होते हैं। दरोगा रणवीर सिंह बच्चों के जाने के बाद अपने आरक्षक को बुलाकर कहता है कि वे पंचायत एवं समाज कल्याण विभाग का कार्यालय जाकर पता करें कि सरकार द्वारा ऐसे बच्चों के लिये कौन कौन से कल्याणकारी योजनायें चलाई जा रही है। आरक्षक वहां जाने के लिये बाहर निकलता है और दरोगा रणवीर सिंह अपने केबन में बैठकर अन्य आवश्यक फाइलें निपटाने में व्यस्त हो जाता है।

****

अजीत और सुमीत को थाने से घर पहुंचने में देर हो गई थीं। उन दोनों के माता पिता अपने अपने घरों में चिंता करते हुये उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी घर के दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। सुमीत के पिताजी गौकरण यह सोचकर की शायद सुमीत आ गया हो, जल्दी से दरवाजा खोलता है लेकिन दरवाजे पर बाजार के पास फल की दुकान लगाने वाला मनहरण को देखकर चौंकते हुये पूछा– अरे मनहरण भाई तुम। घर के अंदर दाखिल होते हुये मनहरण ने पूछा– गौकरण यह तो बतलाओं की सुमतीत कहां है?

मनहरण के प्रश्न को सुनकर किसी अनहोनी की आशंका से डरते हुये गौकरण ने पूछा– क्यों मनहरण भाई तुम्हें पता है क्या कि सुमीत कहां है?

गौकरण की बात सुनकर मनहरण ने कहा – मैं यह तो नहीं जानता कि यह बात कितना सच है या कितना झूठ क्योंकि मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा तो है नहीं पर जैसा बाजार के पास अन्य दुकान वाले बतला रहे थे उन्हीं के अनुसार मैं भी बतला रहा हूं।

अरे तो जल्दी बतलाओ न गौकरण। इसमें इतना ईधर उधर करने की क्या जरूरत है। मेरे सुमीत को कहीं कुछ हो तो नहीं गया है। मैं भी कब से उसी की प्रतीक्षा कर रहा हूं। इस बीच उसे न जाने कहां कहां नहीं ढूंढा। अजीत के घर भी गया था, तो वहां पता चला की वह भी उसी के साथ और उसी समय से घर से बाहर है, गौकरण ने जल्दी जल्दी सब बात बतलाते हुये मनकरण से पूछा। गौकरण की चिंता और व्याकुलता को देखते हुये मनहरण ने कहा– गौकरण भाई लोग बोल रहे थे कि आपका लड़का सुमीत और रंजीत का लड़का अजीत दोनो मिलकर शहर के चौक में किसी व्यक्ति का पाकेटमार रहे थे और क्या उसव्यक्ति ने रंगे हाथ दोनों को पकड़ लिया। इतने में वहां लोगों की भीड़ लग गई। कुछ लोग एक एक दो दो तमाचा भी लगाये। पर इसी बीच किसी व्यक्ति ने थाना फोन करके सूचना दे दी। पुलिस वाले आये और दोनों को पकड़कर ले गये।

मनहरण की बात सुनकर गौकरण लगभग रोते रोते बोला। मैं क्या करूं मनहरण भाई। आखिर जिसका डर था, वही हुआ। मैं कबसे उसे समझा रहा था कि बेटा हम लोग बहुत गरीब आदमी है। कमाते हैं तो खाने को मिल जाता है। जिस दिन काम पर न जाओ तो खाना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में तुम पढ़ाई लिखाई छोड़कर गलत काम करोगे, तो लोग बच्चे समझकर कितने बार छोड़ेंगे और कभी पुलिस वाला पकड़कर ले गया तो फिर कोर्ट कचहरी का खर्चा कौन उठायेगा। ऐसे में तो एक बार अंदर हुये तो बाहर ही नहीं निकल पाओगे बेटा। पर उसने मेरी एक नहीं सुनी और अब वह तो भुगतेगा तो भुगतेगा ही हम भी उसके साथ भोगेंगे। एक बार तो मन करता है कि उसे उसकी करनी की सजा मिले पर क्या करूं बाप का दिल है। बार बार कहता है कि अब सुधर जायेगा, तब सुधर जायेगा। लगता है मेरे भाग्य में न अब है और न तब।

गौकरण को ढांढस बांधते हुये मनहरण ने कहा– गौकरण भाई। हिम्मत रखो। अब जो हो गया उसे तो होने से कोई रोक नहीं सकता पर आगे भी ऐसा दोबारा न हो, इसके लिये हमें जरूर प्रयास करना होगा और करेंगे भी।

गौकरण और मनहरण की सारी बातों को सुमीत की मां सुमित्रा भी वहीं पास के दरवाजे के पास बैठी बैठी सुन रही थी। सुमीत को पुलिस पकड़कर ले गई है, इस बात को जानकर उसकी धड़कने बढ़ गई थी और बैठे–बैठे मन में सोच रही थी कि पता नहीं पुलिस वाले उसके बच्चे को कितना मारेंगे। रात में कहां सुलायेंगे, सुलायेंगे भी की नहीं और खाने पीने को क्या देंगे? तभी उसे भी मनहरण की बातों से कुछ हिम्मत मिली और अपने पति से बोली– सुमीत के पिताजी मनहरण भईया सही कह रहे हैं। अब जो हो गया उस पर गुस्सा करने से तो कुछ मिलने वाला है नहीं। आगे सुमीत फिर से ऐसी गलती न करें, इसके लिये हमे सुमीत को समझाना होगा और समझाने के लिये उसे थाने से छुड़ाना होगा।

थाने से छुड़ाना होगा। बोल तो ऐसे रही है जैसे वह थानेदार मेरा कोई रिश्तेदार होगा और मैं कहूंगा और वह सुमीत को छोड़ देगा। तुम इन पुलिस वालों को नहीं जानते। थोड़ा भी दया नहीं दिखाते और तुम बोल रही हो कि आयेगा तो

समझायेंगे। कितने बार समझायेंगे सुमीत की मां कितने बार। हर बार तो उसका यही जवाब होता है न कि आगे से वह ऐसा नहीं करेगा– गौकरण सुमित्रा से चिढ़ते हुये कहा।

अपने पति की बातों को सुनकर सुमित्रा रोते हुये बोली– आखिर मां–बाप है हम। मॉ–बाप अपने बच्चों के लिये नहीं करेंगे तो कौन करेगा? क्या उसे ऐसे ही थाने में रहने दें। एक तो बाहर के लोग उसे वैसे भी गलत समझते हैं और अब हम भी उसे बुरा समझकर छोड़ देंगे तब तो वह बेसहारा हो जायेगा और फिर न जाने क्या क्या गलती करेगा।

मैं सब जानता समझता हूं, सुमीत की मां। हम गरीबों के पास न तो बच्चों से प्रेम करने का समय रहता है और न ही गुस्सा दिखाने का। फिर भी हम लोग अपने सुमीत का कितना ध्यान रखते रहे हैं। पर पता नहीं उसके मन को क्या हो गया कि उसे हमारी बात समझ नहीं आई और यह दिन देखना पड़ा– गौकरण ने कहा।

सुमीत्रा बोली– इससे पहले की और देर हो जाये आप और मनहरण भईया दोनों थाने जाईये। अरे पुलिस वाले रात में बच्चों को छोड़े की नहीं छोड़े, कम से कम हाल चाल तो पता चल जायेगा और फिर बच्चों को भी लगेगा कि उसके घर से कोई आये हैं और हां जाते समय रास्ते में अजीत के पिताजी रंजीत भाई को भी साथ ले जाना। पता नहीं वह जान भी रहा है कि नहीं।

सुमित्रा की बात को सुनकर मनहरण बोला– हां बहन। तुम चिंता मन करो। पहले तो हम कोशिश करेंगे कि बच्चों को थाना से छुड़ाकर घर ले आयें। भले ही इसके लिये हमें पुलिस वालों की हांथ पांव ही क्यों न जोड़ना पड़े। गौकरण बोला– मनहरण और तुम्हे क्या लगता है कि पुलिस वालों की हांथ पांव जोड़ने से वे बच्चों को छोड़ देंगे? मुझको तो नहीं लगता कि पुलिस वाले हम पर थोड़ा भी रहम दिखायेंगे?

गौकरण को हिम्मत देते हुये मनहरण ने कहा– गौकरण भाई। आप पहले से ही ऐसा क्यों सोच रहे हैं। चलो वहां जाकर देखेंगे। अगर नहीं छोड़े तो अगले दिन जो आवश्यक कानूनी प्रक्रिया होगी उसको पूरा करते हुये छुड़ा कर लायेंगे। ऐसा बोलते हुये मनहरण और गौकरण थाना जाने के लिये घर से निकल ही रहे थे कि उन दोनों को अजीत की घर के तरफ से सुमीत आता हुआ दिखाई दिया। दोनों उसको आता देखकर घर के बाहर ही रूक गये और जैसे ही सुमीत अपने घर के अंदर प्रवेश करने ही वाला था गौकरण ने उसका हाथ पकड़कर जोर से आवाज में पूछा– क्यों रे। तुम पूरा दिन भर कहां था। और यह कोई घर आने का समय है। तुम्हें कितने बार समझा चुके हैं कि दिन भर बाहर मत घूमा–फिरा कर फिर भी मानते ही नहीं। अपने पिता के इस नये तेवर को देखकर सुमीत एक पल तो जोरदार डर गया क्योंकि इसके पहले उसने अपने पिताजी को कभी इतने गुस्से में नहीं देखा था। गौकरण के हाव भाव को देखकर सुमीत अंदर ही अंदर यह समझ गया था कि उन्हें उसके थाना जाने के बारे में पहले ही पता चल चुका है और अब झूठ बोलना किसी भी स्थिति में सही नहीं होगा। परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये सुमित ने सच बोलते हुये कहा– पिताजी। आज ओ पुलिस वाले पकड़कर थाना ले गया था इस कारण देर हो गई।

सुमित और अपने पति की आवाज को सुनकर घर के अंदर बैठी सुमित्रा यह सोचकर बाहर निकली की कहीं गुस्से में सुमीत के पिताजी सुमीत को घर के बाहर ही मारना पीटना शुरू न कर दे। और अगर ऐसा हो गया तो खामोखाह पूरे मोहल्ले वाले घर के पास इकट्ठे हो जायेंगे और फिर तरह तरह की बात करेंगे। मन में यह सब सोचते बाहर आते ही सुमित्रा बोली अरे सुमीत के पिताजी। पहले उसे घर के अंदर तो आने दो। फिर बैठकर आराम से पूछ लेना। घर के अंदर आने दूं। बैठाकर आराम से पुछुंगा। काहे तुम्हारा यह बेटा कोई मेडल जीतकर तो आ रहा है न – गौकरण गुस्से में बोला। गौकरण की गुस्से को शांत कराते हुये मनहरण ने कहा– गौकरण भाई सुमित्रा बहन ठीक कह रही है। चलो घर के अंदर इससे पूछते हैं कि क्या हुआ?

चारो घर के अंदर दाखिल होते हैं और दाखिल होते ही इससे पहले की गौकरण का हाथ सुमित पर उठता सुमित्रा सुमीत के हाथ को खींचते हुये अपनी ओर करते हुये बोली– सुमीत बेटा। तुम्हारे पिताजी ठीक ही तो कह रहे हैं। तुम ऐसा काम ही क्यों करते हो जिससे हमें सभी लोगों से ताने सुनने को मिले?

अपनी मां की ओर देखते हुये सुमीत बोला– मां। इस बार मैं सच में कह रहा हूं कि आगे अब कभी ऐसा काम नहीं करूंगा।

सुमीत की बातों पर अविश्वास जताते हुये गौकरण ने कहा– तुम ऐसा कई बार कह चुके हो और फिर तुम्हे पढ़ना लिखना तो है नहीं। ऐसे में दिन भर खाली रहकर ऐसे ही बुरा काम तो करोग न?

इससे पहले कि सुमीत आगे कुछ बोलता मनहरण ने पूछा अच्छा सुमीत बेटा यह तो बतलाओं कि तुम्हे थाने से छुड़ाया किसने। क्या हमारे वहां पहुंचने के पहले अजीत के पिताजी रंजीत भाई थाने पहुचकर तुम दोनों को छुड़वा लिये।

नहीं चाचाजी। ओ तो हमें वहां के दरोगा साहब ने ऐसे ही छोड़ दिया– सुमीत ने कहा।

ऐसे ही छोड़ दिया। ऐसे कैसे छोड़ दिया। जरूर तुम लोग थाने वालों को धोखा देकर भागकर आये होगे– गौकरण ने कहा।

नहीं पिताजी। मैं सच कह रहा हूं। वहां के दरोगा साहब बहुत अच्छे हैं। उन्होंने हमें मारना पीटना तो दूर, एक शब्द गाली भी नहीं दिया और समझा बुझाकर छोड़ दिया। सुमीत ने सारी बातें विस्तार से बतलाते हुये कहा।

सुमीत की बातों को सुनकर गौकरण, मनहरण और सुमीत्रा तीनों मन ही मन दरोगा साहब को दुआएं देते हुये सोचने लगे की आज भी अच्छे इंसानों की कमी इस संसार में नहीं है।

****

निक्कू और शुभम दोनों तालाब के किनारे आम के पेड़ के नीचे काफी देर से बैठे तालाब के पानी को एक टक देख रहे थे, लेकिन एक दूसरे से बाते नहीं कर रहे थे। निक्कू को शुभम का यह रवैया अचरज में डाल रहा था। उसने शुभम को इससे पहले कभी इतना गंभीर नहीं देखा था, जितना वह आज दिख रहा था। पहले तो निक्कू ने सोंचा की घर में जरूर चाचाजी या चाचाजी के द्वारा किसी बात पर डांट पड़ा होगा, इस कारण उदास है। फिर सोंचा कि नहीं अगर ऐसी बात होती तो शुभम उससे पहले ही बतला देता। कुछ देर निक्कू अपने मन में ऐसे ही अनुमान लगाता रहा, लेकिन जब रहा नहीं गया तब उसने शुभम से पूछा क्यों शुभम। क्या बात है? आज काफी चिंता में लग रहे हो। कहीं चाचाजी और चाचीजी ने कुछ कह दिया है क्या?

नहीं यार। ऐसी कोई बात नहीं हैं। अम्मा पापा मुझे डांटे तो नहीं है लेकिन मैं देख रहा हूं कि अम्मा जब से शहर से आई है तब से बहुत उदास रह रही है, शुभम ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुये कहा। उदास लग रही है, तो तुम पुछ के देखे क्यों नहीं? निक्कू ने कहा। पूछा यार। पर अम्म कुछ बतला नहीं रही है– शुभम बोला। अरे तो ठीक है न अपने पापा से पूछ लेते– निक्कू बोला।

नहीं यार। पापा से पूछने में डर लगता है। कभी कभी तो मेरे मन में यह ख्याल आता है कि कहीं कोई हमारे गांव के ही लोग अम्मा को मुझे लेकर कुछ उल्टा पुल्टा थोड़ी बोल दिये है। शुभम ने आगे बतलाया। नहीं शुभम। चाची ऐसी नहीं है कि दूसरों की बात को मन से ले ले। हां अगर तुम्हारी अम्मा की जगह मेरी अम्मा होती तब मैं मान भी लेता। जरूर कोई दूसरी बात होगी। पर तुम ही सोचों न हम कहां कोई उल्टा पुल्टा काम करते हैं, जिससे हमारे घरवालों को अपमान सहना पड़ता हो– निक्कू ने कहा।

ठीक है निक्कू। तुम्हारी यह बात सही है कि हम स्कूल नहीं जाने वाल दूसरे बच्चों के समान बदमाशियां नहीं करते पर स्कूल नहीं जाना भी तो एक प्रकार से हमारी सबसे बड़ा अवगुण है न। जरा सोचो आजकल के जमाने में जब सभी बच्चे अच्छे ढंग से पढ़ते–लिखते हैं, वहीं हम लोग दिनभर गांव की गलियों में घूमते

रहते हैं या फिर सोये रहते हैं। ऐसे में माता–पिता को कुछ तो दुख होता होगा न। हालांकि मेरी अम्मा इन बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देती और बोलने वालों को जवाब भी दे देती है कि क्या करूं जब पढ़ने वाले का ही मन नहीं है तो जबरदस्ती थोड़ी करें। पहले तो मुझे अम्मा की इन बातों में छुपी हुई दर्द और दुख नजर नहीं आता था पर अब सोचता हूं कि कहीं मेरी अम्मा की उदासी का कारण मेरी पढ़ाई–लिखाई ही तो नहीं है – शुभम ने बतलाया।

यार शुभम। तुम ठीक कह रहे हो। मेरी अम्मा तो मन में जो भी रहता है उसे सीधे सीधे कहकर अपना गम हल्का कर लेती है लेकिन तुम्हारी अम्मा वैसी नहीं है। सभी लोगों के ताने सुनकर भी तुम से कभी कुछ नहीं बोली। और एक हम दोनों है, जो कभी इस बारे में नहीं सोंचे की हमारा इस तरह स्कूल न जाकर दिन भर घूमना उनको कितना अखरता होगा – निक्कू ने कहा।

हॉ निक्कू। मैं अपनी अम्मा को जब से उदास देखा हूं तब से एक ही बात सोंच रहा हूं कि ऐसा क्या किया जाये या ऐसा क्या हो जाये कि पढ़ने लिखने में मन लगने लगे। याद है न निक्कू पांचवी तक हम लोग कैसे अच्छे से पढ़ते थे और जैसे ही छठवीं पढ़ना शुरू किये तब से सब गुड़ गोबर होना शुरू हो गया। गणित और भूगोल तो मेरे पल्ले पड़ना ही बंद हो गया। सरजी और मैडम से कभी कहता भी की मुझे अमुक बिन्दु समझ में नही आया, एक बार और समझा दीजिये तो उनका बस एक ही जवाब होता कि दूसरे बच्चे कैसे समझ गये और तुम्हें क्यों समझ में नहीं आया। इसका मतलब है तुम्हारा ध्यान पढ़ने लिखने में नहीं रहता कही और रहता है और बीच बीच में ऐसी प्रश्न करके पूरी कक्षा में व्यवधान उत्पन्न करते हो। सरजी और मैडम जी की बातों को सुनकर कक्षा के सभी बच्चे मुझ पर हंसते और बाहर निकलकर व्यंग्य करते और कहते प्रश्न पूछकर हीरो बनोगे? बन गये न हीरो के बदले जीरो। यार निक्कू मै न इन्हीं बातों से तंग आकर स्कूल जाना ही बंद कर दिया। शुभम ने अपनी पुरानी बातों को याद करते हुये निक्कू से कहा।

तुम ठीक कह रहे हो शुभम्। मै तो यह चीज आज तक नहीं समझ पाया की पढने वाले हम तो हमें अपने मन के अनुसार विषय पढ़ने देना चाहिये न! पर ऐसा होता नहीं है। गणित भी हम पढे, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, संस्कृत सब कुछ हम पढ़े। पर पढ़ाने वालों को यह भी तो बतलाना चाहिये की यह सब हम क्यों पढ़ें? चाहे तुम्हारी पसंद हो या न हो। माना की इन विषयों का हमारे जीवन में महत्व हो सकता है? और महत्व होगा भी। मैं इन विषयों के पढ़ाये जाने वाले पक्षकारों का विरोध नहीं कर रहा हूं। पर आखिर पढाई लिखाई भी तो जीवन को अच्छे बनाने के लिये हैं। न कि जीवन को लगाकर पढ़ाई लिखाई को अच्छा बनाना है। ऐसे में तो जीवन का आनंद ही खतम हो जायेगा – निक्कू ने अपनी बात रखते हुये कहा।

शुभम बोला– तो निक्कू इस बारे में तुम क्या सोचते और समझते हो।

निक्कू ने कहा– यही यार। कि हमारे जैसे हर बच्चे को अपने पसंद का विषय पढ़ने का अधिकार होना चाहिये। ठीक है जो बच्चा सभी विषयों को पढ़ना चाहता है या उसे लगता है कि उसे सभी विषयों को पढ़ने में, समझने में कोई दिक्कत नहीं है तो वह आनंद से पढ़े। इसमे किसी को आपत्ति नहीं होगी। पर बहुत से बच्चे ऐसे भी होते हैं? जिन्हें कोई कोई विषय लाख उपाय करने पर भी समझ में नहीं आती, तो ऐसे बच्चों को उन विषयों को छोड़ते हुये आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिये। हां इसकी पूर्ति के रूप में यह किया जा सकता है कि उन्हें उनकी रूचि का कोई काम भी सिखाया जाये ताकि समय आने पर किसी दफ्तर या कारखाने में काम न मिलने की स्थिति में उसके पास रोजगार की कमी न हो और हमारे जैसे बच्चों को बीच में ही स्कूल न छोड़ना पड़े।

निक्कू की बातों को सुनने के बाद शुभम के चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट आई और वह मुस्कुराते हुये ही पूछा– यार निक्कू तेरी और मेरी बात कितनी मिल जुल रही है न। अपने दोस्त शुभम के चेहरे पर काफी समय बाद मुस्कुराहट देखकर निक्कू भी मुस्कराकर बोला– हां यार। तभी तो हम दोस्त हैं न।

आगे बात बढ़ाते हुये शुभम ने पूछा– यार। अब आगे हमें क्या करना चाहिये। इस बारे में कुछ जल्दी से सोचकर बतला। तुम तो जानते हो कि मैं बहुत जल्दी किसी बात पर नहीं सोंच सकता।

निक्कू ने कहा – आगे हमें क्या करना चाहिये या हम क्या करेंगे, इस बात पर तो मैं अभी पूर्ण रूप से निश्चित नहीं हूं। पर हां इस बात पर मैं अपना मन निश्चित बना चुका हूं कि किसी भी परिस्थिति में हमे अपने माता पिता को दुख तकलीफ नहीं पहुंचाना है। तुमको याद है शुभम! अभी–अभी एक दिन तुम्हारे पापा हमारे घर आये थे। पहले तो मैं सोचकर डर गया था कि हो सकता है चाचाजी मेरी कुछ शिकायत लेकर आया हो पर जानते हो शिकायत का नाम ही नहीं था। मेरे पापा और तुम्हारे पापा न केवल हम दोनों के अच्छे भविष्य के बारे में बल्कि हमारे जैसे अन्य बच्चों के भविष्य के बारे में ही चर्चा करते रहे। उस दिन पहली बार मेरे मन को अंदर से पीड़ा हुई थी और मन ग्लानि से भर गया था। पर उस समय मुझे यह बिल्कुल नहीं सूझा था कि क्या करना चाहिये। आज जब तुम चाचीजी के उदासी के बारे में बतलाया तो मेरा मन द्रवित हो उठा और अंदर की जितनी पीड़ा या ग्लानि के भाव थे, सब तुम्हारे सामने खोलकर रख दिया। हां निक्कू। यह बात तो तुमने बिल्कुल ठीक कही। आज तक मैंने भी किसी की बातों पर ध्यान नहीं दिया था। बस स्कूल जाने को कोई विवश नहीं करता था। इसी बात से प्रसन्न रहता था। पर अम्मा की उदासी ने मेरे भी आंख और मन के द्वार खोल दिये। इन सभी बातों से एक चीज तो स्पष्ट रूप से समझ में आ गया कि क्यों मां बाप का दर्जा अव्वल होता है। काश! यह बात आज से दो साल पहले समझ में आ जाती तब यह परिस्थिति ही उत्पन्न नहीं होती – शुभम ने कहा।

हां यार शुभम्! पर अब जो हो गया सो हो गया। गुजरा समय तो आ नहीं सकता पर आने वाले समय को हम अच्छा बनाने की कोशिश जरूर कर सकते हैं और करेंगे भी। अच्छा अब जल्दी घर चलते हैं और तुम्हारी अम्मा से उनके दुखी होने का कारण पूछते हैं– निक्कू ने कहा?

निक्कू की बातों से शुभम के शरीर में अप्रत्याशित ऊर्जा का संचार हुआ था। वह आवाज पाते ही तत्काल उठ खड़ा हुआ और निक्कू से बोला– निक्कू। तो फिर देर किस बात की। चलो एक दौड़ लगाते हैं और पांच मिनट के भीतर अम्मा के सामने। ठीक है। ठीक है शुभम। अब इतना भी अधीर मत हो जा। जायेंगे तो तुम्हारे घर ही न। कहीं ऐसा न हो कि हड़बड़ी और प्रसन्नता में किसी दूसरे के घर घुस जायें– निक्कू हंसते हुये बोला।

शुभम ने कहा – तू नहीं जानता निक्कू। आज इस आम के पेड़ के नीचे से मैं क्या लेकर जा रहा हूं। वैसे भी यह आम का पेड़ हम दोनों के सुख और दुख का साक्षी रहा है। पर आज तो इसने मुझे एक नया ही जीवन दिया है।

हॉ शुभम्। बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही मेरा भी यही मानना है– निक्कू ने कहा।

अपनी बात पूरी करते करते शुभम तालाब से घर के लिये दौड़ना शुरू करता है। उसे देखकर निक्कू भी दौड़ने लगता है और दोनों को ही यह आभास होता है कि सारा संसार उनके पीछे–पीछे दौड़ा चला आ रहा है।।

****

आज मंत्रालय में सुबह से ही गहमा गहमी है। शिक्षा विभाग के सभी बड़े अधिकारियों के आने का क्रम चल रहा है और वो भी क्यों न शिक्षा मंत्री महोदय बैठक जो लेने वाले हैं। निश्चित समय तक लगभग सभी अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित होकर बैठक की अपनी तैयारियों में लग गये थे। कोई भी अधिकारी मंत्री महोदय से कुछ भी अप्रिय सुनने के मन में नहीं थे। इस कारण अपनी अपनी जानकारियों को समय पाकर पुख्ता कर रहे थे। निर्धारित समय पर मंत्री जी के पहुंचने के बाद बैठक विधिवत आरंभ हुई और बैठक के आरंभ में ही मंत्री महोदय ने आज के विशेष बैठक के संबंध में बोलना शुरू किया – मंत्रालय के पत्र के द्वारा आप सभी को सूचित किया गया था। उसमें उल्लेखित विषय के अनुसार समय पूर्व शाला छोड़ने वाले बच्चों की संख्या हमारे प्रदेश में निरंतर बढ़ती जा रही है। आज हम इसी विषय के कारण व परिणाम पर आप सभी के साथ विस्तार से चर्चा करेंगे। जहां तक मेरा अनुभव है कि हमारे शिक्षक अपने शाला परिक्षेत्र के सभी बच्चों को अपने शाला में प्रवेश तो दिला देते हैं पर उनमें से कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो शाला ही नहीं आते और ऐसे बच्चे ही कक्षा आठवीं के बाद अगली कक्षाओं में प्रवेश नहीं लेते। उम्र को अगर हम छोड़ दें तो आखिर यह बच्चे शाला त्यागी ही तो है। अभी आप लोग क्रम से इस स्थिति के कारण बतलाते जायेंगे और फिर उसको दूर करने के उपायों पर भी चर्चा करेंगे।

मंत्री महोदय के बोलने के बाद सभी अधिकारियों ने इसके कारणों पर अपने क्रमानुसार विचार रखे। किसी ने कहा कि कुछ बच्चों को उनके माता पिता ही पढ़ाना नहीं चाहते और ऐसे बच्चों को वे अपने साथ काम पर ले जाते हैं। किसी ने कहा कि कुछ बच्चे ऐसे होते हैं, जिन्हें पालक तो पढ़ाना चाहते हैं पर बच्चे ही पढ़ना लिखना नहीं चाहते। ऐसे बच्चों को स्कूल की अपेक्षा बाहर घरों में गलियों में या तालाबों में खेलना अच्छा लगता है। एक अधिकारी ने कहा कि कुछ बच्चे स्कूलों में दिये जाने वाले गृह कार्य को कर नहीं पाते और जब यह निरंतरता का रूप धारण कर लेती है तब वे डर, शर्म या अपमानित होने से बचने के लिये धीरे धीरे पहले तो बीच बीच में और फिर पूरे ही स्कूल आना बंद कर देते हैं। एक

अधिकारी ने कहा कि कुछ बच्चे जिनमें लड़कियों की संख्या ज्यादा होती है वे अपने मां बाप के रूढ़ीवादी सोंच व विचारों के कारण चाहते हुये भी आगे नहीं पढ़ पाते। मेरा तात्पर्य है कि ऐसे बच्चों के माता पिता की सोच होती है कि आखिर है तो लड़की न। पढ़ लिख भी जायेगी तो आखिर करेगी घर गृहस्थी का ही काम और इसी सोच का एक दूसरा पहलू यह भी है कि ऐसे माता पिता यह भी सोंचते हैं कि घर की लड़की ज्यादा पढ़ लिख जायेगी तो उनके लिये वैसे ही पढ़ा लिखा लड़का भी शादी के लिये चाहिये होगा और उनके ख्याल में ऐसा लड़का खोजना या पाना उनके हैसियत और पहुंच के बाहर की चीज हो जाती है और वे अपने लड़कियों को धीरे–धीरे स्कूल भेजना बंद कर देते हैं। इन्हीं अधिकारी महोदय की बातों में अपनी बात जोड़ते हुये एक अन्य अधिकारी ने कहा कि इसके साथ साथ लड़कियों के माता पिता अपने बच्चियों की सुरक्षा को लेकर भी चिंतित रहते है। हालांकि आजकल माध्यमिक स्तर तक की स्कूलों की व्यवस्था लगभग सब गांवों या उसके किसी न किसी मोहल्ले तक हो गई है, फिर भी कुछ माता पिता आज भी ऐसे हैं जो अपने बच्चों को विशेषकर लड़कियों को एक मोहल्ले से दूसरे मोहल्ले तक भी भेजने में चिंता करते हैं। उनकी सोच होती है कि पता नहीं कब क्या हो जाये और वे लोग किसी के सामने नजर उठाने लायक न रह जाये। इससे अच्छा है कि लड़की घर बैठे और समय आने पर ससुराल चली जाये। जैसे ही इस अधिकारी महोदय ने बोलना बंद किया उनके बगल में बैठे दूसरे अधिकारी ने कहा कि कुछ बच्चे तो इस कारण स्कूल आना बंद कर देते हैं कि उनका सामंजस्य कक्षा के अन्य बच्चों से नहीं बैठ पाता। कहीं कहीं यह बच्चों के शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण होता है, तो कहीं कहीं प्राकृतिक कारणों से जिनमें स्वभाव, रंग, रूप व लिंग इत्यादि शामिल होता है। तभी एक दूसरे अधिकारी ने कहा कि कुछ बच्चों को तो मैंने इस कारण स्कूल छोड़ते देखा है कि उन्हें स्कूल में पढ़ने वाले कुछ बच्चे और पढ़ाने वाले शिक्षको का व्यवहार उनके प्रति अच्छा नहीं लगा। अंत में एक अधिकारी ने अपनी बात रखते हुये कहा कि घरेलू जिम्मेदारियां जिनमें हम घर का काम, मवेशी चराना या लड़कियों के मामले में अपने छोटे भाई

बहनों की देखभाल करना इत्यादि शामिल किये जा सकते हैं, यही सब प्रमुख कारण है जिससे बच्चे धीरे धीरे स्कूल आना बंद कर देते हैं।

मंत्री महोदय, जो सभी अधिकारियों की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे और मन में यह विचार भी करते जा रहे थे कि इन लोगों के द्वारा बतलाये गये कारणों में से ऐसे कितने कारण है जो आज भी प्रासंगिक है और ऐसे कितने कारण है जो समय के साथ साथ धीरे–धीरे अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। जब सभी अधिकारी अपने क्रम के अनुसार बोल चुके तब मंत्री महोदय ने कहा आप सभी लोगों ने अपने अपने अनुभव और अपने क्षेत्रों की स्थितियों का अवलोकन कर जो भी कारण बतलायें हैं मैं मानता हूं कि उनमें से कई आज भी प्रासंगिक है और कुछ अप्रासंगिक हो चुके हैं। फिर भी मेरी समझ के अनुसार और जैसा कि कई पालकों ने इस संबंध में मुझे अवगत कराया गया है , के अनुसार आप लोगों के द्वारा बतलाये गये कारणों में नहीं आ पाया है और वह कारण है हमारी शालाओं में पढ़ाये जाने वाले विषयों, उसके पाठ्यक्रम, उसका बच्चों से जुडाव व बच्चों द्वारा उसे अपने जीवन के लिये उपयोगी समझा जाना। मैं चाहता हूं कि आप सभी अपना अगला योजना बनाने व उसे अमल में लाने के पहले इस कारण पर गहराई से न केवल सोंचे समझे अपितु इससे संबंध रखने वाले पक्षकारों जिनमें बच्चे सर्व प्रमुख है और साथ साथ शिक्षकों, पालक गण, जन समुदाय व शाला प्रबंध समिति के सदस्यों के साथ भी व्यापक विचार विमर्श करें। इस कार्य हेतु मैं आप सभी लोगों को एक माह का समय देता हूं। इस अवधि में आप लोग निचले स्तर पर हर पारा, टोला, मोहल्ला व गांवों में सघन सर्वे कार्य कराके पहले यह जानने की कोशिश कीजिये की पूर्ण रूप से शाला नहीं आने वाले व अनियमित रूप से शाला नहीं आने वाले कितने बच्चे हैं और उसके क्या क्या कारण है। कारणों की जांच करते समय आप सभी सावधानी बरतने का निर्देश अपने नीचे के कर्मचारियों को अनिवार्य रूप से दें क्योंकि हमारी इस योजना की सफलता उसके सही कारणों के पहचान पर ही निर्भर है। अन्यथा हम फिर वही रहेंगे जहां से चले

थे। आशा है कि आप सभी अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण लगन के साथ समय सीमा पर पूरा कर मुझे अवगत करायेंगे।

उपस्थित सभी अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देकर मंत्री महोदय बैठक समाप्ति की घोषण कर बैठक हाल से बाहर निकलकर चले गये। उनके जाने के बाद सभी अधिकारी आपस में बैठकर अपने अपने जिले की परिस्थिति व ऐसे बच्चों की अनुमानित संख्या के अनुसार वहीं बैठकर कुछ देर योजना बनाने का कार्य करने लगे। आपस में चर्चा करते समय उन सभी को यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ गई थी कि जब तक हम इस समस्या को सरसरी नजर में रखेंगे तब तक इसका समाधान नहीं होगा। निश्चित समाधान के लिये सभी को परंपरागत विचारों व कारणों से परे सोचना व कार्य करना होगा और वे सभी इस कार्य को करने में अपनी पूर्ण ऊर्जा लगाने की सहमति के साथ अपने अपने जिले के लिये रवाना हो गये।

****

गांव में सुबह–सुबह कोतवाल मुनादी करते हुये लोगों को बतलाते जा रहा था कि आज बारह बजे स्कूल में सभी पालकों का बैठक रखा गया है। ऐसे लोग जो स्कूल की गतिविधियों में रूचि नहीं लेते थे या फिर जिनके यहां के कोई भी बच्चा पढने नहीं जाता था, वे सब इस मुनादी से उदासीन ही रहे। परंतु ऐसे लोग जिनके यहां के बच्चे स्कूल पढ़ने जाते थे, उनके मन में उत्सुकता थी कि आखिर ऐसाक्या काम आ गया कि गांव के सभी पालकों को बुलायाजा रहा है। चाहे रमेश ललिता हो या दिनेश पावर्ती उनके मन में भी यह उत्सुकता तो थी लेकिन उनकी उत्सुकता संभावना की पूर्वाभास होने के कारण थोड़ी दबी हुई थी। दिनेश यह सोचकर की अकेले स्कूल जाने से अच्छा है रमेश को भी साथ ले लिया जाये, रमेश के घर की ओर कदम बढ़ा देता है। ठीक उसी समय यही विचार करके रमेश भी दिनेश के घर जाने के लिये निकलने लगता है और तभी उसकी नजर अपनी ओर आते दिनेश पर पड़ता है और जैसे ही वह थोड़ा नजदीक आताहै, तुरंत पूछता है कैसे दिनेश भाई? स्कूल जाने के लिये ही निकले हो न?

रमेश को अपना उत्तर सिर हिलाकर देते हुये दिनेश रमेश के साथ पैदल ही स्कूल के लिये निकल पड़ता है। रास्ते में इधर–उधर की बातें करने के बजाय दिनेश सीधे मुद्दे पर आते हुये रमेश से कहता है– क्यों रमेश भाई। स्कूल में आज की बैठक बुलाये जाने का उद्देश्य वही होगा न जैसा मेरा अनुमान है। आपका क्या कहना है।

दिनेश की बातों को सुनकर रमेश हंसते हुये बोला– हां दिनेश। मैं भी वही सोच रहा हूं और दूसरा कोई कारण तो नहीं दिख रहा है। हां पर यह हो सकता है कि इसके साथ साथ और कई बिंदु भी इस बैठक के लिये निर्धारित किये गये हों। क्योंकि स्कूल वाले एक मौके पर बहुत से कार्य निपटाने के पक्ष में रहते हैं।

रमेश की बाते पूरी होने के बाद दिनेश बोला– रमेश भाई। मानलों जैसा हम सोच रहे हैं, कही उसी विषय पर ही बैठक का आयोजन किया जा रहा होगा

और हमसे निक्कू और शुभम के बारे में जानना चाहेंगे, तब हमें क्या कहना और करना होगा?

देखो यार दिनेश। अगर स्कूल में मास्टर साहब निक्कू और शुभम तथा उनके ही समान अन्य बच्चों के संबंध में ही इस बैठक का आयोजन रखे होंगे, तब तो यह पूछा जाना स्वाभाविक ही है और इस संबंध में पहले जैसा मेरा विचार था आज भी वही विचार है और वह यह है कि मैं बच्चो को यह तो बोल और समझा सकता हूं कि पढ़ना लिखना उनके लिये क्यों बहुत जरूरी है और उन्हें पढ़ना भी चाहिये। पर कोई यह कहे की मैं इसके लिये बच्चों पर दबाव डालूंगा उन्हे यातना दूंगा या फिर जोर जबरदस्ती करके स्कूल भेजुंगा तब मैं ऐसा कभी भी नहीं करूंगा। मैंने अपने जीवन में इस बात को गहराई से अनुभव किया है कि पढ़ाई लिखाई पूर्ण रूप से आनंदमय वातावरण में ही होना चाहिये। दबाव में पढ़ने लिखने वाले बच्चे केवल खानापूर्ति करते हैं और कुछ नहीं।

रमेश के बोलने के बाद दिनेश ने कहा – यार रमेश। पहले मेरा भी यही विचार था और मैंने भी कभी शुभम के ऊपर दबाव नहीं बनाया। पर उस दिन शहर में मैंने जो कुछ भी देखा उसके बाद ऐसा लगा कि हमें अपने बच्चों को पढ़ने लिखने के लिये प्रेरित करना चाहिये। क्योंकि अगर कुछ भी नहीं कहेंगे तो हो सकता है कि बच्चे गलत राह पकड़ ले और फिर वहां से उन्हें वापस लाना हमारे लिये मुमकिन ही न हो। मैंने स्वयं पहल करके शुभम को समझाने का प्रयास किया और उसके हाव भाव से मुझे लगा भी की जैसे वह पढ़ने को धीर धीरे मानसिक रूप से तैयार हो रहा है।

रमेश ने कहा– हां दिनेश। ओ शहर वाली बात मैंने भी निक्कू से सुनाथा। शायद शुभम की अम्मा बतलाई थी और अभी अभी जो आप बोल रहे थे न कि बच्चे गलत राह पकड़ सकते हैं वह सही भी है। और इस पर हमें सतत निगरानी रखनी भी होगी। पर प्रेरित करने और बाध्य करने में समझाने, और जोर डालने में काफी फर्क होता है मेरे दोस्त।

हां रमेश। मैं आपकी बातों को काफी आदर और महत्व देता हूं क्योकि इन सभी मामलों में आपका अनुभव और सोच मेरे मुकाबले ज्यादा प्रगतिशील है। इसी कारण तो चर्चा शुरू होने के पहले ही मैंने आपका विचार जानना चाहा था – दिनेश ने कहा।

रमेश चलते–चलते बोला– दिनेश पहले तो स्कूल जाकर, बैठकर शिक्षकों की चर्चा ध्यान से सुनेंगे। हो सकता है ऐसे बच्चों के संबंध में शासन ने कोई नई नीति और योजना बनाई हो, जो हमारे बच्चों के जैसे अन्य अनेक बच्चों के लिये उपयोगी और लाभप्रद हो। तब तो हम भी अपने बच्चों को सहर्ष स्कूल भेजेंगे और मुझे विश्वास भी है कि हमारे बच्चे भी स्कूल आना शुरू करेंगे। पर रही बात पिछले नीतियों और योजनाओं की तब तो मैं अभी से निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। दिनेश बोला– यार रमेश। मुझे यह तो बिल्कुल नहीं लग रहा है कि मास्टर साहब उन्हीं घिसी–पिटी बातों को बतलाने के लिये पूरे गांव भर के पालकों को बुलायें होंगे। अभी कुछ दिन पहले के ही अखबार में मैंने पढ़ा था कि शिक्षा मंत्री महोदय ने सभी राज्य व जिला स्तर के शिक्षा विभाग के अधिकारियों की बैठक में सख्त निर्देश दिया है कि वे तत्काल अपने अपने क्षेत्रों में ऐसे बच्चों की सही सही संख्या के साथ साथ उनके स्कूल नहीं आने के सही कारणों को पहचान कर, तत्काल इस संबंध में अवगत करावें। और मास्टरजी का इस तरह बैठक बुलाया जाना मुझे उसी बैठक का परिणाम लग रहा है।

रमेश ने कहा– हां दिनेश। मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। आपको याद है कुछ दिन पहले मैं राय सर के साथ स्कूल गया था। उसी समय चर्चा के अंत में मुझे आभास हो गया था कि कोई कुछ करें या न करें, राय सर अपने स्कूल क लिए जरूर करेंगे।

रमेश की बातों को सुनकर कुछ सोचने के बाद दिनेश ने कहा– रमेंश। मैं तो कभी कभी सोचता हूं कि शिक्षा के मामले में और विशेषकर प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नीति निर्माताओं को स्थानीय आवश्यकताओं जीवन के लिये पाठ्यक्रमों की उपादेयता, पालक और बच्चों की अभिलाषा इत्यादि बातों पर भी विशेष ध्यान देना

चाहिये। हो सकता है इन सभी बातों में संबंधित पक्षों की सहमति होने पर इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न ही न हो।

दिनेश की बातों को गहराई से समझने के बाद रमेश ने कहा– हां यार। आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं और होता भी यही है, पर अभी यह कुछ लोगों और स्थानों तक ही सीमित है और इसका कारण मैं जन समुदाय की उदासीनता को ही मानता हूं। यार हम अपने ऊपर ही लेकर बात करें न। हम अपने आपको पढ़ा लिखा मानते हैं और उस पर गर्व भी करते हैं। पर कितने दिन हम अपने बच्चों से उनके पढ़ने लिखने का हाल चाल पूछे हैं, कितने बार उनके स्कूल जाकर शिक्षकों से चर्चा किये हैं। एक बार भी नहीं न। और जाना कब शुरू किये हैं, जब पानी सिर से ऊपर पहुंच गया। हम अपने ही बच्चों के पढ़ाई लिखाई के बारे में नही सोचें तो फिर अन्य बच्चों की पढ़ाई लिखाई के बारे में सोंचे या उनके लिये कुछ करें, ऐसा तो संभव ही नहीं है। रह गया सवाल अन्य पालकों का, तो उनमें से बहुत से पालक तो बेचारे दिन रात घर गृहस्थी के व्यवस्था में ही खपे रहते है। जिस दिन ये सब लोग जागरूक हो जायेंगे न उस दिन से ही नीति निर्माताओं को इनकी सहमति के अनुसार कार्य करना ही होगा और जानते हो दिनेश वह दिन बहुत जल्दी ही आयेगा और आ भी रहा है – रमेश ने कहा।

दिनेश ने कहा– हां रमेश। मैं भी सोंचते रहता हूं कि यह कितनी आश्चर्य की बात है कि जो हमारे जीवन का आधार है, जिससे हम अच्छे बुरे की पहचान करना सीखते हैं, अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानते और समझते है, उसी शिक्षा को हम अपनी अन्य आवश्यकताओं के समक्ष गौण समझने लगते है और इसका परिणाम क्या होता है, हमारे जैसे पढ़े लिखे घरों के बच्चों के मन में पढ़ाई लिखाई के प्रति वितृष्णा पैदा हो जाती है। सच कहूं रमेश तो मुझे न कभी कभी अपने पढ़े लिखे होने पर गर्व की अपेक्षा शर्म ज्यादा महसूस होती है।

सही कह रहे हो दिनेश। पर अब हमकों अपनी पहली वाली प्रवृत्ति से बचना होगा और लोगों को भी जागरूक करके इसे (शिक्षा को) जन अभियान का रूप देना होगा तभी आगे चलकर न किसी के घर में निक्कू और न किसी के घर

में शुभम यह कहेगा कि उसे पढ़ना लिखना अच्छा नहीं लगता। हम इसके कारणों की जड़ पर प्रहार करेंगे। चाहे इसके लिये कितनों भी मेहनत और समर्पण की आवश्यकता क्यों न हो – रमेश स्कूल के ग्राउण्ड में घुसते हुये कहा। हॉ रमेश। और मुझे हर अच्छे काम में अपने साथ पाओगे दिनेश, रमेश के साथ साथ चलते हुये कहा।

स्कूल में ज्यादातर पालक उपस्थित हो चुके थे। सभी शिक्षक उपस्थित पालकों के साथ चर्चा कर रहे थे। रमेश और दिनेश भी वहीं बैठकर चर्चा में शामिल हो जाते हैं।

****

दरोगा रणवीर सिंह को जब से आरक्षक ने आकर विभिन्न शासकीय योजनाओं के बारे में बतलाया था, उसी दिन से वह सुमित और अजीत के घर जाकर, उनसे मिलकर बतलाना चाह रहा था लेकिन रोज की व्यस्तताओं की वजह से समय ही नहीं मिल पा रहा था। रात में ही दरोगा साहब मन ही मन सोच रहा था कि ज्यादा दिन होने पर बच्चों के मन से मेरे बातों का विश्वास खतम हो जायेगा और हो सकता है कि ऐसी स्थिति में बच्चे कहीं फिर से गलत राह पर चलना आरंभ न कर दें। बच्चों के मन में विश्वास को जिन्दा बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि जितना जल्दी हो सके, उनसे मिला जाये। सोचते सोचते दरोगा साहब ने मन ही मन निश्चय किया कि कल सुबह चाहे कुछ भी हो जाये या फिर कितनों भी जरूरी काम आ जाये वह इस काम को प्राथमिकता के साथ पहले नंबर पर निपटायेगा ही। सोचते सोचते दरोगा साहब को पता ही नहीं चला कि कब आंख लग गई और जब आंख खुली तो बाहर चिड़ियां चहक रही थीं। जल्दी जल्दी नित्यक्रिया से निवृत्त होकर स्नान करने के बाद केवल चाय पीकर अपनी मोटर सायकल लेकर सुमित और अजीत के बतलाये पता के आधार पर उनके घर की ओर रवाना हुये। मोहल्ले में पहुंचने के बाद उन्हें ज्यादा पूछना नहीं पड़ा और सीधा सुमित के घर पहुंच गया।

सुमीत के घर का दरवाजा अभी खुला भी नहीं था। दरोगा साहब कुछ देर रूककर वहीं सोचता रहा फिर हल्का सा दस्तक दरवाजे पर दिया। एक दो दस्तक देने के बाद सुमीत के पिता गौकरण ने दवाजा खोला। सामने एक अजनबी व्यक्ति को बड़े सबेरे अपने घर में देखकर उसे डर मिश्रित आश्चर्य हुआ और मन में ख्याल आया कि कहीं सुमित ने फिर कोई गलत काम तो नहीं कर दिया है और उसकी शिकायत लेकर यह व्यक्ति यहां आया हुआ है। मन में उत्पन्न शंका को शांत करने के लिये गौकरण ने पूछा– माफ करना साहब मैंने आपको पहचाना नहीं। आप कौन है और किससे मिलने आये हैं?

दरोगा रणवीर सिंह गौकरण के चेहरे को देखकर समझ गया था कि वह किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत हो रहा है। अतः शांत स्वर में मुस्कराते

हुये बोला– मैं इस शहर का दरोगा रणवीर सिंह हूं। आपका लड़का सुमीत कहां है उसे बुलाओ? दरोगा साहब का परिचय पाकर गौकरण को डर तो लग रहा था, मगर चेहरे पर मुस्कान देखकर कुछ ढांढस बंधा और वहीं पर रखे कुर्सी को बैठने के लिये देते हुये वहीं से सुमित को आवाज लगाया – ओ सुमीत। देखो तो थाने से दरोगा साहब आया हुआ है।

जिस समय गौकरण सुमीत को आवाज लगाया उस समय वह मुंह हाथ धो रहा था और मुंह हाथ धोते हुये ही वह बोला पिताजी आ रहा हूं। जब तक सुमीत वहां आता उससे पहले ही दरोगा का नाम सुनकर सुमीत की मां भी डरते हुये घर के दूसरे कमरे से निकलकर वहां आ गई थी। इस बीच अवसर पाकर गौकरण ने दरोगा साहब से पूछा– साहब फिर कहीं सुमीत ने कुछ कर दिया है क्या?

गौकरण के प्रश्न सुनकर शंका को शांत करते हुये दरोगा साहब ने कहा– नहीं सुमीत के पिताजी। ऐसी कोई बात नहीं है। पिछले बार जब मैं आपके लड़के और उसके दोस्त को पकड़कर थाने ले गया था, उस समय उन दोनों को बहुत समझाया था अैर यह भी बोला था कि अगर तुम दोनों मुझे सुधरने का विश्वास दिलाओगे तब मैं तुम लोगों के लिये कुछ करने का प्रयास करूंगा और उसी सिलसिले में सुमीत के साथ साथ आप लोगों को भी बतलाने आया हूं।

दरोगा साहब की बातों को सुनकर गौकरण ने कहा– हां दरोगा साहब। उस दिन जब सुमीत घर आया था तो आपके बारे में सब कुछ बतलाया था। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि आज के समय भी आप जैसे दयावान इंसान हमारे आस–पास रहते हैं।

नहीं गौकरण। इसमें दया की क्या बात है? समाज के नागरिक होने के नाते यह तो हम सभी का कर्तव्य होना चाहिये कि जिन्हें जो आवश्यकता हो और वह यदि हमारे वश में हो तो उपलब्ध कराकर मदद करनी चाहिये या फिर किसी

के लिये कुछ करने से अगर उसकी जीवन सुधरती और संवरती है तो इससे बड़ी और क्या खुशी हो सकती है दरोगा साहब ने कहा।

साहब तो क्या आपने सुमीत और उसके दोस्त के लिये कुछ काम धंधा खोज के रखा है – गौकरण ने प्रश्न किया। नहीं गौकरण– अभी तो दोनों बच्चे बालिग भी नहीं हुये है। इस कारण उनको किसी के द्वारा काम दिया जाना या उनके द्वारा कहीं नौकरी के रूप में काम करना दोनों ही गैर कानूनी है। मैं तो केवल सरकार द्वारा ऐसे ही बच्चों के लिये शुरू की गई कुछ योजनाओं का लाभ दिलाकर इनकी जिंदगी संवारने की कोशिश कर रहा हूं दरोगा साहब ने बतलाते हुये कहा।

गौकरण ने पूछा– कैसी योजना, कैसा लाभ साहब। हम तो इसके बारे में कभी सुने भी नहीं है और न ही आज तक हमें किसी ने बतलाया है।

दरोगा साहब– देखों गौकरण। तुम्हारे बेटे सुमीत और अजीत ही ऐसे लड़के नहीं है, जो पढ़ने–लिखने के उम्र में स्कूल ना जाकर गलत कामों में लगे हुये है। ऐसे बहुत सारे बच्चे हमारे समाज में यहां नहीं तो और कहीं है। सरकार का मानना है कि अगर ऐसे बच्चों को इनकी पसंद और समय के अनुसार विषय व स्कूलों में डाला जाये, और वहां इनकी आवश्यकता पूर्ति की सारी चीजें सरकार द्वारा मुफ्त दी जाये, तब बहुत सारे बच्चे गुमराह होने से बच सकते हैं और हमारे समाज का स्वस्थ विकास हो सकता है। साथ ही यह भी व्यवस्था की गई है कि ऐसे बच्चे अपने रूचि व कौशल के अनुसार कुछ चीजों को बनाना या कुछ काम करना भी सीख जाये। इससे आगे चलकर मान लो कोई बच्चा पढ़ना ही न चाहे तो कम से कम उसके पास कुछ तो ऐसा काम धंधा होगा जिसके सहारे वह अपना भविष्य सम्मानपूर्ण ढंग से बीता सके।

प्रसन्न और आशान्वित होते हुये गौकरण ने कहा – साहब यह तो सचमुच बहुत अच्छी योजना है जो सरकार ऐसे बच्चों को गुमराह होने से रोकने के लिये कर रही है।

अब तक सुमीत अपने नित्यक्रिया से संबंधित कार्य पूर्ण करके वहीं पर आकर किनारे खड़े खड़े अपने पिताजी और दरोगा साहब के बीच हुये सारी बातों को सुन रहा था। जब गौकरण और दरोगा साहब के बीच की चर्चा खतम हुई तब दरोगासाहब का ध्यान किनारे खड़े सुमीत की ओर गया। दोनों की नजरें मिली और इससे पहले की दरोगा साहब या उसके पिताजी सुमीत से कुछ कहते सुमीत वहां से चलकर आया और दरोगा साहब का चरण स्पर्श करने के बाद पास ही बगल में खड़ा हो गया। आशीर्वाद देने के बाद दरोगा साहब ने सुमीत से पूछा– क्यों सुमीत तैयार हो न?

हॉ साहब। मैं और अजीत दोनों कब से आपके आने और खबर देने की प्रतीक्षा कर रहे थे और वह दिन आज आ गया। अब आप हमें केवल यह बतलाईये कि वहां जाना कब से है। सुमीत ने मुस्कुराते हुये कहा। दरोगा साहब कुर्सी से उठते हुये बोला– बहुत अच्छा सुमीत। मुझे प्रसन्नता है कि तुम दोनों ने मेरे मन के विश्वास को बनाये रखा और अब मैं चलता हूं। शीघ्र ही समय तारीख और स्थान की सूचना भेजता हूं। यह कहते हुये दरोगा साहब वहां से अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

****

जब से शासन का नया दिशा–निर्देश प्राप्त हुआ था तभी से सभी स्कूलों के शिक्षक इस काम को पूरा करने में लगे हुये थे। शिक्षकों को अब केवल ऐसे बच्चों की पहचान ही नहीं करना था, बल्कि उनके लिये उसी पाठ्यक्रम को और ज्यादा गतिविधि पूर्ण बनाते हुये रोचक भी बनाना था ताकि बच्चों को विषयों को समझने और आत्मसात् करने में कोई कठिनाई न हो। प्रभारी प्रधान पाठक होने की वजह से राय सर पर थोड़ी ज्यादा ही जिम्मेदारी थी। अगर अपेक्षित समय सीमा पर काम पूर्ण कर प्रतिवेदन उच्च कार्यालय तक नहीं पहुंचाई गई तो कुछ भी कार्यवाही हो सकती थ। इसी कारण राय सर ने जब से दिशा निर्देश मिला था उसी दिन से ही कार्यों का विभाजन अपने स्टाफ के सभी तीनों शिक्षकों के मध्य कर दिया था। एक शिक्षक का काम था कि वह पिछले सत्र आरंभ से ही बच्चों की उपस्थिति पंजी का अवलोकन कर देखें की कितने बच्चों ने इस दौरान अपनी अनियमित उपस्थिति दी है। फिर ऐसे बच्चों के घर जाकर उनके पालको से संपर्क कर यह जानने का प्रयास करे कि उनके बच्चे शाला क्यों नहीं आ रहे हैं? विषयगत कारणों से शाला नहीं आने वाले बच्चों से मित्रवत् वातावरण में बातचीत कर यह जाने की उन्हें कौन से विषय का कौन सा बिन्दु समझ में नहीं आता और क्यों? रायसर ने अपने दूसरे शिक्षक को काम दिया था कि वे समस्त सक्रिय पी.एल.सी. के नियमित संपर्क में रहते हुये विषयवार चिन्हांकित कठिन बिंदुओं की सरल प्रस्तुतीकरण के तरीके शिक्षण सामग्री व अन्य नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सभी का पंजीकरण करें और तीसरे शिक्षक को कार्य मिला था कि वे जन सहभागिता प्राप्त कर इस समस्या को यहीं खतम करने के उपयों पर व्यपापक सहमति प्राप्त करने हेतु क्या कदम उठाये जा सकते हैं, इस पर अपना पक्ष रखें? राय सर ने अपने स्वयं के लिये इन सभी कार्यों की समय सीमा में पूर्णता आवश्यक बैठकों का आयोजन और कार्यक्रम के सफलता की समीक्षा की जिम्मेदारी ले रखी थी। शाला में प्रथम बैठक का आयोजन संपन्न हो चुका था। जिसमें लगभग सभी पालकों ने अपनी उपस्थिति दी थी और साथ ही बैठक के अंत में भरोसा भी देकर गये थे कि वे अपने बच्चों को नियमित शाला भेजेंगे।

राय सर आने वाले दिनों में और क्या काम किये जा सकते हैं, इसकी मन में रूप रेखा बनाते हुये कार्यालय में बैठे हुये है। उसी समय चतुर्वेदी मैडम, पैकरा सर और ठाकुर सर कार्यालय के अंदर आकर अपनी अपनी कुर्सीयों पर बैठते हैं। बैठने के बाद चतुर्वेदी मैडम बोलती है – सर अपने मुझे पी.एल.सी. से संपर्क कर नये नये गतिविधियों, शिक्षण सामग्रियों और नवाचारों के बारे में मुझे जानने का अवसर दिया। सच कहती हूं सर यह विचार हमारे मन में पहले क्यों नहीं आई? इन चीजों को जानने के बाद विषय के प्रति जब मेरी रूचि बहुत बढ़ गई, सीखने में जानने में मुझे बहुत मजा आया, तब तो बच्चों को आयेगा ही आयेगा सर। और मैंने तो प्रतिज्ञा कर ली है कि अब मैं रोज नये नये तकनीकों का उपयोग कर अपने कक्षा में अध्यापन कार्य करूंगी।

बहुत अच्छा मैडम। यह तो होना ही चाहिये। हम अपनी व्यस्तताओं और अनिच्छा के कारण यह भूल जाते हैं कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। दर असल हम ही नहीं चाहते की कोई चीज बदले, क्योंकि हर बदलाव का प्रथम चरण कष्टप्रद होता है। जानती हो मैडम जिस काम में आपको मजा आया, कुछ लोग ऐसे भी होंगे, जिनके लिये इन्हें स्वीकार करना कोई सरल काम नहीं होगा – राय सर ने चतुर्वेदी मैडम की प्रशंसा करते हुये कहा।

हां सर। मैंने भी यह अनुभव किया है जब से पालकों व बच्चों तक यह बात पहुंची है तब से उनमें नई स्फूर्ति व ऊर्जा का संचार हुआ है – पैकरा सर ने पालक संपर्क के दौरान हुये अपने अनुभवों को साझा करते हुये बतलाया। राय सर ने कहा– पैकरा जी। शिक्षा एक ऐसी चीज है जिसमें जब तक इससे जुड़ी सभी पक्षों चाहे वह बच्चे हो, पालक हो, शिक्षक हो या नीति निर्माता हो की समान सहभागिता प्राप्त नहीं होगी तब तक अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता। परिणाम अप्राप्त रहने की स्थिति में किसी एक या दो पक्ष को जिम्मेदार ठहरा देना सर्वथा अनुचित ही कहा जा सकता है।

सर इसमें मैं एक बात और जोड़ना चाहता हूं और वह यह कि हम नये कामों के लिये खुद से पहल ही नहीं करते। अध्यापन कराते कराते शिक्षकों के मन

में न जाने कितनी नई विधायें व नवाचार का जन्म होते रहता है और शिक्षकों के ध्यान में भी यह बात रहती है, पर इसे व्यावहारिक रूप देने से न जाने क्यों कतरा जाते हैं – पैकरा जी ने कहा। हां पैकरा सर। इसी बात का तो मैं कुछ देर पहले ही उल्लेख किया था और उसका कारण यही है कि हम किसी नये चीज को पहली नजर में स्वीकार ही नहीं करना चाहते। नही तो अगर आज शिक्षक यह ठान लें और पहल करना सीख जाये तो इंटरनेट के इस युग में किसी एक ही विषय बिन्दु को कक्षा में प्रस्तुत करने के हजारों तरीके उपलब्ध हो जायेंगे – राय सर ने कहा।

ठाकुर सर जिनका स्वभाव ही कम बोलने का है, बड़ी देर से सभी शिक्षकों की बातें सुन रहे थे, ने कहा– सर इस संबंध में मैं भी कुछ कहना चाह रहा हूं। हां हां ठाकुर सर। जरूर अपनी बात रखिये। क्योंकि मैं ऐसा मानकर चलता हूं कि किसी चीज से जुड़े सभी पक्षकारों को अपनी बात रखने का अवसर अवश्य मिलना चाहिये। एक भी सदस्य के सम्मिलित नहीं होने से परिणाम प्रभावित हो सकता है राय सर ने कहा।

ठाकुर सर ने बोलना शुरू किया– सर। मेरी बातों को अन्यथा नहीं लेंगे। मैं केवल अपना विचार रख रहा हूं। मैं कभी भी नये परिवर्तनों को स्वीकार करने और उसके फलस्वरूप उत्पन्न चुनौतियों के सामना करने से घबराता नहीं हूं पर जैसा सर आपने अभी अभी कहा कि शिक्षा से जुड़े सभी पक्षों की सहभागिता समान रूप से हो तभी सफलता सुनिश्चित हो सकती है। मैं तो यहां केवल यह बोलना चाह रहा हूं कि जो बच्चे इतने दिनों से शाला की मुख्य धारा से अलग रहे हों क्या वे एक एक हमारे नये नये विधियों और नवाचार से इतने प्रभावित हो जायेंगे कि नियमित बच्चो के समान रोज स्कूल आना शुरू कर देंगें और न केवल रोज स्कूल ही आये अपितु उन्हीं के समान परिणाम भी देने लगेंगे।

ठाकुर सर की बातों को ध्यान से सुनने के बाद राय सर ने कहा– ठाकुर सर बात ऐसी नहीं है। अगर हम शुरू से ही अपेक्षा को बढ़ा कर रखें तो हो सकता है हमें निराशा हाथ लगे। अभी हम जो प्रयास कर रहें है उसका एक

उद्देश्य यह भी है कि जो बच्चे स्कूल आना छोड़ दिये थे, वे स्कूल की तरफ फिर से खींचे चले आये और स्कूल समय तक रहे। रह गया सवाल उनके पूर्ण काल तक ठहरने की तो यह काम कोई दो चार दिन या दो चार माह में नहीं हो जायेगा इसके लिये सबको निरंतर योजनाबद्ध रूप से काम करना होगा।

राय सर की बातों से संतुष्ट होते हुये सभी शिक्षक अपने अपने आगे के कार्यों की योजना बनाने लगे। उन सभी शिक्षकों में थकान जरूर नजर आ रही थी, पर एक गजब का स्फूर्ति भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

****

शाम का समय हो रहा था। दरोगा साहब जब से सुमीत के घर से गया था तभी से सुमीत अंदर ही अंदर प्रसन्न था और अपनी इस प्रसन्नता को अजीत के साथ भी बांटना चाहता था। कब से वह सोच रहा था कि अजीत के घर जाकर, उसे बतला कर आऊ पर घर में बहुत से काम होने के कारण वह अजीत के घर नहीं जा पा रहा था। मन की खुशी बतलाने की ललक में सुमीत जल्दी जल्दी अपना काम निपटाने की कोशिश कर रहा था पर जल्दी जल्दी में कोई न कोई काम बिगड़ जाता था और उसे उसी काम को दोबारा करना पड़ता था। मन में खीझ भी आती थी कि इससे अच्छा तो काम को धीरे धीरे ही करता, आखिर समय तो उतना ही लग जाता है। किसी तरह उसे सौंपा गया काम पूरा हुआ लेकिन काम पूरा होते होते शाम भी होने लगी थी। अब सुमीत अपने अंदर की खुशी को और ज्यादा देर तक नहीं रोक पा रहा था। जैसे ही उसका काम पूरा हुआ, इस डर में की कहीं और कोई दूसरा काम न आ जाये और अजीत के घर जाने को ही न मिले, वह बिना पीछे मुड़ के देखे सीधे अजीत के घर की तरफ अपना कदम बढ़ा दिया। अजीत का घर अभी कुछ ही दूर और बाकी था तभी उसे अजीत एक दुकान के पास खडा हुआ दिखाई दिया। सुमीत वहीं से उसे आवाज लगाते हुये दुकान की ओर ही बढ़ने लगा। बार बार आवाज लगाने के बाद भी जब अजीत का ध्यान सुमीत की ओर नहीं गया तो मन में यह सोंचकर की शायद उस तक आवाज नहीं पहुंच पा रही है, सुमीत ने अपना रफ्तार और बढ़ा दिया। सुमीत बस अजीत के करीब पहुंचने ही वाला था कि अजीत का ध्यान एकाएक सुमीत पर पड़ा और सुमीत के कुछ बोलने के पहले ही अजीत बोल पड़ा – अरे सुमीत तुम इधर कहां जा रहे हो?

अजीत ने एकदम नजदीक जाते हुये सुमीत से कहा यार तुम मेरी छोड़ पहले ये बता की उस दिन से लेकर आज तक कहां थे। इस बीच न तो कहीं दिखा और न ही मिलने आया।

अजीत– मालूम है सुमीत। उस दिन की बात को लेकर मेरे घर वाले मुझ पर बहुत गुस्सा हुये। गुस्सा तो पहले भी करते थे पर पता नहीं उस दिन उन

लोगों का गुस्सा मेरे अंदर और बाहर दोनों को घायल कर दिया। मैं बार बार अपने किये पर पछता रहा था और घर में बोल भी रहा था कि अब ऐसी गलती दोबारा नहीं करूंगा। पर कोइ मेरी बातों पर विश्वास करने को तैयार ही नही थे और ठीक ही तो कह रहे थे यार। मैंने कितनी ही बार उन लोगों का विश्वास तोड़ा है। काहे अब मेरी बात पर विश्वास करते। मन में इसी ग्लानि भाव के कारण न तो मुझे कहीं आने जाने का मन हो रहा था और न ही किसी से मिलने का। आज घरवाले दुकान से सामान लाने को कहे तो मजबूरी में घर से बाहर निकलना पड़ा। और तुम सुनाओ क्या हाल चाल है। तुम्हारे चेहरे को देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि तुम्हारे घरवाले कुछ बोले होंगे या तुम्हारे अंदर उस दिन की घटना को लेकर कोई पछतावा हो रहा होगा। कभी कभी तो मैं सोचता हूं कि अगर इस बीच दरोगा साहब कहीं पर हमसे मिल गया और पूछ लिया कि हम लोगों ने क्या सोंचा है तो फिर एक बार उनके सामने शर्मिन्दा होना पड़ेगा। नहीं अजीत तुम बिल्कुल गलत समझ रहे हो। मेरे घर में भी सिवाय मेरी मां के सभी लोग बहुत नाराज थे। मेरे पिताजी तो मुझे घर में घुसने से पहले पीटे भी थे। पर मुझे बिल्कुल बुरा नहीं लगा। बल्कि मन में यह भाव आया कि चलो गलती की सजा मिल रही है शायद इससे मन का बोझ कुछ हल्का हो जाये। रहा सवाल तुम्हें दिखाई देने वाली मेरी प्रसन्नता की तो वह मालूम है आज सुबह हमारे यहॉ दरोगा साहब आया था सुमीत ने कहा।

इससे पहले की सुमीत अपनी बात पूरी कर पाता बीच में ही अजीत बोल पड़ा– क्या कहा तुमने। आज सुबह दरोगा साहब आया था। अरे जल्दी बतलाओ न दरोगा साहब ने क्या क्या कहा?

अरे वहीं बतलाने तो अपने घर से निकला हूं और तुम्हे बतला भी रहा था। पर मेरी बात पूरा होने के पहले ही तुम बीच में कूद पड़े– सुमीत ने हंसते हुये कहा। ठीक है ठीक है। अब मेरा मजाक मत उड़ाओ और जल्दी बतलाओं की दरोगा साहब हम लोगों के लिये क्या करने वाले हैं? अजीत ने पूछा?

सुमीत बोला– दरोगा साहब बतला रहे थे कि सरकार की ओर से हमारे जैसे बच्चों के लिये बहुत सारी योजनायें चलाई जा रही है जिसमें बच्चों को पढ़ने लिखने के साथ साथ कुछ काम धंधा सिखाने की भी शिक्षा दी जाती है।

अजीत– और वह जगह कहां पर है?

सुमीत– वह जगह हमारे इसी शहर में है। दरोगा साहब यह भी बोल रहे थे कि स्कूल कब से शुरू हो रही है, इसकी तिथि अभी निश्चित नहीं हुई है और जैसे ही निश्चित होगी मैं स्वयं या किसी दूसरे के माध्यम से खबर करूंगा।

अजीत– यह तो बहुत अच्छी सूचना है यार। काश यही मार्गदर्शन पहले मिल जाता तो हम बहुत कुछ अपमानित होने से बच जाते। उस दिन की घटना ने मुझे अंदर तक हिलाकर रख दिया था। वो तो भला हो दरोगा साहब का की जिसने थाने में हमसे सखती नहीं बरती। अगर सख्ती बरती होती तो सच में मैं तो वहां से निकलकर आत्महत्या ही कर लेता। आज भी भीड़ की मार जब मुझे याद आती है तो अपने से ही नजरे मिलाने की हिम्मत नहीं होती। यह तो दरोगा साहब की भलमनसाहत है कि वह अपने जिम्मेदारी पर हम पर विश्वास करके छोड़ दिया और कम से कम मैं जिन्दा हूं।

सुमीत– हां यार अजीत। तुम सही कह रहे हो। इससे पहले भी बहुत से लोग हमसे बोलते थे, यहां तक की घरवाले भी बार–बार बोलते थे कि थोड़ा बहुत पढ़ लिख लो, यह नशा और आवारागर्दी छोड़ दो पर कभी बात मन तक पहुंची भी नहीं। पता नहीं दरोगा साहब के कहने में ऐसा क्या था कि मन उसी क्षण निश्चय कर लिया कि बहुत हुआ गलत राहों पर चलना, अब और नहीं। दरोगा साहब के अपनापन ने मन की सारी जटिलताओं, कुटिलताओं और गंदगी को साफ करके रख दिया।

अजीत– हां सुमीत। दरोगा साहब हमारे लिये तो भगवान बनकर आया है। अब चाहे कुछ भी हो जाये उनके विश्वास को टूटने नहीं देंगे। चाहे आगे पढ़ लिख पायें या ना पायें, कम से कम कोई गलत काम तो करेंगे ही नहीं।

सुमीत– यार अजीत हम पढ़ेंगे भी और काम भी सीखेंगे। दरोगा साहब बोल रहे थे कि सरकार एक ऐसा स्कूल खोलने जा रही है, जिसमें बच्चों की ईच्छा के अनुसार विषय पढ़ाया जायेगा। किसी को गणित पढ़ने का मन नहीं है तो वह बिना गणित के ही पढ़ाई कर सकता है। इसी प्रकार अन्य विषयों के संदर्भ में भी है।

अजीत– हां यार। अगर ऐसा है तब तो कोई दिक्कत ही नहीं है। आखिर हम दोनों कुछ विषयों को समझ नहीं सकने के कारण ही तो स्कूल जाना बंद किये थे न।

अभी सुमीत और अजीत बात कर ही रहे थे कि दुकानदार ने बोला ऐ अजीत यह तुम्हारा सामान पूरा हो गया। पैसा दो और सामान अपने थैले में रख लो। अजीत दुकानदार को पैसा देकर सामान थैले में रखा और सुमीत से बोला – ठीक है यार सुमीत अभी चलता हूं। बाद में मैं खुद तुम्हारे घर मिलने आऊंगा और अगर इस बीच और कुछ नया खबर मिलता है तो जरूर बतलाना। यह बोलने के बाद अजीत अपने और सुमीत अपने घर की ओर जाने लगते हैं। रास्ते में दोनों के मन में यह विचार बार बार उमड़–घुमड़ के आ–जा रहा है कि आगे उनका जीवन कैसा होगा, यह बहुत कुछ उनके स्कूल जाने पर निर्भर करेगा और वे अब इस अवसर को अपने हाथ से कभी बाहर नहीं होने देंगे।।

****

शासन के निर्देशानुसार सभी जिलों से निर्धारित समय पर जानकारी राज्य कार्यालय में पहुंच गई। प्राप्त जानकारी की समीक्षा करने के उपरांत अधिकारियों द्वारा ऐसे बच्चों के लिये दो प्रकार के विद्यालयों में शिक्षा की व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया। समीक्षा में यह पाया गया कि कुछ बच्चे ऐसे हैं, जिन्हें शाला की गतिविधियां रोचक बनाकर उनके मूल शाला में ही पढ़ाया जा सकता है। हांलाकि ऐसे बच्चों की संख्या बहुत कम थी। दूसरे ऐसे बच्चे जिन्हें पढ़ाई की मुख्य धारा में जोड़ने के लिये विशेष योजना व परिश्रम की आवश्यकता थी, उनके लिये एक नई स्कूल व्यवस्था स्थापित करने का निर्णय लिया गया और इसे ''मेरे कल्पनाओ की पाठशाला'' (School of My Imagination = SOMI) का नाम दिया गया एवं उन बच्चों को शिक्षा देने की व्यवस्था की जानी थी जो विषयगत कठिनाईयों के कारण किसी विषय को पढ़ना ही नहीं चाहते थे और साथ ही साथ कुछ काम धंधे भी सीखना चाहते थे। यहां विषय प्रस्तुतीकरण के लिये सभी प्रकार के नवाचारों की समुचित व्यवस्था की गई और बच्चों को उनके घर से शाला तक लाने के लिये परिवहन की भी। प्रत्येक पांच ग्राम पंचायत के बीच में एक ''सोमी'' खोलने का निर्णय लेकर शिक्षा सत्र के पहले ही दिन 16 जून को विद्यालय आरंभ करने की घोषण की गई।

जैसे ही अखबारों व टी.वी. समाचार प्रसारण के माध्यम से यह खबर लोगों के बीच पहुंची, सभी लोगों ने सरकार की इस योजना की जमकर तारीफ किये। हर गली चौक, चौराहे, हाट– बाजार, पान और चाय की दुकान के अलावा घरों में भी केवल इसी बात की चर्चा होती थी। कोई कहता सरकार के इस कदम से गरीब परिवार के बच्चों का बहुत भला होगा। बेचारे अपने गरीबी व अन्य घरेलू जिम्मेदारियों के कारण समय पर स्कूल नहीं पहुंच पाते थे और धीरे धीरे स्कूल जाना ही छोड़ देते थे। अब कम से कम उन्हें अपनी सुविधा के अनुसार स्कूल जाने को मिलेगा और ऐसे में पढ़ भी लेगा। कोई कहता की इन स्कूलों का लाभ उन बच्चों को ज्यादा मिलेगा जिन्हें एक दो विषय कठिन लगने के कारण सभी विषयों की पढ़ाई छोड़ देना पड़ता था, जबकि शेष विषयों में उनकी रूचि व समझ दोनों ही

अच्छा होता था। कोई कहता यह विद्यालय तो काफी पहले ही खुल जाना चाहिये था। बहुत से बच्चों का भविष्य बर्बाद होने से बच जाता। अब इस विद्यालय में बच्चे पढ़ने के साथ साथ अपनी रूचि के अनुसार काम धंधे सीखकर भविष्य में उसका उपयोग अपने आजीविका चलाने में कर सकते हैं और गुमराह होने से बच सकते हैं। कोई कहता की यह विद्यालय लड़कियों के लिये सबसे अच्छा है। उनको कई बार इस कारण विद्यालय छोड़ना पड़ जाता था कि घर से विद्यालय के रास्ते उन्हें कई प्रकार के अनचाहे स्थितियों का सामना करना पड़ता था और अब यहां शासन द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली परिवहन व्यवस्था से आयेंगे जायेंगे, तब ऐसी स्थिति निर्मित ही नहीं होगी। कुछ लोग तो इस योजना की प्रशंसा में यहां तक कह रहे थे कि देखना एक दिन इन्हीं स्कूलों के विद्यार्थियों की संख्या सबसे ज्यादा रहेगी। अपनी बातों के प्रमाण देते हुये कहते है कि इन शालाओं में सरकार ने उन सभी नवाचारी गतिविधियों को कार्यान्वित करने का निर्णय लिया है जो आज के समय के अनुसार प्रासंगिक है और जिनमें इंटरनेट का उपयोग, डिजिटल, प्रस्तुतीकरण की व्यवस्था, शिक्षण सामग्रियों का अधिकाधिक प्रयोग और सबसे बड़ी बात बच्चों को उनके मन के अनुसार पढ़ने लिखने की स्वतंत्रता।

ऐसा भी नहीं था कि इस योजना के आलोचक न रहे हों। पर आलोचना करने वालों की संख्या नगण्य थी। आलोचना करने वाले लोगों का मुख्य तर्क यह था कि जब बच्चे अपने घर, पारा, मोहल्ला के निकट के स्कूल में आने जाने में आना–कानी करते थे तब ऐसे बच्चे दूसरे गांवों में पढने कैसे चले जायेंगे। अरे क्या पहले से स्थापित स्कूलों में यह सब व्यवस्था नहीं थी जो ''सोमी'' स्कूलों में की जा रही है। पर हां हम लोगों का तो यही कहना है कि जिस बच्चे को पढ़ना होता है वह कहीं भी और कैसी भी स्कूलों में पढ़ लेता है और जिसे नहीं पढ़ना है उसे ''सोमी'' तो क्या स्वर्ग की जैसी सुंदर स्कूल में डाल दो वह पढ़ेगा ही नहीं। देख लेना एक दिन यह योजना भी अन्य योजनाओं की तरह बंद हो जायेगी।

अखबार में प्रकाशित होने के बाद से ही इस योजना के संबंध में लोगों की प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में ही उच्च अधिकारियों तक पहुंच

रही थी। सभी अधिकारीगण इस बात से अति उत्साहित थे कि अधिकांश लोगो की प्रतिक्रियायें सकारात्मक है। उनका यह भी सोचना था कि जो मुट्ठी भर लोग इसकी आलोचना कर रहे हैं वे भी इसकी सफलता देखकर भविष्य में अपनी सोंच बदल देंगे। लेकिन इसी के साथ अधिकारियों के मन में इस बात की भी चिन्ता बढ़ती जा रही थी कि उन्हें लोगों के मन में उत्पन्न विश्वास को किसी भी सूरत में बनाये रखना होगा और वे सभी इसके लिये दिन रात मेहनत भी कर रहे थे। और चिंता हो भी क्यों न? लोगों की आशा और विश्वास का प्रश्न जो था। फिर अगर इस योजना की कार्यान्वयन व सफलता में थोड़ा बहुत भी कोर कसर रहा तो सारी जिम्मेदारी उन्हें के ऊपर ही तो आयेगी। अधिकारियों के लिये जस–अपजस की स्थिति जो बन गई थी।

''सोमी'' विद्यालयों की स्थापना के लिये बजट स्वीकृत हो चुका था। फिर भी विद्यालय भवन बनने में कुछ समय तो लगता ही। इस कारण अधिकारियों को यह स्पष्ट निर्देश था कि चिन्हांकित सभी जगहों पर विद्यालय अपने निर्धारित तिथि पर ही आरंभ हो, यह सुनिश्चित होना चाहिये। राज्य स्तर से लेकर विकासखण्ड और संकुल स्तर के सभी लोग विद्यालय भवन बनने तक, शाला संचालन हेतु वैकल्पिक व्यवस्था की तलाश में जुटे हुये हैं। चिन्हांकित जगहों पर कही किराये से तो कहीं जन सहयोग से भवनों की व्यवस्था की जा रही है। समुदाय भी सरकार के इस काम में कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग कर रही है। कुछ स्थानों में ही भवन किराये से लेना पड़ा। शेष जगहों में लोगों ने यह सोचकर की बच्चे उनके ही है, उनके बच्चो का ही भविष्य बनेगा, सुधरेगा, स्वरस्फूर्त रूप से अपने खाली भवनों को इस कार्य के लिये सहर्ष देने को तैयार हो गये। पढ़े लिखे ऐसे लोग जो नई तकनीकों और नवाचार में रूचि रखते थे, अपनी सेवायें देने के लिये आगे आने लगे। इस बीच ऐसे सभी जगह जहां समुचित भवन उपलब्ध हो गया था, सभी आवश्यक सामान आने शुरू हो गये थे। समुचित तैयारी पूर्ण हो जाने के बाद जैसे जैसे समय नजदीक आते जा रहा था, संबंधित लोगों की उत्साह बढ़ते ही जा रही थी। अब तैयारी पूरी होने में केवल एक बात शेष रह गई थी और

वह थी चिन्हांकित बच्चों को शाला आरंभ होने की सूचना देना। यद्यपि समाचार पत्र व टी.वी. के द्वारा इस संबंध में पहले ही घोषणा किया जा चुका था और विज्ञापनों के द्वारा इसकी निरंतरता भी बनाये रखा गया था फिर भी ऐसे प्रत्येक बच्चों के घरों तक जाकर सूचना देने का अपना ही महत्व होता है। किसी व्यक्ति के द्वारा सीधा बच्चों के घरों में जाकर उनके माता पिता को बतलाने से पूरा परिवार यह सोचता है कि शासन और प्रशासन को उनकी कितनी चिंता है और जब सरकार हमारे हित के लिये यह सब कुछ कर रही है तब हमारा भी यह दायित्व बनता है कि अपने कर्तव्यों का निर्वहन अच्छे ढंग से करें और लोगों में इस सोच का विकसित होना ही किसी योजना की सफलता की पहचान होती है।

मंत्री महोदय द्वारा पल–पल की जानकारी ली जा रही थी। उन्हें यह भी जानकारी हो चुकी थी कि बच्चों को इस नवीन विद्यालय में लाने के लिये लोगों का ''स्वयं सेवी समूह'' हर पंचायत स्तर पर पहले से ही तैयार कर ली गई है। साथ ही अधिकारियों के द्वारा शाला आरंभ होने की तिथि 16 जून को सभी प्रवेश लेने वाले बच्चों व उनके अभिभावकों को सम्मानित करने की योजना भी बनाई जा चुकी है। मंत्री महोदय स्वयं ऐसे कुछ चिन्हांकित स्थलों का दौरा कर यह सुनिश्चित कर चुका था कि सभी आवश्यक व्यवस्थायें समय पर पूर्ण कर ली गई है और कहीं कुछ छोटी मोटी आवश्यकता की पूर्ति होना बाकी भी था, तो वह भी आरंभ होने की तिथि के कुछ पहले अनिवार्य रूप से पूरा कर ली जाती। मंत्री महोदय सभी प्रकार की तैयारी देखकर मन ही मन सोच रहा था कि सभी स्तर के अधिकारी व कर्मचारियों के द्वारा अपने दायित्व का निर्वहन पूर्ण निष्ठा व लगन के साथ किया गया है।

16 जून आने में अभी दो हफ्ते का समय शेष था। ऐसे ग्राम पंचायत जहां ''सोमी'' विद्यालय खुलना था वहां के सरपंच अपने पंचायत के सभी पंचों को साथ लेकर ऐसे बच्चे जिन्हें इन विद्यालयों में प्रवेश लेना था और जिसकी सूची उन्हें विद्यालय शिक्षकों के द्वारा प्राप्त हुआ था के घरों में जारहे थे और उन्हें आमंत्रण पत्र के द्वारा इस बात की सूचना दी जा रही थी कि 16 जून से ''सोमी''

विद्यालय आरंभ हो रही है। जिनके भी घरों में ऐसे बच्चे थे, जो एकदम शाला जाना बंद कर दिये थे और जिनके अभिभावक इस कारण हमेशा चिंता में डूबे रहते थे कि पता नहीं उनके बच्चों का क्या होगा, उनके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे। उन सभी के मन में उत्पन्न इस भाव को कोई भी पढ़ सकता था कि चलो देर ही सही हमारे बच्चों का भविष्य बन तो रहा है और प्रसन्नता हो भी क्यों न? माता पिता के लिये बच्चों से बढ़कर कोई भी नहीं होता। जिनके बच्चे चाहे वे लड़के हो या लड़की अच्छे निकल गये तो उनके लिये इसी धरती पर स्वर्ग अवतरित हो जाता है और जिनके बच्चे गलत राहों पर चल पड़े तो उनके लिये यह धरती नरक समान हो जाती है। आज ऐसे सभी पालकों के चेहरों पर स्वर्गिक आनंद की अनुभूति को कोई भी देखने वाला महसूस कर सकता था। सभी पालक अपने मन में विचार कर रहा है जैसे यह ''सोमी'' विद्यालय न होकर स्वर्ग का कोई द्वार हो, जिसकी सीढ़ी तक वे पहुंच चुके हैं और अब देर केवल दरवाजे में लगे ताले के खुलने का है। मन में यह विचार कर रहे हैं कि यह स्वर्ग निश्चित रूप से हमारी मान्यताओं और कल्पनाओं में जो स्वर्ग है उससे निश्चित रूप से सुंदर होगा और जिसे हम जीते जी ही देख सकेंगे।

****

दिन ढलने वाली थी। निक्कू की अम्मा ललिता घर की छोटी–मोटी काम निपटाकर गली के चौरे ऊपर बैठी थी। बैठे–बैठे सोच रही थी कि समय गुजरता है तब पता ही नहीं चलता की कब साल कटी और एक एक साल करके अठारह साल बीत गया। हां मेरी शादी को हुये अठारह साल तो हो गये। ऐसा ही वह भी गर्मी का ही दिन था, जब उसकी शादी हो रही थी। शादी के समय घर में सास ससुर, ननद, देवर सभी थे। पांच साल बाद जब उसका निक्कू पेट में ही था, ननद और देवर दोनों की शादी हो गई थी। ननद तो अपने ससुराल चली गई और देवर भी पुलिस की नौकरी में होने के कारण देवरानी को लेकर शहर में ही जाकर रहने लगा और तब से अब इन तेरह सालों में ननद और देवर दोनों कभी कभी ही खास मौके में गांव आये हैं। अभी मुश्किल से दो साल हुये है कि सास और ससुर दोनों ही कुछ कुछ समय के अंतराल में स्वर्ग सिधार गये। अब घर में केवल तीन सदस्य ही वह निक्कू और निक्कू के पापा ही बच गये थे। घरेलू जिम्मेदारी और अकेलेपन के कारण वह चिड़चिड़ी सी हो गई थी। आज शाम को उसे खाना बनाने का मन नहीं था, इसी कारण यह सोचंकर की कोई आते जाते मिल जाये तो उससे बात करके मन हल्का कर लिया जाये बाहर आकर चौरे पर बैठी यह सब सोच रही थी कि तभी उसे शुभम की अम्मा पार्वती वहां से जाते दिखी। सामान्य रूप से वह पार्वती से बात नहीं करती थी और पार्वती तो चाहते हुये भी उससे बात नहीं करती थी। यह डरकर की पता नहीं वह कब क्या उसे बोल दे। पार्वती जानती थी कि सामने ललिता बैठी हुई है, बिना उसकी ओर देखे नीचे सिर करके वहां से गुजर रही थी कि तभी उसे ललिता की आवाज सुनाई दी। पार्वती बहन। एक पल तो पार्वती को लगा कि शायद उसके कान को कुछ भ्रम हुआ है, फिर भी उसके कदम ठिठक सा गया और उसी क्षण उसे पुनः ललिता की आवाज सुनाई दी– पार्वती बहन कहां जा रही हो? आओ थोड़ा बैठ भी लो।

इस बार पार्वती को लगा कि उसे कोई भ्रम नहीं हुआ है बल्कि सचमुच ललिता उससे ही बात कर रही है। वह उसके करीब गई और बगल में जाकर बैठ

गई। उसके बैठते ही ललिता पुनः बोली– पार्वती बहन। मैं पुछ रही थी कि कहां जा रही हो।

पार्वती– कही नही बहन। ओ अनुसुईया के यहां दूध लेने जा रही थी। पार्वती को निर्धारित शब्दों में उत्तर देने के बाद चुप होते देखकर ललिता बोली– पार्वती बहन। लगता है तुम मेरे पिछले व्यवहारों से नाराज हो और नाराज होना भी चाहिये। मेरे व्यवहार ही ऐसा था कि कोई भी नाराज हो जाये। बहन मझे उसके लिये माफ कर दो। अब मैं आगे से तुम्हारे साथ कभी वैसा व्यवहार नहीं करूंगी।

ललिता का यह बदला हुआ व्यवहार पार्वती को अचरज में डाल रहा था। उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि यह वही ललिता है जो बात बात में किसी के साथ भी उलझ जाती थी और वह तो उसे कभी भी आंख फूटे अच्छी नहीं लगी है। उसके द्वारा इस प्रकार माफी मांगा जाना। पर पार्वती इसी बीच यह भी सोंच रही थी कि उसका पति और शुभम के पापा दोनों बचपन से लेकर अब तक कितने अच्छे दोस्त है और निक्कू और शुभम भी तो गहरे दोस्त हैं पर ललिता के मन में यह बात बैठ गई थी कि निक्कू ने जो स्कूल जाना छोड़ा था, उसका कारण उसका बेटा शुभम है और चूंकि वह शुभम की मां है और मां होने के नाते वह शुभम को कभी भी स्कूल जाने के लिये डांटे फटकारे नहीं इसलिये निक्कू के स्कूल नहीं जाने के लिये भी वह ही जिम्मेदार है और इसी बात को लेकर उन दोनों के बीच कभी कभी कहा सुनी भी हो जाती थी।

पार्वती को चुप देखकर ललिता उसके हाथ में अपना हाथ रखते हुये फिर से बोली– देखो बहन। मुझे अपने पिछले व्यवहार पर बहुत अफसोस है और उसी के लिये मैं तुमसे माफी मांग रही हूं। मुझे माफ कर दो।

पार्वती वैसे भी निर्मल मन और कोमल हृदय की थी। ललिता के द्वारा उससे इस तरह बार–बार माफी मांगना अच्छा नहीं लग रहा था और वह भावुक होकर उसके हाथ के ऊपर अपना हाथ रखते हुये बोली नहीं ललिता बहन। इसमें माफी मांगने की क्या बात है। हर मां की यह ईच्छा होती है कि उसके बच्चे अच्छे

से पढ़ लिखकर अपना भविष्य गढ़े और जब किसी का बच्चा उम्मीदों से एकदम विपरीत जाने लगे तो मन में दुःख और क्रोध उत्पन्न होना स्वाभाविक है। मैं तुम्हारे मन की चाहत और स्थिति दोनों को समझती थी। इसी कारण तुम्हारी बातों को मैंने कभी बुरा नहीं माना और जब बुरा नहीं माना तो नाराजगी या क्रोध कैसा?

पार्वती की बातों को सुनकर ललिता के मन को बहुत खुशी मिली और उसे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे सालों का थकान उसके शरीर व मन से पल भर में गायब हो गया हो। फिर भी वह पार्वती से बोली – नहीं बहन तुमको अपने मुंह से कहना पड़ेगा कि तुमने मुझे माफ कर दिया तभी मैं मानुंगी।

पार्वती को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था कि ललिता उसे बार बार माफ करने के लिये कह रही है क्योंकि वह ललिता को हमेशा अपनी बड़ी बहन जैसा समझती थी। फिर भी उसके मन रखने के लिये उसे कहना पड़ा देखो बहन। मैं सीधा–सीधा यह तो कभी नहीं कहूंगी की मैंने तुम्हें माफ किया, क्योंकि यह मेरी नजर में असभ्यता होगी। मैं तुममे हमेशा अपनी बड़ी बहन की छबि देखी हैं । इसलिये मैं अपने हृदय से यह बात तुमसे कह रही हूं कि मेरे मन में न तो कल तुम्हारे लिये कोई क्रोध था न आज है औन न आगे कभी रहेगा।

पार्वती की बातों से ललिता की आंखे छलकने वाली थी, लेकिन अपने को सम्हालते हुये पार्वती की ओर देखकर बोली– तुम कितनी अच्छी हो बहन। जानती हो जब अभी–अभी शुभम के पिताजी हमारे यहां बच्चों की पढ़ाई पर चर्चा करने आया था, तब उन दोनों का एक–दूसरे पर विश्वास और प्रेम देखकर मेरा मन द्रवित हो उठा था। मैं मन ही मन सोच रही थी कि इन दोनों में कितनी अच्छी दोस्ती है और हमारे बच्चों में भी। फिर मेरें मन में तुम्हारे लिये खटास क्यों? मैं एक दो बार निक्कू के पापा से बोली भी थी कि हमारे निक्कू के स्कूल नहीं जाने में सबसे बड़ा हाथ तुम्हारे दोस्त का बेटा शुभम का है। उससे आप कभी शुभम की शिकायत क्यों नहीं करते और उनसे शिकायत नहीं कर सकते तो निक्कू को ही मना करो कि वह शुभम की संगति से दूर रहे। और जानती हो इस पर निक्कू के पापा ने उल्टे मुझे डांटते हुये बोला था। निक्कू की अम्मा आज के बाद ऐसा दोबारा

मत बोलना। जानती हो हम लोग जितना निक्कू का ख्याल नहीं रखते, जितना उसे जानते और समझते नहीं, उससे ज्यादा दिनेश और पार्वती भाभी उसे जानते और समझते हैं और सच कहती हूं बहन मैं उसी दिन समझ गई थी कि कहीं न कहीं मुझसे गलती हुई है।

पार्वती, ललिता के बातों से भाव विभोर होकर बोली– मैं भी सच कह रही हूं बहन कि मैंने कभी भी निक्कू और शुभम में कोई अंतर नहीं किया। दोनों को बार बार प्रेम से समझाती थी कि बेटा पढ़ लिख लो। पर हां बहन मैं जोर नहीं डालती थी यह सोचकर की जोर जबरदस्ती की चीज स्थायी नहीं होती। और उस दिन की बात है जब मैं और शुभम के पापा शहर से आये थे। वहां की घटना को देखकर मैं उदास हो गई थी। मेरे चेहरे को देखकर दोनों बच्चे दौड़कर मेरे पास आये और बोले की आप चिंता मत करो। हम स्कूल जाकर जरूर पढ़ेंगे।

ललिता– हां बहन। निक्कू के पापा भी बतला रहे थे कि सरकार की ओर से ऐसे बच्चों के लिये एक अलग से स्कूल ''सोमी'' खोला जा रहा है। निक्कू के पापा तो यहां तक कह रहे थे कि हम अब भी निक्कू से यह नहीं कहेंगे कि वे ''सोमी'' में ही पढ़े। अगर उसको लगता है कि वह गांव की मुख्य स्कूल में होने वाले पढ़ाई से आगे बढ़ सकता है तो यहां भी पढ़ सकता है और उसकी ईच्छा '' सोमी'' में पढ़ने की होगी तब ''सोमी'' में पढ़ सकता है।

पार्वती– हॉ बहन। शुभम का भी यही कहना है। बोल रहा था कि अम्मा पहले यहीं के स्कूल में पढ़कर देखेंगे। यहां भी तो विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का काम किया जा रहा है और अगर फिर भी समझ नहीं पायेंगे तब तो ''सोमी'' है ही। पर अम्मा एक बात तो तय समझ लो हम पढ़ के तो रहेंगे चाहे यहां हो या वहां।

इससे पहले की ललिता कुछ और बोलती पार्वती उठते हुये बोली– अच्छा बहन अब चलती हूं। अनुसुईया के यहां से दूध भी लाना है। घर पहुंचते पहुंचते शुभम के पापा भी आ जायेंगे। और यह बोलकर पार्वती अनुसुईया के घर की ओर

चली जाती है। पार्वती के जाने बाद भी ललिता कुछ देर वहीं बैठी रही। दिन ढल चुका था। धीरे धीरे वातावरण में अंधेरा छाते जा रहा था। लोग अपने अपने घरों के दिये और बिजली जलाना आरंभ कर दिये थे। चारों तरफ अंधेरे के बीच घनों में जलने वाले बिजली के प्रकाश ऐसा लग रहा था मानों गहरे अंधेरी रात में जुगनु चमक रहा हो। ललिता अब भी अपने विचारों में डूबी वहीं बैठी हुई थी। उसे इस बात का भी सुध नहीं था कि घर पूरा अंधेरे में डुबा हुआ है और किसी भी समय निक्कू के पापा ऑफिस से घर आ सकता है। वह तो बस यही सोच रही थी कि आज उसके हृदय में पड़ा विशाल पत्थर का बोझ हट गया है। जैसे बाहर का अंधेरा बिजली जलने से छंटने लगा था, उसी प्रकार उसके मन का अंधेरा भी पार्वती से बातचीत करके छंट गया था। बाहर तो अब भी अंधेरे का एहसास हो ही जाता था, लेकिन ललिता के मन में अंधेरे का थोड़ा सा चिन्ह भी दिखाई नहीं दे रहा था। मन और हृदय दोनों पूर्ण रूप से प्रकाशमान हो गया था। विचारों में डूबी ललिता अब भी वहीं बैठी हुई थी कि तभी मोटर सायकल की तेज रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी और उसका ध्यान भंग हुआ। इससे पहले की वह कुछ बोलती, मोटर सायकल दरवाजे पर रूक गई और गाड़ी से उतरते हुये रमेश ने कहा– अरे निक्कू की अम्मा इतने अंधेरे में तुम घर के बाहर क्या कर रही हो? अरे कम से कम गली के पास वाले लाईट तो जला लेती।

ललिता अपने पति से बोली– अंधेरा। कहां है अंधेरा। मुझे तो अंधेरा नहीं दिख रही है।

रमेश – घर के अंदर घुसकर गली का लाईट जलाते हुये कहा– अरे ये कैसी बात कर रही हो? अंधेरा नहीं है तो प्रकाश भी कहां था?

ललिता– प्रकाश है निक्कू के पापा। और ओ भी कभी न बुझने वाली। मेरे मन में। मेरे हृदय में। मेरी सोच में। मेरी आंखों में।

****

गौकरण और सुमीत अपने घर में अजीत के आने की प्रतिक्षा कर रहे थे। अजीत कल ही सुमीत से बोला था कि वह 9 बजे तक कोई भी स्थिति में पहुंच जायेगा, लेकिन अब लगभग 11 बजने वाला था और अजीत का कुछ पता नहीं था। सुमीत मन में विचार कर रहा था कि ऐसा क्या जरूरी काम आ गया कि अजीत को देर हो रही है। एक तरफ तो यह सोचकर कि कहीं वह ऐन वक्त पर धोखा तो नहीं दे देगा मन में क्रोध उत्पन्न हो रहा था तो वहीं दूसरी तरफ यह सोचकर की कहीं उसके या उसके घर वालों के ऊपर कुछ संकट तो नहीं आ गया है, मन भयभीत भी हो रहा था। पर जितना वह अजीत को जानता था, उससे उसे नहीं लगता था कि अजीत कभी अपने बात से मुकरेगा। इससे पहले भी कई बार ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई थी लेकिन हर परिस्थिति में अजीत ने अपना वादा निभाया था। मन में तरह तरह के तर्क उत्पन्न होने के बाद सुमीत के मन से पहले वाली संभावना तो जाती रही और जैसे ही यह संभावना दूर हुई, दूसरी संभावना ने उसके मन को चारों तरफ से घेर लिया और अब वह पहले से ज्यादा भयभीत और चिंतित नजर आने लगा। उसके इस तरह के मनोभावों को देखकर वहीं पर बैठाउसका पिताजी गौकरण बोला– क्यों सुमीत। तुम्हें क्या लगता है कि वह तुम्हारा दोस्त आयेगा?

अपने पिताजी के बातों में छिपे तंज को समझते हुये सुमीत ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा – हां पिताजी। वह जरूर आयेगा।

गौकरण– अरे बेटा। उसे आना होता तो कब का आ गया होता। 9 बजे आने को बोला था और 12 बजने वाला है। मुझको तो लगता है कि लड़का धोखा दे रहा है।

सुमीत– नहीं पिताजी। मैं बार बार कह रहा हूं कि अजीत धोखा देने वालों में से नहीं है। लगता ह्रै कि वह किसी जरूरी काम में फंस गया है।

गौकरण– ऐसा कर बेटा। जब अजीत आ जायेगा तब वह अकेले ही दरोगा साहब से जाकर मिल लेगा। हम लोग मिलकर आ जाते हैं। वैसे भी दरोगा साहब हमें 11 बजे तक आने के लिये बोले थे और अब 12 बज रहे हैं। थोड़ा और देर करेंगे तब पता नहीं दरोगा साहब मिलेंगे भी या नहीं। मुझे तो डर है कि कहीं वह नाराज न हो जाये।

सुमीत– हां पिताजी। आप ठीक कह रहे है। पर मेरा मन अब भी कहता है कि अजीत जरूर आयेगा। बस 15 मिनट और देख लेते हैं पिताजी। उसके बाद आप जैसा बोलेंगे मैं करूंगा।

गौकरण – ठीक है बेटा। जब तुम इतना विश्वास से कह रहे हो, तब 15 मिनट और रूक जाते हैं। पर 15 मिनट मायने 15 मिनट 16 मिनट नहीं होना चाहिये। वैसे भी देर होने के कारण अब दरोगा साहब के घर में होने की संभावना तो कम ही है और हमको सीधा थाने में ही जाकर मिलना पड़ेगा।

अपने पिताजी के चुप हो जाने के बाद सुमीत अपने कमरे में ही बेचैनी के साथ इधर–उधर चहल कदमी करने लगा। सुमीत इधर–उधर चहल–कदमी कर रहा था और गौकरण का ध्यान उधर बार बार घड़ी पर लगा हुआ था। पांच के बाद छः, सात, आठ और ऐसे मिनट दर मिनट घड़ी की सुई आगे बढ़ने लगी और अभी 15 मिनट पूरे होने में पांच मिनट शेष ही था, लेकिन सुमीत के चेहरे का रंग फीका पड़ते जा रहा था और उसी समय सुमीत के घर के सामने एक आटो के रूकने की आवाज आई । सुमीत और गौकरण दोनों आवाज सुनकर पहले तो चौंकते हैं कि इस समय उनके घर कौन आया होगा। किसी मेहमान के आने की तो कोई सूचना थी नहीं और अजीत आटो में आयेगा, इसकी संभावना तो दूर दूर तक न थी। ऐसा ही सोचते दोनों अपने घर के बाहर निकले और जैसे ही उन दोनों की नजर आटो से उतरने वाले शख्स पर पड़ा दोनों के मुंह से एक साथ निकला। अरे अजीत तुम और ये तुम्हारे पैर को क्या हुआ?

अपने पिताजी के साथ घर के अंदर आते हुये अजीत दर्द से कराह रहा था। उसके कराहने की आवाज से द्रवित होकर सुमीत और उसके पिताजी गौकरण अजीत को उठाकर कमरे के अंदर बिछे पलंग पर बैठाने लगे। जैसे ही अजीत पलंग पर बैठा, वैसे ही सुमीत के पिताजी गौकरण ने अजीत से पूछा– बेटा यह कैसे हो गया?

इससे पहले की अजीत कुछ बोलता। अजीत के पिताजी ने बतलाना शुरू किया– क्या बतलाऊ भाई। आज सुबह से ही अजीत बहुत प्रसन्न था। बार बार घर में बतलाते रहता था कि 16 जून से उनके जैसे बच्चों के लिये शहर में ''सोमी'' विद्यालय खुलने वाला है और वहीं भर्ती करने के संबंध मे उसे और सुमीत को दरोगा साहब ने घर मिलने के लिये बुलाया है। अजीत मुझे भी बोला पिताजी आप भी मेरे साथ चलिये और दरोगा साहब से मिल लीजिये। बस तैयार होकर मैं और अजीत आप लोगों के घर आने के लिये पैदल ही निकल गये। घर से थोड़ी दूर ही निकले थे कि एक बदमाश लड़के ने जोर से मोटर सायकल चलाते हुये अजीत को टक्कर मार दिया और फिर क्या अजीत वहीं पर गिरकर बेहोश हो गया। लोगों की मदद से उसे अस्पताल लेकर गया और वहां डॉक्टरों ने कहा कि पैर में हल्का सा फ्रैक्चर आया है, प्लास्टर करना पड़ेगा और फिर प्लास्टर लगा दिया। अरे यह अजीत तो जिस समय से होश में आया था उसी समय से रट लगा रहा था कि मुझे अभी कोई ईलाज विलाज नहीं कराना है। पहले सुमीत के घर चलो और फिर वहां से दरोगा साहब के यहां। उसके बाद ही ईलाज कराना। पर मैं और डॉक्टर नहीं माने और इस तरह प्लास्टर होने के बाद सीधा आपके घर ही आ रहे हैं।

अजीत के पिताजी की बातों को सुनकर सुमीत के पिताजी की आंखे डबडबा गई। वह मुंह से तो कुछ बोला नहीं पर मन ही मन सोचने लगा कि क्या हुआ जो उनके बेटे दूसरों के समान पढ़ाई जारी नहीं रख सके। यह कुछ तो हमारी परिस्थिति और कुछ बच्चों की रूचि नहीं होने के कारण हुआ, पर एक मनुष्य में

जिस सच्चे गुण की जरूरत होती है और ओ बात पर कायम रहने की है, वह इन दोनों बच्चों में भगवान ने कूट कूट कर भरा है। ऊपर देखकर भगवान को धन्यवाद देते हुये मन ही मन कहा– वाह भगवान। अब मैं मान गया कि कोई इंसान चाहे जितना भी बुरा क्यों न हो उसमें भी आप कोई न कोई अमूल्य गुण भरे होते हैं जैसे मेरे बेटे और उसके दोस्त में। और अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि ये दोनों बच्चे दरोगा साहब के विश्वास व मेहनत को कभी व्यर्थ न जाने देंगे।

अपने पिताजी को ऊपर की ओर कुछ बोलते हुये देखकर सुमीत ने पूछा– क्या हुआ पिताजी। आप कुछ सोच रहे हैं?

अपने बेटे की ओर देखते हुये गौकरण ने कहा– कुछ नहीं बेटा। अब जल्दी चलो दरोगा साहब से मिलने।

अपने पिताजी की बातों से सहमति जताते हुये सुमीत अपने पिताजी और अजीत तथा उसके पिताजी के साथ उसी आटो में बैठकर उरोगा रणवीर सिंह से मिलने पुलिस थाना की ओर जाने लगे। अजीत के चेहरे पर अब भी दर्द का भाव था, पर शायद यह दर्द का भाव उस प्रसन्नता और खुशी के सामने कोई महत्व नहीं रखता जो प्रसन्नता इस समय अजीत के हृदय में उत्पन्न हो रहा था।

****

निक्कू और शुभम तालाब के किनारे आम के पेड़ की नीचे बैठे बैठे ऊपर पेड़ पर चिड़ियों के चहचहाने और उड़ उड़कर इस डाली से उस डाली पर बैठने को एकटक निहार रहे थे। ऐसा नहीं था कि आज से पहले उन दोनों ने चिड़ियों की इन गतिविधियों को नहीं देखा था। रोज देखते थे और बार बार देखते थे। पर आज चिड़ियों के खेलने कूदने को देखकर उन दोनों के मन में जो भाव और प्रसन्नता उत्पन्न हो रही थी, वैसा कभी पहले नहीं हुआ था। दोनों काफी देर तक बैठे देखते रहे। दोनों का मन चिड़ियों पर जाकर केन्द्रित हो गया था। ऊपर देखते देखते ही निक्कू ने कहा– यार शुभम्। इन चिड़ियों का इस तरह चहकना, खेलना–कूदना कितना अच्छा लग रहा है न। ऐसा लगता है कि सारे संसार की प्रसन्नता इन चिड़ियों के मन में ही समा गई हो।

हां यार निक्कू। पर प्रसन्न होने के लिये तनाव रहित जीवन का होना जरूरी है– शुभम ने कहा।

तो तुम्हारा मतलब है चिड़ियों के जीवन में कोई तनाव नहीं होता। यार मैं तो यह मान ही नहीं सकता कि कोई भी प्राणी तनाव रहित होता होगा। अब इन चिड़ियों को ही ले लो इन्हें भी अपने भोजन, सुरक्षा, बच्चे व आवास की तो चिंता होगी ही न। निक्कू ने कहा।

यार मुझे जैसा समझ में आया, मैंने तुम्हें बतला दिया। अब और कुछ हो सकता है तो वह तुम बतलाओ– शुभम ने निक्कू की ओर देखते हुये कहा।

निक्कू बोला– शुभम। मुझे तो लगता है कि हर प्राणी के लिये प्रकृति ने कुछ स्वाभाविक कार्य बना दिये हैं और अगर वह प्राणी अपना स्वाभाविक कार्य करता है तब उसके जीवन में तनाव उत्पन्न होने का कोई कारण ही नहीं बनता। जैसे इन चिड़ियों को ही ले लो। अपने बच्चों के लिये घोंसला बनाना, उन्हें बड़े होते तक भोजन लाकर देना, अपनी स्थिति परिस्थिति के अनुसार उनकी सुरक्षा करना और समय आने पर उन्हें यह सारी चीजें सीखा देना उनका स्वाभाविक कार्य है

और जब इन कार्यों को वे कर लेते हैं तो फिर तनाव का कारण ही नहीं बचता। निक्कू की बातों को समझते हुये शुभम ने पूछा– निक्कू तो फिर इंसान क्यों तनाव में रहते हैं, क्या वे लोग अपने स्वाभाविक कार्यों को नहीं करते हैं? निक्कू ने कहां– शुभम क्या तुम्हारा ईशारा हमारी ओर है? शुभम ने सिर हिलाते हुये अपनी सहमति व्यक्त की और चुपचाप फिर से आम के पेड़ के ऊपर की ओर देखने लगा। उसे शान्त देखकर निक्कू ने कहा– शुभम अगर तुम्हारा संकेत हम दोनों के तनाव में रहने के तरफ है तो यह बात स्पष्ट है कि हम अपने स्वाभाविक कार्यों को नहीं कर रहे हैं। चूंकि हम अभी बच्चे हैं और हमारे जैसे ही सभी बच्चों का स्वाभाविक कार्य सीखना है और तुम तो जानते हो कि इंसान पढ़ लिखकर ही सीख्ता है और हम दोनों यही काम नहीं कर रहे हैं। इस कारण मन में हमेशा यह भय बना रहता है कि हमें कोई कुछ बोले न, टोके न। दूसरी बात यह है कि जब हम अपने अभी के लिये निर्धारित स्वाभाविक कार्यों को नहीं कर रहे हैं तब आगे के लिये निर्धारित कार्य भी प्रभावित होंगे जो हमारे लिये सतत् रूप से तनाव का कारण बनते रहेंगे।

शुभम ने पूछा– तो निक्कू। आगे हम लोग इन्हीं चिड़ियों की तरह चहकते रहें, इसके लिये क्या सोचा है।

निक्कू– शुभम। इसमें सोचना क्या भाई। हम तो पहले ही यह तय कर लिये हैं न कि अब इस सत्र में जब स्कूल आरंभ होगी, तब स्कूल जाना आरंभ करेंगे। अरे शुभम भूल गये? तुम्हारी अम्मा, मेरी अम्मा और पिताजी सभी लोग कितने चिंतित रहते थे, क्योंकि उनको लगता था कि वे लोग अपने स्वाभाविक कार्यों का नहीं कर रहे हैं और तुम्हारी अम्मा तो शहर से आने के बाद बहुत ही उदास भी रहने लगी थी। ओ प्रसन्न कैसे हुई? यह तुम जानते ही हो। हम दोनों को ही कहना पड़ा की आगे हम स्कूल पढ़ने जरूर जायेंगे।

शुभम ने कहा– निक्कू मेरे पापा बतला रहे थे कि इस सत्र से एक नई स्कूल ‘‘सोमी’’ भी खोला जा रहा है, जहां बच्चों को उनकी ईच्छा के अनुसार

विषय पढ़ने के साथ–साथ अपने रूचि व कौशल के अनुसार कुछ काम धंधे भी सिखाया जायेगा। पर यह विद्यालय हर गांव में न खुलकर, पांच ग्राम पंचायतों पर एक खुलेगी और हमारे गांव के नजदीक सीतागढ़ी पंचायत में खोली जा रही है और दूसरे प्रकार की स्कूल तो वहीं है जो सभी गांवों में है। हां इतना जरूर किया गया है कि इन स्कूलों को पहले की अपेक्षा काफी आधुनिक, रोचक व आकर्षक बनाया गया है। अब यह बतलाओ की इन दोनों स्कूलों में से हमें कहां सीखने जाना है?

निक्कू– यह सभी बातें तो मैं भी जानता हूं शुभम। उस दिन पापा ने मुझे अपने पास बिठाकर विस्तार से बतलाया था और अभी अभी जो मैंने तुमसे वह सभी प्राणी जगत के स्वाभाविक कार्यों के बारे में बतलाया था ना, वह सब कुछ पापा ने मुझे समझाते हुये कहा था और साथ में यह भी कहा था कि शुभम को भी यह बात विस्तार से बतला देना । यह सब कुछ समझाने के पीछे पापा का उद्देश्य यह था कि शाला में हमारा पुनः प्रवेश किसी भी प्रकार से डर, दबाव या जबरदस्ती ढंग से न हो। जो भी हो वह हमारे मन से हो। क्योंकि खुद के मन से किया गया कार्य ही सफल होता है।

शुभम– हॉ निक्कू। यह तो तुमने ठीक कहा है। मेरे घर में भी अम्मा पापा दोनों बोले हैं कि देख बेटा जब तुम कल स्कूल नहीं जाते थे, तब भी हम लोगों ने तुझ पर स्कूल जाने के लिये कभी दबाव नहीं डाला और अब आज जब तुम खुद स्कूल जाने के लिये तैयार हुये हो, तब भी हम यह नहीं कहेंगे की तुम ''सोमी'' स्कूल में पढ़ो, या गांव के स्कूल में। दोनों स्कूल की व्यवस्थाओं के बारे में हम लोगों ने बतला दिया है। अब तुम्हें निर्णय लेना है कि कहां प्रवेश लेना है। तो निक्कू अब यह बतलाओ की हमें कहां प्रवेश लेना है।

निक्कू– शुभम! इस संबधं में सोच विचारकर मैंने निर्णय लिया है कि हम दोनों गांव के ही स्कूल में प्रवेश लें। इससे हमें दो फायदे होंगे– प्रथम हमको अपने

अपने माता पिता का स्नेह व मार्गदर्शन सतत् रूप से मिलता रहेगा और दूसरा हमारे गांव के ही स्कूल में प्रवेश लेने से अन्य बच्चे भी प्रेरित होंगे।

शुभम–– यार निक्कू। अब स्कूल खुलने में देर ही कितना है। आज चौदह जून हो गया है और परसों सोलह जून से स्कूल खुल जायेगी। स्कूल छूटे महीनों हो गये, इस कारण मन में अभी से तनाव उत्पन्न हो रहा है। पता नहीं हम आगे पढ़ पायेंगे भी की नहीं।

निक्कू– तुम चिन्ता क्यों कर रहे हो? मेरी स्थिति भी तुमसे कोई अलग नहीं है। कोशिश करना हमारा कर्तव्य है और मान लो कोई कारण से मुख्य धारा वाली स्कूल में हम सामंजस्य नहीं बैठा पाये तो अपना ''सोमी'' स्कूल तो है ही। वहां चले जायेंगे।

शुभम– हां यार निक्कू। ऐसा ही करेंगे।

शुभम के बोलने के बाद निक्कू ऊपर पेड़ की तरफ देखता है तो वहां बैठे चिड़िया पेड़ के ऊपर आसमान में चहचहाते हुये उड़ान भर रहे हैं। निक्कू शुभम के कांधे पर हांथ रखते हुये ईशारों में उससे कहता है कि वहां बैठे चिड़ियों की ऊंचे आसमान में उड़ान देखो जैसे यह चिड़िया उड़ उड़ के उन दोनों से कह रहे हों कि अपना स्वाभाविक कार्य करो, तनाव रहित हो और प्रसन्न होकर जितनी चाहे उतनी ऊंचाई तक उड़ लो। शुभम और निक्कू दोनों एक बार एक दूसरे के चेहरे को और एक बार चिड़ियों के तरफ देखते जिनकी उड़ान की ऊंचाई हर बार बढ़ रही है और इसी के साथ निक्कू और शुभम के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव भी बढ़ती जा रही है।

****

आज 16 जून है। इस दिन का सभी गांव वालों को बेसब्री से इंतजार था। उन लोगों को भी जिनके यहां के बच्चे स्कूल जाना छोड़ दिये थे और उन लोगों को भी जिनके यहां बच्चे प्रतिदिन स्कूल जाते थे। ऐसे पालक जिनके बच्चे स्कूल जाना बंद कर दिये थे, वे लोग यह सोच रहे थे कि चलो देर से ही सही सरकार ऐसे बच्चों की सुध लेते हुये उनके भविष्य को गढ़ने के लिये कोई अच्छी नीति तो लेकर आई, जहां उनके बच्चे अपने जीवन बना सकने में समर्थ होंगे। दूसरी बात उनकी प्रसन्न होने का कारण यह था कि पहले जहां बच्चे बार बार के समझाने बुझाने के बावजूद स्कूल जाने को तैयार नहीं हो रहे थे, वहीं अब ये बच्चे बार बार पूछते और बोलते थे कि 16 जून आने में इतनी देर क्यों हो रही है। वे लोग जिनके बच्चे प्रतिदिन स्कूल जाते थे, वे इस कारण प्रसन्न हुये कि उनको लगा कि जब समाज के सभी बच्चे पढ़ेंगे लिखेंगे तब समाज का स्वस्थ विकास होगा, समरसता बढ़ेगी और भाई–चारा की भावना से प्रेरित होने के कारण हिंसा का कोई स्थान नहीं होगा।

इस दिन क्या शहर और क्या गांव सभी जगह ऐसा माहौल था मानों कोई बहुत बड़ा सामाजिक पर्व का दिन हो। शहर के ऐसे वार्ड, ग्राम पंचायत जहां ''सोमी'' विद्यालय की स्थापना हो रही थी वहां गहमा–गहमी सुबह से ही आरंभ हो गई थी और हो भी क्यों न? उच्च कार्यालय से इस संबंध में स्पष्ट निर्देश था कि सर्वे में पाये गये ऐसे सभी बच्चों में से काई भी बच्चा प्रवेश लेने से वंचित न रहे। इसके लिये करीब एक माह पहले से ही प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में विज्ञापन के अतिरिक्त प्रत्येक गाम पंचायत के सरपंच और पंचों को कहा गया था कि वे व्यक्तिगत रूप से ऐसे पालकों से मिलकर उन्हें उस दिन ''शिक्षा पर्व'' में उपस्थित होने हेतु आमंत्रित करें। इसके साथ साथ सभी गांवों के उत्साही नवयुवक और नवयुवतियां भी कला पथक के रूप में इस विद्यालय से संबंधित योजनाओं और विशेषताओं को नाटक, गीत, संगीत के माध्यम से प्रचार प्रसार

कर रहे थे। सभी के सम्मिलित परिश्रम व लगन का प्रतिफल था कि आज सबेरे से ही सभी जगह का माहौल उत्साहमय बना हुआ है।

दरोगा रणवीर सिंह स्वयं सुमीत और अजीत के घरवालों के साथ ''सोमी'' विद्यालय में समय पर उपस्थित हो गया था। प्रवेश देने के कार्यक्रम में बस कुछ ही पल की देरी थी। प्रशासन व विभाग के आला अधिकारी इस मौके पर उपस्थित है और उन्हें इंतजार शहर की मेयर श्रीमती रेखा यादव की थी जो किसी भी क्षण वहां पहुंच सकती थी। मुख्य अतिथि के आने के पहले जितने भी आगन्तुक लोग थे, सभी ने घूम–घूमकर ''सोमी'' विद्यालय की व्यवस्था देखी। दरोगा के साथ सुमीत और अजीत ने भी देखा। देखते समय दरोगा साहब बीच–बीच में सुमीत और अजीत को बतलाते भी जाता था कि यहां तुम लोग बैठकर बढ़ोगे, यहां विज्ञान का प्रयोग करोगे, ओ किनारे गणित और भाषा कार्नर है, वहां खेल का मैदान है, वहां पर आजीविका से संबंधित जो काम करना चाहोगे उसे बैठकर सीखोगे, ओ उधर मेदान में तुम लोग जिस बस से बैठकर आना–जाना करोगे, उसके रूकने की व्यवस्था रखी गई है, वहां खाना बनाने का रसोई घर है इत्यादि। सुमीत और अजीत के साथ उन्हीं के समान अन्य बच्चे भी ''सोमी'' विद्यालय भवन और उसके प्रांगण के एक एक जगह को घूम–घूमकर देख रहे थे और प्रसन्न भी हो रहे थे।

इसी बीच लाउडस्पीकर पर एनाउन्स की जाती है कि शहर की मेयर श्रीमती रेखा यादव मंच पर पधार चुकी है और अब उनके द्वारा वर्णमाला के प्रथम अक्षर से आरंभ होने वाले एक छात्र/छात्रा को अपने हांथों से प्रवेश देकर इस विद्यालय का औपचारिक शुभारंभ किया जायेगा। संयोगवश वर्णमाला के प्रथम अक्षर से आरंभ होने वाले छात्र/छात्रा के नाम की श्रृंखला में अजीत को भी मंच पर आमंत्रित किया जाता है। आरंभ में तो अजीत अपना नाम सुनकर मंच पर जाने से हिचकता है पर दरोगा साहब और सुमीत के द्वारा ईशारों में हिम्मत पाकर वह मंच पर जाता है और मेयर महोदया द्वारा अजीत का पुष्पमाला वह तिलक लगाकर

कक्षा आठवीं के पंजी में नाम दर्ज किया जाता है। उपस्थित सभी जन समुदाय तालियों की गड़गड़ाहट के साथ अजीत और फिर उसी के समान अन्य बच्चों के प्रवेश का स्वागत करते हैं।

प्रवेश की प्रक्रिया संपन्न होने के बाद ''सोमी'' विद्यालय के प्रभारी श्री मोहन प्रकाश जी, मेयर महोदया को दो शब्द बोलने के लिये मंच पर पुनः आमंत्रित करता है, मंच पर आकर यादव मैडम कहती है– सोमी विद्यालय के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित सभी अभिभावकगण जन प्रतिनिधि, प्रशासन के अधिकारी एवं मेरे प्यारे बच्चों। आज मैं इतना प्रसन्न हूं कि जिसका वर्णन भी नहीं कर सकती । आप लोगो को याद होगा कि इससे पहले भी शिक्षा सत्र के आरंभ में शाला त्यागी बच्चों को शाला में प्रवेश दिलाया जाता था। प्रवेश के समय कार्यक्रमों का आयोजन भी होता था, लेकिन उसके बाद का माहौल फिर वहीं का वहीं रह जाता था जैसे पहले रहता था। कारण स्पष्ट है। उस समय बच्चों को जो प्रवेश दिया था या दिलाया जाता था, वह बच्चों की बिना सहमति के होती थी। इसी कारण बच्चे एक दो दिन तो स्कूल आते थे और उसके बाद फिर वहीं अपने पुरोन ढर्रे पर चले जाते थे। कुछ समय तक पालक व अधिकारी भी उन्हें पुनः लाने का प्रयास करते थे लेकिन केवल औपचारिकता निभाने के लिये। लेकिल यह जो नवीन संस्था इससत्र से आरंभ हो रही है, उसके संबंध में मुझे सौ प्रतिशत विश्वास है कि पूर्ण रूप से सफल होगी और इसका कारण स्पष्ट है – प्रथम इन संस्थाओं में प्रवेश लेने वाले सभी छात्र/छात्रा स्व–स्फूर्त व स्व प्रेरणा से यहां प्रवेश ले रहे हैं। द्वितीय इस संस्था में बच्चे जो चाहेंगे और जब तक चाहेंगे अपने इच्छा के अनुसार पढ़ेंगे। तृतीय यहां पर उन्हें भविष्य के नागरिक के रूप में आजीविका कमाने के कौशल भी सिखाये जायेंगे, चतुर्थ यहां अध्ययन अध्यापन की सभी गतिविधियों को रोचक व आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जायेगा और पंचम लड़का लड़की दोनों को ही आने जाने में कोई खतरा या दिक्कत न हो इसके लिये परिवहन की भी व्यवस्था की गई है और सबसे बड़ा यहां प्रवेश लेना एक पर्व का

रूप धारण कर जन आंदोलन बन गई है जो इसके सफल होने के सबसे बड़ा प्रमाण है।

यादव मैडम के अभिभाषण के दौरान उपस्थित सभी बच्चे और उनके पालकगण बीच बीच में ताली बजाकर बपना खुशी, विश्वास व आशा सभी एक साथ प्रकट करते थे। सुमीत और अजीत भी अन्य बच्चों के बीच बैठा यादव मैडम की बातों को ध्यान से सुनते सुनते सोंच रहे थे कि भगवान का भला हो, जिसने उन्हें दरोगा साहब से मिला दिया। यह दरोगा साहब की ही पहल व दया है जिसने उनके अंदर के किसी कोने में छिपी अच्छाई को देखा और उन्हें बुरे कार्यों को छोड़कर सत्य व अच्छे मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया। जितने बार भी वे दरोगा साहब के चेहरे को देखते उतनी ही मन में यह बात दृढ़ होती जाती की जब एक बार कदम बढ़ा दिया है तो वह आगे ही बढ़ेगा और बढ़ते ही जायेगा।

****

स्कूल से आने के बाद शुभम, निक्कू के घर गया। घर के बाहर का दरवाजा बंद था। शुभम कुछ देर खड़ा वहीं सोचता रहा कि दरवाजा खटखटाऊं या आवाज लगाऊं। जैसे ही उसने दरवाजा खटखटाने के लिये हाथ सांकल पर ले गया, वैसे ही दरवाजा हल्का सा खुल गया। फिर उसने धक्का देकर दरवाजा खोला और अंदर घूसा। अभी वह पहले ही कमरे में था, तभी उसे निक्कू के अम्मा की आवाज सुनाई दी– दरवाजे पर कौन आया है। निक्कू के अम्मा की आवाज सुनकर एक पल तो शुभम को लगा कि जैसे वह आया था, उसी तरह चुपचाप लौट जाये। पर मन में कुछ हिम्मत करके बोला जी चाची। मैं हूं शुभम। निक्कू कहां है। शुभम की आवाज को पहचानकर दूसरे कमरे से बाहर निकलते हुई निक्कू की अम्मा बोली– अरे शुभम बेटा। तुम हो। आओ आओ। अंदर आ जाओ। ये निक्कू यहीं बैठा पढ़ रहा है।

निक्कू के अम्मा की प्यार से भरी बातें सुनकर शुभम का डर बिल्कुल गायब हो गया और अब वह बिना झिझक के सीधा उस कमरे की ओर गया जहां निक्कू बैठा पढ़ रहा था। निक्कू के पास पहुंचकर उसके बगल में बैठते हुये शुभम ने पूछा– यार निक्कू। अभी अभी तो स्कूल से आये हैं और तुम खेलने जाने को छोड़कर सीधा पढ़ने के लिये बैठ गये। क्या आज खेलने नहीं जाना है?

शुभम की बात सुनकर ललिता मुस्कराते हुये बोली– देखो शुभम बेटा। मैं भी तो यही कह रही थी। स्कूल से आये हो। थोड़ा कुछ चाय नाश्ता कर लो। फिर घूम–फिरकर आना उसके बाद सीधा पढ़ने के लिये बैठना। पर यह है कि स्कूल से आते ही न तो चाय पिया और नहीं कुछ खाया सीधा पढ़ने के लिये बैठ गया। पहले मैं बोलती थी कि बेटा थोड़ा पढ़ने लिखने में मन लगा ले, तब दिन भर खेलते कूदते रहता था, और अब जब मैं खुद बोल रही हूं कि थोड़ा खेल कूद कर आ जा तो पढ़ने के लिये बैठ गया। ये लड़का न कल मेरी बात सुनता था और न आज सुन रहा है।

अपनी मां की बात सुनकर निक्कू हंसते हुये बोला यह क्या मां। पहले सोने नहीं देती थी और अब पढ़ने नहीं दे रही है।

ललिता हंसते हुये बोली– ऐसा नही है बेटा। मेरा तो कब से यह सपना था कि मेरा बेटा खूब पढ़े लिखे और अब मैं प्रसन्न भी हूं कि तुम ठीक से पढ़ भी रहे हो। पर मैं चाहती हूं कि जीवन में हर चीज में संतुलन हो। कैसा संतुलन चाची। मैं समझा नहीं – शुभम ने कहा। निक्कू और शुभम के पास में बैठकर ललिता उन दोनों को समझाते हुये बोली– देखो बेटा। हमारे जीवन में जिस तरह पढ़ने लिखने का महत्व है उसी तरह खेलने कूदने, खाने–पीने, मनोरंजन करने व सोने सभी का है। किसी एक चीज पर जोर देने से निश्चित रूप से दूसरे चीजों के लिये समय कम बचेगा और उससे हमारा शरीर और मन दोनों प्रभावित होगा। पहले तुम दोनों केवल घूमने फिरने में ज्यादा वक्त लगाते थे, इसी कारण पढ़ाई में पिछड़ते गये और अब खेलोगे नहीं तो शरीर और मन के स्वास्थ्य में पिछड़ोगे। हमारे जीवन के लिये जो भी जरूरी है, वह सब समय पर ही करना चाहिये। इसे ही संतुलन कहते हैं।

निक्कू ने पूछा– और अम्मा संतुलन बनाये रखने के लिये हमें क्या करना होगा?

ललिता ने उनको उनके स्कूल के उदाहरण देकर समझाते हुये बतलाई – देखो बेटा। तुम लोग अपने स्कूल में देखते होगे, थोड़ी–थोड़ी देर बाद चपरासी घंटी बजाता है और घंटी बजने के साथ ही विषय और शिक्षक दोनों बदल जाते है। फिर दूसरा शिक्षक आता है और दूसरे विषय की पढ़ाई कराते हैं । इस तरह देखने में भले ही यह लगे कि शिक्षक ने कितना कम पढ़ाया फिर भी साल के आते आते सभी विषयों की पढ़ाई पूरी हो जाती है। इसे हम स्कूल का समय नियोजन कह सकते हैं। उसी प्रकार हमारे जीवन में भी समय का नियोजन होना चाहिये। मेरा कहने का आशय यह है कि कब हमें स्कूल जाना है, कब खेलना है कब खाना

खाना है, कब सोना हे, यह सब कुछ पहले से तय होना चाहिये, तभी हम अपने जीवन में सही ढंग से आगे बढ़ सकते हैं।

वाह अम्मा। यह तो बहुत अच्छा बात बतलाई। अब हम दोनों भी अपने जीवन में समय नियोजन का पालन करेंगे–निक्कू ने कहा।

दोनों को समझाकर ललिता रसोई घर में चाय बनाने के लिये चली गई। उसके जाने के बाद शुभम निक्कू से बोला। यार निक्कू जब मैं आज तुम्हारे यहां आया न तब मुझे बहुत डर लग रहा था। पहले तो घर में घुसने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी और जब ले देकर हिम्मत जुटाकर घुसा भी तो सबसे पहले चाची से ही सामना हो गया। मैं सोच रहा था कि चाची गुस्से में बोल देगी की जाओ जाओ निक्कू तुम्हारे साथ खेलने नहीं जायेगा। पर यहा चाची के व्यवहार को देखकर अब मुझे लग रहा है कि मैं कितना गलत सोच रहा था।

निक्कू– नहीं शुभम। मेरी मां दिल से बुरी नहीं है। फिर इस बीच में तो अम्मा काफी बदल चुकी है। अब वह हर चीज को हमारे स्तर पर जाकर सोचती है, उसके बाद ही बोलती है। तुमने देखा नहीं कि अम्मा खेलने जाने के लिये कितना बोल रही थी।

शुभम– हां यार। मुझे तो कभी कभी यह भी लगता है कि जब हम अच्छा नहीं होते, तभी हमें दूसरे भी अच्छे नहीं लगते। पहले हम लोगों का ध्यान केवल खेलने–कूदने में लगा रहता था, इस कारण जो भी हमें रोकता, उसे हम दुश्मन मान लेते थे। अब जब धीरे धीरे चीजों को समझना शुरू किये हैं तब तो लग रहा है न कि हमारे माता पिता न कल गलत थे, न आज हैं और न कल होंगे।

निक्कू– हां यार। हमें अपने से बड़ों विशेषकर माता पिता और गुरू की बातों को तो बिना यह सोंचे कि वे कभी हमारे अहित के बारे में सोच सकते हैं मानना चाहिये।

शुभम और निक्कू दोनो की बातों को ललिता अपने रसोई घर के अंदर से चाय बनाते बनाते सुन रही थी और सोच भी रही थी कि कुछ समय में बच्चे कितने समझदार हो गये हैं। पहले ऐसी ही समझदारी की अपेक्षा में वह निक्कू पर कितना दबाव डालती थी। शुभम को निक्कू के पास फटकने भी नहीं देती थी और वह जिस दिन से बच्चों के प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना शुरू की, उसी दिन से बच्चों में अपेक्षा से ज्यादा सुधार दिखाई देने लगा। सच भी है जो काम जोर जबरदस्ती डर या मारपीट नहीं कर सकता। उससे भी बड़ा काम प्रेम की दो शब्द कर देता है। और बच्चे तो स्वभाव से ही कोमल होते हैं उनके लिये तो केवल प्रेम ही होना चाहिये, प्रेम के सिवाय कुछ नहीं।

ललिता अपने ख्यालों में खोई ये सभी बातें सोंच रही थी कि तभी उसे निक्कू की आवाज सुनाई दी जो वहीं से चिल्लाकर बोल रहा था अम्मा हम खेलने जा रहे हैं। निक्कू की आवाज सुनकर ललिता रसोई घर से ही बोली अरे बेटा रूक जाओं। यह मैं चाय बना ली हूं। जल्दी से पी लो फिर चले जाना।

ललिता बच्चों को चाय देती है और निक्कू शुभम के साथ तालाब के उसी पेड़ की ओर चले जाते हैं, जहां अक्सर वे जाते थे।

———————————.